श्रीगणेशायनम:

बारहों महीने के सम्पूर्ण

व्रत और त्यौहार

गीतों, कहानियों, चित्रों एवं नेगचार सहित

卐

लेखक

रूपकिशोर भरतिया

एवं

कार्ष्णिरणवीर ब्रह्मचारी

प्रकाशक

गोवर्द्धन पुस्तकालय,

मथुरा

चतुर्थ संस्करण

सन् १९७७

मूल्य ५.५०

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

* श्रीगणेशानमः *

बारहों महीनों के सम्पूर्ण

व्रत और त्यौहार

गीतों, कहानियों, चित्रों, एवं नेगचार सहित

*

लेखक

रूपकिशोर भरतिया

एवं

कार्ष्णि रणवीर ब्रह्मचारी

State Museum Library Lucknow
5231

*

प्रकाशक

गोवर्द्धन पुस्तकालय,

मथुरा

पाँचवां संस्करण

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

सन् १९७९

मूल्य ७.००

मुद्रक-श्री राधा गोविन्द प्रेस, लीला धाम वृन्दावन, (मथुरा)

पढ़ो, समझो और करो

जीवन में आने वाले समस्त

त्यौहारों के नेगचार

इस पुस्तक में वर्ष में आने वाले सभी व्रत तथा त्यौहारों का विधि सहित वर्णन किया गया है। सभी त्यौहारों एवं व्रतों के सम्बन्ध में कहानियाँ तथा गीत दिये गये हैं जोकि कहीं ढूँढ़ने से भी नहीं मिलते। अगर आपके पास यह पुस्तक मौजूद है तो आपको किसी से कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं है, पुस्तक पढ़ते ही प्रत्येक बात अपने आप समझ में आजायगी। साधारण चित्रों द्वारा त्यौहारों की रूप-रेखा को और भी स्पष्ट कर दिया गया है। केवल यही एक ऐसी पुस्तक है जो कि आपको त्यौहार मनाने के विषय में सब बातें तुरन्त बता देगी और आपको कोई भी कठिनाई अनुभव नहीं होगी।

यह पुस्तक सभी हिन्दूमात्र को लाभदायी सिद्ध होगी। ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

इस पुस्तक को और भी सुन्दर बनाने के लिए यदि कोई व्यक्ति उचित सुझाव देंगे तो हम उसके लिए उनके आभारी होंगे।

—प्रकाशक

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
भगवत स्तुति	१	कहानी	१८
व्रत माहात्म्य	३	श्यामा खीचड़ी	२०
चैत्र मास (शुक्ल पक्ष)		अक्षय तृतीया	२१
चैत्र सुदी की एकम (नववर्ष)	३	कहानी	२१
न्यौरता का विधान	४	आरती	२३
बालेन्दु व्रत	५	मोहिनी एकादशी	२३
मत्स्य जयन्ती	६	कहानी	२४
कुमार व्रत	६	नृसिंह जयन्ती	२६
महा-अष्टमी	७	लिंग व्रत	२७
गीत	८	धर्मराज व्रत	२७
रामनवमी	८	**जेठ मास**	
कहानी	९	अपरा एकादशी	२८
स्तुति	१०	कहानी	२८
कामदा एकादशी	११	बड़ मावस्या	२९
कहानी	१२	कहानी	३०
चैत्र बाहणी	१३	रम्भातीज	३४
मन्वादि पूर्णिमा	१३	गंगा दशहरा	३५
हनूमान जयन्ती	१३	कहानी	३६
आरती	१४	निर्जला एकादशी	३८
बैसाख मास		वट सावित्री	३९
सांपदा (दसिया) का डोरा	१५	जल यात्रा	३९
उजमन	१५	**आषाढ़ मास**	
बुड्ढा बासेड़ा	१५	योगिनी एकादशी	४०
कच्छपावतार व्रत	१६	कहानी	४०
कहानी	१६	रथ यात्रा	४१
शीतला अष्टमी	१७	स्तुति	४१
वरूथनी एकादशी	१७	देव सोवनी एकादशी	४२

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
गीत	४३	केसरीय की जात	७१
गुरु पूर्णिमा	४३	जन्माष्टमी	७१
कहानी	४५	कहानी	७३
आरती	४६	आरती	७५
कोकिला व्रत	४७	गूगा पंचमी	७५
कहानी	४७	प्रबोधनी एकादशी	७६
श्रावण मास		कहानी	७६
शिवजी का व्रत	४८	बछवारस	७७
मंगल गौरी पूजन	४९	बछवारस का उजमन	७८
उजमन	५१	कहानी	७८
नाग पंचमी	५२	कुशोत्पादिनी अमावस	७९
कहानी	५३	सती व्रत	७९
कामिका एकादशी	५६	सती की घोक मारना	७९
कहानी	५७	हड़ताल तीज	८०
हरियाली तीज	५८	गणेश चौथ	८०
पुत्रदा एकादशी	५८	चौथ का सिन्धारा	८२
कहानी	५८	आरती	८२
स्तुति	६२	ऋषि पंचमी	८२
रक्षा बन्धन	६३	स्त्रियोंको इस ब्रतका नियम	८२
भाद्रपद मास		पुरुषों को इस व्रतका नियम	८३
बूढ़ी तीज	६५	देवछट	८४
कजरी तीज	६५	बलदेवजी की आरती	८४
गूगा पंचमी	६५	दुबड़ी सातें	८५
चाना छठ	६६	कहानी	८६
चाना छठ का उजमन	६७	गणेशजी की कहानी	८८
कहानी	६७	महालक्ष्मी का डोरा पहिने	८९
ललिता व्रत	६९	महालक्ष्मीका डोरा खोलना	८९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
भभुत सिद्ध की जात	९०	इन्दिरा एकादशी	१११
राधा अष्टमी व्रत	९०	कहानी	११३
आरती	९१	पितृ अमावस्या	११३
महालक्ष्मी व्रत	९१	नवरात्रि	११३
रामदेव की जात	९३	स्तुति	११४
विश्वकर्मा पूजा	९३	अशोक व्रत	११५
वामन एकादशी	९३	दुर्गा अष्टमी	११५
कहानी	९४	नव दुर्गा की कथा	११६
वामन द्वादशी	९४	आरती	१२०
गौ गिर्राज व्रत	९५	विजयादशमी	१२१
अनन्त चौदस	९६	पापांकुशा एकादशी	१२३
उमामहेश्वर व्रत	९७	कहानी	१२३
कहानी	९८	पद्मनाभ द्वादशी	१२४
गाज का व्रत	९८	बाराह चतुर्दशी	१२५
कहानी	९९	शरद पूर्णिमा	१२५
आश्विन मास		कहानी	१२६
श्राद्ध	१००	पूर्णिमा का उजमन	१२७
साँजी	१०१	कार्तिक मास	
आरती	१०१	कार्तिक स्नान	१२८
गीत	१०२	तारा भोजन	१२८
महालक्ष्मी व्रत	१०२	छोटी सांकली	१२९
कहानी	१०२	बड़ी सांकली	१२९
पुत्रजीवी व्रत	१०४	चन्द्रायण व्रत	१२९
कहानी	१०४	तीरायत व्रत	१३०
आशा भगौती का व्रत	१०६	करवा चौथ	१३०
आशा भगौती का उजमन	१०६	चौथ का बायना	१३१
कहानी	१०७	बधाये	१३२

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कहानी	१३२	तुलसी विवाह	१६४
गणेशजी की कहानी	१३३	भीष्म पंचक	१६५
चौथ का उजमन	१३४	वैकुण्ठ चौदस	१६५
होई अष्टमी	१३४	कहानी	१६६
कहानी	१३६	कार्तिक पूर्णिमा	१६७
होई का उजमन	१३८	मार्गशीर्ष (अगहन मास)	
रम्भा एकादशी, कहानी	१३८	उत्पन्ना एकादशी	१६८
गोवत्स द्वादशी	१३९	कहानी	१६९
कहानी	१४०	धन व्रत	१७०
धनतेरस	१४१	नन्दनी नवमी व्रत	१७०
कहानी	१४२	मोक्षदा एकादशी, कहानी	१७१
रूप चतुर्दशी, कहानी	१४५	गीता जयन्ती	१७२
नर्क चतुर्दशी, कहानी	१४६	मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत	१७३
छोटी दिवाली	१४८	पौष मास	
बड़ी दिवाली	१४९	मल मास	१७५
पूजन विधि	१४९	सफला एकादशी, कहानी	१७५
दिवाली की कथायें	१५३	ब्रह्मगौरी पूजन	१७७
लक्ष्मीजी की कहानी	१५३	पुत्रदा एकादशी	१७७
अन्नकूट	१५५	कहानी	१७८
कहानी	१५६	पौष पूर्णिमा स्नान	१७८
भैया दूज	१५७	माघ मास	
कहानी	१५८	संक्रान्ति	१७९
सूर्य छठ	१५९	सकट चौथ	१८८
कहानी	१६०	चौथ का व्रत और उजमन	१८८
गोपाष्टमी	१६१	कहानी	१८९
		शीतला छठ, कहानी	१९१
आंवला नवमी कहानी	१६१	षट्तिला एकादशी	१९२
देव-उठावन एकादशी	१६३	कहानी	१९३

मौनो अमावस	१९४	कहानी	२१९
बसन्त पंचमी	१९५	गणगौर पूजन	२२२
बसन्त पंचमी का टीका	१९५	कहानी	२२३
कहानी	१९६	सूरज रोट का ब्रत	२२४
सूर्य सप्तमी	१९७	कहानी	२२५
भोमाष्टमी	१९८	बासेड़ा	२२६
जया एकादशी, कहानी	१९९	कुण्डारा	२२७
माघ के दान पुण्य	२००	बासेड़ा की कहानी, गीत	२२८
माघ पूर्णिमा	२००	पापमोचनी एकादशीं, कहानी	२२९
फाल्गुन मास		नया सम्वत	२३१
जानकी नवमी	२००	गणगौरी (गणगौर), पूजन	२३१
बिजया एकादशी, कहानी	२०१	गणगौर का सिंधारा, उजमन	२३३
शिव रात्रि ब्रत	२०३	गीत	२३४
जेयर चढ़ाना, कहानी	२०४	अन्य ब्रत	
शकरजी की कहानी	२०५	सोमवती अमावस्या, कहानी	२३५
बम्-बम् भोला	२०६	लौंद मास	२३८
आसमाता की पूजा	२०६	पदिमनी एकादशी, कहानी	२३९
आसमाताका उजमन, कहानी	२०७	परमा एकादशी	२४०
होली का बड़-कुल्ला	२०८	कहानी	२४१
आनन्दा नवमी	२०९	पुंसवन ब्रत	२४२
आमलकी एकादशी कहानी	२१०	कहानी	२४३
श्यामा जी की जात	२११	हरि पंचक ब्रत	२४५
ढूढ़ का नेग,	२१२	मासोपवास ब्रत	२४६
होली का पूजन	२१२	सत्य भगवान का ब्रत	२४[illegible]
होली की पूजा विधि	२१३	पितरों की पूजा	२४७
गीत	२१५	सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण	२४७
कहानी	२१६	सोलह सोमवार ब्रत	२४८
चैत्र मास (कृष्ण पक्ष)		तारा डूबना	२४८
धूलैड़ी	२१७	सातों वार का नियम	२४९
दसिया का डोरा, उजमन	२१८	आरतियां	२५१

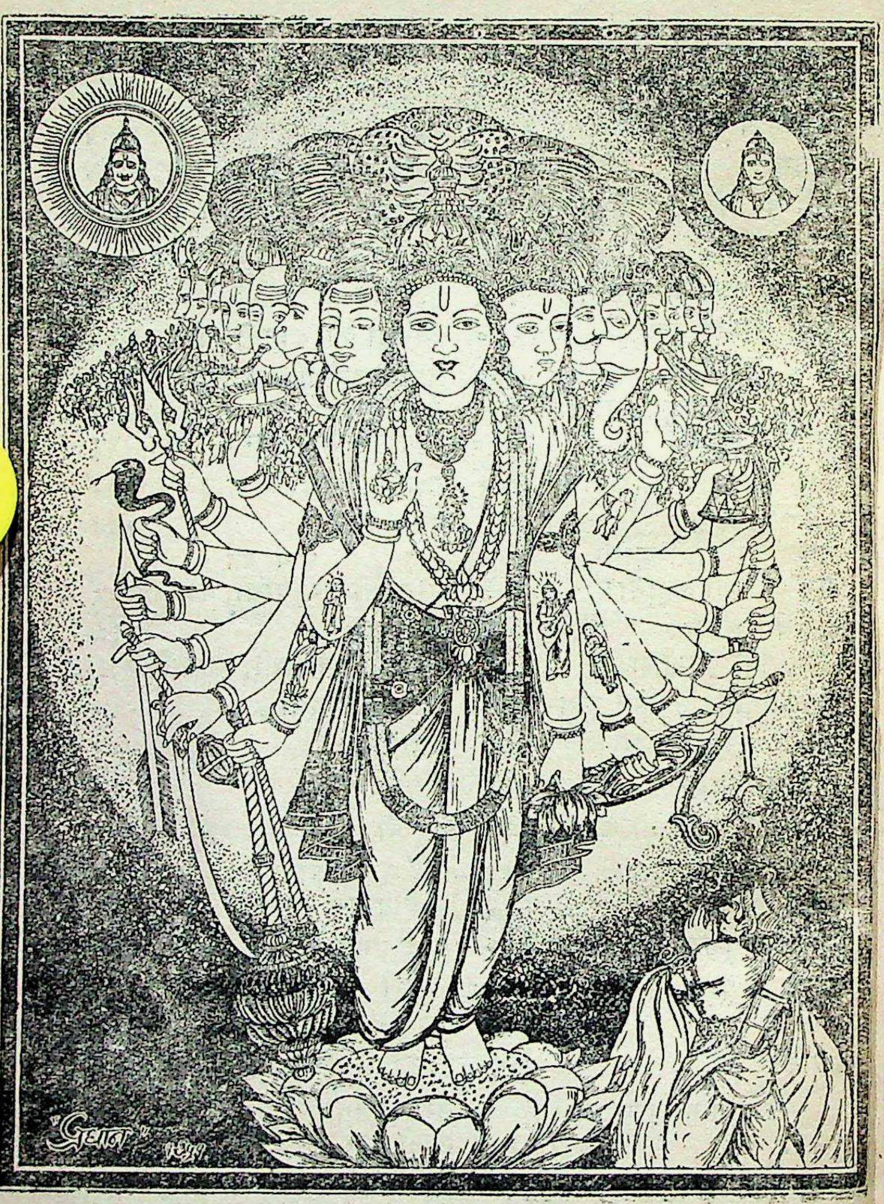

❋ श्री हरिः ❋

बारहों महीने के सम्पूर्ण

व्रत और त्यौहार

❀ भगवत् स्तुति ❀

नारायण अच्युत वासुदेव, हे यज्ञेश जनार्दन कमल नयन ।
वामन अनन्त अज यज्ञपुरुष, कृष्णा विष्णो अरु क्षीर शयन ।।
कमला पति दामोदर नृसिंह, केशव संकर्षण देवेश्वर ।
निर्मल प्रकाश से ज्योतिर्मय, दुनिया भर में तुम ही ईश्वर ।।
अजन्य मधुसूदन भगवन, गंग जनक श्री राम हरे ।
प्रद्युम्न तात अन्तरयामी, को नमस्कार यह दास करे ।।
निर्गुण स्वरूप माया वंचित, माया ही जिसकी शक्ती है ।
सम्पूर्ण विश्व जिसका स्वरूप, बस नाम ईश की भक्ती है ।।
विज्ञान सम्पती रूप तुम्हीं, ध्यान गम्य अरु ज्ञानेश्वर ।
मोक्ष स्वरूप ज्ञान स्वरूपा, सर्व व्यापने योगीश्वर ।।
ध्येय स्वरूपा ज्ञाता ध्याता, सत्य रूप औ परमेश्वर ।
है नमस्कार उस शक्ती को, कहते जिसको सब आधीश्वर ।।
आदि पुरुष पौराण पुरुष जो, जिसको कहते विष्णू स्वरूप ।
दुनिया का जो संहार करे, रख करके अपना शिव स्वरूप ।।
अभेद तत्व अरु नित्य निरञ्जन, कर्म रहित अरु कर्म विधाता ।
कूर्म रूप धारी भगवनको, कहता है जग विश्व विधाता ।।
वाराह रूप अरु कंस काल, जो श्रेष्ठ देव यादव कुल के ।
साक्षात्कार निर्मल स्वरूप, हृदय बसते जो जन-जन के ।।

पुरुषोत्तम अरु प्रणपालक जो, ऐसे ईश्वर को नमस्कार।
संसार बसे जिसकी छाया, नत मस्तक करते बार-बार ।।
संहार किया प्रहलाद पिता, प्रहलाद प्राण रखवारे को।
कुम्भकरण जिसने मारा, जिसने दी मुक्ती रावण को ।।
जिसने यमुलार्जुन वट तारे, गौ माता के हित चिन्तक को।
जिसने गोवर्द्धन को धारा, से बलशाली यादव को ।।
है शंख चक्र अरु गदा पद्म, जिसके करमें उस ईश्वर को।
वेदान्त वेद जिसको कहते, ज्योती स्वरूप उस ईश्वर को ।।
धरणी धर भी जिसको कहते,कहते हैं विश्व मूर्ति जिसको।
धर्म वास जो गुण निधान हैं,श्री निवास अरु ज्ञान मूर्ति को ।।
भक्ती भावन जिसको कहते, विमल देह अरु गुण समूह जो।
सांख्यवन्दिने जगन्नाथ जो, शेष देह पर करे शयन जो ।।
वन माला जो पहिने रहते, वंशी को लिये रहें कर में।
देह त्रिभंगी किये हुये, विचरा करते जो ब्रज वन में ।।
दुनिया की जो रक्षा करते, संतों पर कृपा रहे जिनकी।
बन्दे हम उनको बार बार, करते स्तुति उन भगवन की ।।
गीता वक्ता अब देउ शरण, दुनिया में होता चीत्कार।
तेरे चरणों में शीश झुका, वंदे करते हैं नमस्कार ।।
द्वारिकानाथ अब सुनो टेर, पृथ्वी नहिं सहती पाप भार।
नत मस्तक होते भक्त सभी, भक्तों की सुनलो तुम पुकार ।।
बस अन्तिम बार कहूँ तुमसे, बरसादो सब पर कृपा धार।
लो नमस्कार, लो नमस्कार सबका लो सत् सत् नमस्कार ।।

——

व्रत माहात्म्य

प्राचीन काल के ऋषि मुनियों की वाणी मनुष्य के लिये वाणी नहीं एक अमृत धारा है। जो उनके द्वारा रचित पुराणों और शास्त्रों में फलदायिनी सरिता के समान फैली हुई है। जिस प्रकार स्वांति की बूँद छोटी होती है परन्तु वह ज्योंही सीपके खुले मुँह में गिरती है। तो वह लालका रूप धारण कर लेती है। ठीक उसी प्रकार हमारे पूर्वजों की वाणी को देखने में उसका विस्तार छोटा दिखाई देता है परन्तु उसका अनुकरण करने से मनुष्य स्वर्ग-लोक को प्राप्त होता है। उन अमृत वाणियों में व्रतों का भी वर्णन आताहै। व्रत की महिमाके बारे में नारद पुराण के पूर्व भाग में लिखा है—

नास्ति गंगा समं तीर्थं नास्ति मातृ समो गुरुः।
नास्ति विष्णु समं देव तपो नानशनात्परम्॥

अर्थात् गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, भगवान विष्णु के समान कोई देव नहीं, और उपवास के समान कोई तप नहीं है।

वैसे तो वर्ष का कोई भी दिन ऐसा नहीं है जिस दिन के व्रत की महिमा ऋषियों ने पुराण और शास्त्रों में न गाई हो परन्तु यहाँ वर्षके मुख्य२ व्रतोंका ही वर्णन किया जायेगा।

चैत्र-मास के व्रत और त्यौहार

१. चैत्र सुदी की एकम् (नव वर्ष)

(विद्या व्रत, आरोग्य व्रत और सौरि व्रत)

चैत्र सुदी एकम् के दिन नया साल प्रारम्भ होता है।

नये साल के दिन पंडितजी से पंचांग सुने और तेरह पंचांग ब्राह्मणों को दान देवे।

इस दिन से लेकर नवमी तक (नौदिन) रामायण का पाठ करे, रामजी का पूजन करे, भोग लगावे,घी का दीपक रोजाना जलावे। जल, मोली, रोली, चावल, फूल, परशाद, अबीर, गुलाल, धूप, दीपक, कपूर, दक्षिणा, लोंग इलायची तथा फल चढ़ावे। रामायण जी का पाठ समाप्त होने के दिन (रामनवमी के दिन) रामजी और रामायण की पूजा कर भोग लगावे और व्रत करे।

नवदुर्गा (न्योरता) का विधान

इस दिन से नवदुर्गा की पूजा व पाठ भी नौ दिन के लिये प्रारम्भ हो जाते हैं।

एक लकड़ी के पट्टे पर सिन्दूर से ९ देवी बनावे। अथवा दीवाल पर काढ़ लेवे। एक देवीजीका फोटो रखदेवे। उसी पट्टे पर गणेशजी, नवग्रह व शोडषमातृका की पूजा करे। **ग्रह**-इसके नीचे सफेद कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर चावल की छोटी-छोटी नौ ढेरियाँ बनावे। **शोडश मातृका**-इसके नीचे लाल कपड़ा बिछाकर ग्रहों की तरह १६ ढेरियां बनाकर शोडष मातृका बनावे। **गणेशजी**-पीली मिट्टी की डेली पर कलाया लपेट कर रखदेवे अथवा कलश के ऊपर नारियल रखदेवे। इस प्रकार इन सबकी पूजाकरे। नौदिन तक देवीजी की जल, मोली, रोली, चावल, सिन्दूर, अबीर, गुलाल, प्रसाद, फल, फूल, धूप, दीप से पूजा करे। आरती

करे। देवीजी की नौदिन तक जोतकरे। एक समय ही शामको भोजन करे। एक मिट्टी के गमले में जौ उगावे। पंडितजी से नौ दिन तक दुर्गा पाठ करावे। नौ दिन तक ब्राह्मणकी कुआँरी लड़कियों को भोजन करावे। अष्टमी या नवमी के दिन पूड़ी, उबले हुए चना, हलुआ, साग सब्जी से कन्या लांगुरा जिमावे। उनको दक्षिणा देवे और तिलक व बिन्दी लगाकर उनको विदा करे। जो कन्या रोजाना जीमने आवें उन्हें कपड़े भी देवे। न्योरता में जो देवीजी की जात देने जावें वह साथ में पूजा का सामान भी लेजावे। जल. रोली, मोली, चावल, सिंदूर, फूलमाला, लोंग, चूड़ी, लाल झंडी, धूप, दीपक, कपूर, नारियल, भोग इत्यादि से देवीजी की पूजा कर श्रद्धानुसार दक्षिणा चढ़ावे।

२. चैत्र सुदी दोज (बालेन्दु व्रत)

यह चैत्रसुदी दोज को आता है। इसदिन सालके प्रारंभमें सबसे पहिले दिन चन्द्रमा के दर्शन होते हैं। इसदिन चन्द्रमा छोटा (बाल) होता है इसलिये इस दिनको बालेन्दु कहते हैं। इसदिन ब्रह्माजी की पूजा करें, उनकी प्रतिमा के सामने बैठ कर हवन करें। जिसमें हवि, अन्न और मिष्ठान्न आदिकी आहुती दें। साथ ही रात्रि को निकले हुए बाल चन्द्रमा को अर्घ्य देवें। इसदिन दही, घी का ही भोजन करें और वस्तुयें प्रयोग न करें। जो इस व्रत को रखते हैं उनके मनकी इच्छायें पूरी होती हैं और ब्रह्म लोक को प्राप्त होते हैं। इस व्रत से शान्ति मिलती है। सब पापों का नाश होजाता है, बुरे कर्मों

से बच जाते हैं,धन प्राप्त होकर भाग्य सुधर जाता है। जो इस दिन ब्राह्मणों को सोने या चांदी की आँख बनवाकर दान में देते हैं, वे पुनर्जन्म में पृथ्वी के राजा बनते हैं। साथ ही उनके दोनों लोक (यहलोक, परलोक) सुधर जाते हैं।

३. मत्स्यावतार जयन्ती (चैत्र सुदी तीज)

इसदिन भगवान मत्स्यावतार का जन्म माना जाता है इसलिये इसदिन भगवान मत्स्यावतारकी पूजा करनी चाहिये, इसदिन मत्स्य–भगवान के चित्र या मूर्ति का पूजन करना चाहिए। अगर मूर्ति है तो स्नान करावें फिर भोग लगावें और आरती फूल,धूप, चंदन दीप आदि से उतारें। इसदिन भातका भोग लगावें और उसीको बाँट देवें। भागवतकी पोथीसे मत्स्यावतार की कहानी सुनें। इसप्रकार व्रत और पूजा करने से मनुष्य की रक्षा भगवान करते हैं। जिस प्रकार भगवान ने सृष्टिके अन्तमें अंकुरों(बीजों)की रक्षा की थी,उसी प्रकार मनुष्य के अच्छे गुणों की रक्षा भी स्वयं भगवान करते हैं।

४. कुमार व्रत (चैत्र सुदी छठ)

यह व्रत चैत्र सुदी छठ को धारण किया जाता है। इस दिन भगवान (कार्तिकेय भगवान शिवजी के बड़े पुत्र) की पूजा करनी चाहिये।) भगवान कार्तिकेय की मूर्ति को शुद्ध जल से स्नान करावे, स्नान के बाद उनको आभूषणों से सुशोभित करे, फिर उनका फलों का भोग लगाकर आरती उतार लेवे। उन्हीं फलोंको वे अपने भाई-बन्धुओं के साथ बैठ कर प्रसादके रूपमें पावे। कुमार व्रत रखने वालों में भगवान

ऊँचे विचार पैदा करते हैं उनके हृदय को अच्छे गुणों से पूर्ण कर देते हैं और पुत्र-पौत्र आदि की रक्षा करते हैं।

५. महाअष्टमी (चैत्र सुदी अष्टमी)

यह त्यौहार चैत्रसुदी अष्टमीको आता है। कहा जाता है कि इसदिन माता भवानी का जन्म दैत्यों को मारने के लिये हुआ था जिनको शिवजी ने अभय दान दे रखा था। उन्हीं माता भवानीकी यादगारके लिये यह त्यौहार मनाया जाता है माता भवानी बहुत बलशाली थीं इसीलिये इस अष्टमी को महाअष्टमी कहा जाता है। इसदिन माता भवानी,जगदम्बा दुर्गाजी, कालकाजी आदि की पूजा करनी चाहिये। सबसे पहले जिस देवी की पूजा करनी हो स्नान कराकर अच्छे बस्त्रों से सजावे फिर उसके सामने कपूर या गुग्गुल की धूप देवे और थोड़ी सी अग्नि पर देशी-घी डालकर उसे जलावे और सिंदूर में सना हुआ एक जायफल चढ़ावे। जल में थोड़ा सा मीठा डालकर उस जल को पीपल या गायके खूँटे पर चढ़ा देवे। फिर उसकी पूजा के बाद मूर्ति की १०१ परिक्रमा कर लेवे और आठ पत्ते अशोककी कलीके भी खानेका विधान कहा गया है। इसके बाद दिनमें एकबार ही फलहार करे। रात्रि होने पर रात्रि जागरण करे और माता भवानी आदि देवियोंकी कथा सुने और सुनावे तथा उसी में ध्यान लगाये रहे। इस व्रतसे भवानी प्रसन्न रहती है और व्रत रखने वाले की रक्षा करती है भगवती की परिक्रमा करने से सब

देवियोंकी यात्रा का फल मिलता है। अशोक की कली खाने से मनुष्य के सभी शोक दूर हो जाते हैं।

महाअष्टमी के गीत

भवन में दिवला जोरि धरे। रे भवन में दिवला जोरि धरे॥ टेक
काये की बाती काये के दिवला, परि काये के घिरत जरे। रेभवन में।
सोने के दिवला कपूर की बाती,परि सुरई के घिरत जरे। रे भवन में।
जरि गयो घिरत पजरि गई बाती,भवन गये अँधियारे॥ रे भवन में।
भवन में दिवला जोरि धरे। रे भवन में दिवला जोरि धरे॥

६. रामनवमी (चैत्र सुदी नवमी)

यह त्यौहार चैत्र सुदी नवमी को आता है इस दिन भगवान रामचन्द्रजी ने दुष्टों का नाश करने और संतों का उद्धार करने के लिये अयोध्या में आकर जन्म लिया था। उनके जन्म दिवस को याद रखने के लिये यह त्यौहार मनाया जाता है। इसदिन व्रत रखकर भगवान् रामचन्द्रजी तथा रामायण की पूजा करे। भगवान् रामचन्द्रजी की मूर्ति को शुद्ध और ताजे जल से स्नान करा कर नये वस्त्रों से सजावे। दही आदि में तुलसीजी के पत्ते डालकर पंचामृत (दही, शहद, घी,दूध,शक्कर) बना लेवे और रामचन्द्रजी की आरती उतारने के बाद उसे आये हुए मनुष्यों में बाँट देवे और बाद में खुद भी पंचामृत पीवे। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करावे और गौ, भूमि, तिल, सोना और वस्त्र आदि दक्षिणा के रूप में देवे और आशीर्वाद प्राप्त करे। फिर सभी घर के बैठकर भगवान का कीर्तन करें और शाम को भोजन कर

लेवें जो इस तरह से भक्ति पूर्वक श्रीराम नवमी को व्रत रखते हैं उनके सभी पापों को भगवान क्षमा कर देते हैं और अपने धामको बुलाते हैं। इसदिन श्रीरामायण जी का पाठ किया जाता है वह दो प्रकार का होता है साधारण और अखंड कीर्तन। साधारण पाठ कभी भी बन्द किया जा सकता है परन्तु अखंड पाठ दिनरात चलता रहता है इसके घंटे निश्चित करलेने चाहिये। इस पाठ से रामचन्द्रजी दुःखोंको दूर करते हैं और अन्त समय में अपने लोक को ले जाते हैं।

रामनवमी की कहानी

जब पृथ्वी पर अत्याचार अधिक होने लगे और उन अत्याचारों को पृथ्वी सहन न कर सकी तब वह गाय का रूप बनाकर देवता और मुनिजनों को साथ लेकर ब्रह्माजी के पास गई, वहां पृथ्वी ने अपना दुःख सुनाया, ब्रह्माजीने दुःख को सुनकर पृथ्वी और देवताओं को साथ लेकर क्षीरसागर के तट पर पहुँचे वहाँ खड़े होकर भगवान विष्णु का गुणगान करने लगे, भगवान ने अपने भक्तों की पुकार सुनी और पूर्व दिशा से अपने तेज को चमकाते हुये प्रकट हुये। उनको प्रकट हुये देख सभी देवताओं और मुनिजनों ने दण्डवत प्रणाम किया, तब भगवान विष्णु ने उनका दुःख पूँछा तो ब्रह्माजी कहने लगे आप तो अन्तर्यामी हो सबके घट-घट की जानने वाले हो आपसे कोई बात छिपी नहीं है तब भी हम बताते हैं। रावण आदि राक्षसों के अत्याचारों से पृथ्वी

बहुत दुःखी है। वह इस दुख को नहीं सह सकती आप दयामयी हैं सब पर दया करते हैं इसलिये आपसे प्रार्थना है कि पृथ्वी का भी कष्ट दूर करें। तब भगवान विष्णु बोले इस समय पृथ्वी पर राजा दशरथ (जो पहले जन्म में कश्यप जी थे तपस्या से खुश होकर मैंने उनका पुत्र होना स्वीकार कर लियाथा) अयोध्या के राजा हैं उनके यहाँ पुत्ररूपसे मैंने चार अंशोंमें माता कौशल्या और दो अन्य माताओं के गर्भ से जन्म लूँगा, तब आपका कार्य सिद्ध करूँगा। इन्हीं भगवान विष्णु ने चैत्रसुदी नौमी को राम के रूप में अयोध्या पुरी में राजा दशरथ के यहाँ जन्म लिया। उन्हीं की यादमें आज तक यह रामनवमी मनाई जाती है और जब तक पृथ्वी आकाश पातालादि रहेंगे तब तक मनाई जाती रहेगी।

रामचन्द्रजी की स्तुति

जय जय सुरनायक जन सुख दायक प्रनतपाल भगवंता।
गौ द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
सो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥
जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं माया रहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा।
निसवासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा॥
जेहि सृष्टि उपाई विविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगत न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन विपति वरूथा।
मन बच क्रम बानी छाँड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥

शारद श्रुति सेवा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे वेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुन मन्दिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कीजा ॥

७. कामदा एकादशी

कामदा दएकाशी चैत्र सुदी एकादशी को कहते हैं। इस दिन भगवान वासुदेव की पूजा करनी चाहिये और इन्द्रियों को अपने वशमें करके दृढ़ प्रतिज्ञाके साथ व्रत रखना चाहिए पहिले दिन भगवान वासुदेव को शुद्ध आसन पर बिठाकर पैर धोवे, फिर अर्घ्य देवे और आचमन करावे। फिर दही दूध और मिष्ठान्नका भोग लगावे,दुवारा से आचमन कराने के बाद भगवान को स्नान करावे फिर चरण धोकर चरणामृत रखलें। फिर उन्हें अच्छे-अच्छे वस्त्र पहिनाकर उनकी धूप, फूल, चन्दन, दीप आदि से आरती उतारे, फिर भगवान वासुदेव को दण्डवत प्रणाम करे और कहे, हे भगवान वासुदेव ! आप मेरे पापों को दूर करदो, मैं बहुत पापी हूँ, आप समदर्शी हैं,आप मुझे अपनी शरण में लेलें। आपको बार-बार प्रणाम करता हूँ। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करा कर उन्हें अपनी शक्ती के अनुसार दान देकर आशीर्वाद ले और बिदा कर देवे। उनके चले जाने के बाद आप फलाहार करे, फलाहार में राम-दाने की खीर, खरबूजे की खीर, फल, आलू, शकरकन्द, केले, गाजर आदि बस्तुयें आती हैं। अन्न का भोजन नहीं करे, चरणामृत को

सभी बाँट कर पी लेवें। दिन में भगवान के कीर्तन और गुण-गान में मगन रहे। रात्रि को भगवान की मूर्ति के पास ही जमीन पर सो जावे।

जो इस प्रकार भगवान वासुदेव की कामदा एकादशी का व्रत धारण करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। मन की इच्छायें पूरी हो जाती हैं। किसी के दिये हुए श्राप से मुक्त हो जाता है, गौ हत्या का कलंक निराहार व्रत करने से दूर हो जाता है यदि भक्ति पूर्वक उपहास किया जाय तो मोक्ष और योग की प्राप्ति होती है। कामदा एकादशी का व्रत सदा सुख और शान्ति का देने वाला होता है।

कामदा एकादशी की कहानी

एक समय की बात है ललित नाम के गंधर्व पुंडरीक राजा की सभा में नृत्य गान कर रहे थे किन्तु उनका ध्यान अपनी नई पत्नी ललिता का बार-बार ध्यान आजाने से उनके गाने में विघ्न पड़ने लगा, यह बात कर्कट नामक नागने पुण्डरीक नागको बताई, इस प्रकार राजाने ललितको राक्षस हो जाने का श्राप दिया। पुण्डरीक के श्रापसे वह राक्षस हो गया और राक्षस रूप में घूमने लगा। यह हाल देख कर ललित भी जंगलों में घूमती रही। घूमते-घूमते उनको ऋष्यमूक ऋषि मिले जब उन्होंने उनको चैत्र के शुक्लपक्ष की कामदा दकादशी का व्रत बताया तो उनके उपदेश के

अनुसार उन्होंने व्रत रखा और श्राप से मुक्त होगये और अपनी दिव्य देह को प्राप्त हुये। हे एकादशी माता ! जैसे तूने ललित राक्षसका उद्धार किया वैसे सबका उद्धार करना।

८. चैत्र वारुणी

चैत्र बदी तेरस के दिन गंगा स्नान करे तथा गंगाजी की सब पूजन सामिग्री दूध, भोग, फूलमाला आदि से पूजा करे तथा कच्ची केरी व श्रीफल दान करे।

९. मन्वादि पूर्णिमा

यह पूर्णिमा चैत्र सुदी पूर्णमासी को आती है। यह दिन साल का वह पहला दिन है जिसमें चन्द्रमा पूरी तरह से दिखाई देता है बस इसी प्रसन्नता में यह मन्वादि पूर्णिमा मनाई जाती है। इस दिन चन्द्रमा की प्रसन्नता के लिये अन्न से भरा हुआ मटका दान में देवे जिससे चन्द्रमा प्रसन्न रहे। जब चन्द्रमा उगे तो उसे जल में मीठा डाल कर अर्घ्य देवे। अर्घ्य ताँवे के पात्र से दिया जाय तो अच्छा माना जाता है। जो चन्द्रमाको अर्घ्य देते हैं। चन्द्रमा उन्हें सुख और शान्ती प्रदान करता है जो अन्न से भरा हुआ मटका दान देते हैं, चन्द्रमा उनके खेतों और फसलों की रक्षा करते हैं। जिससे उनमें खूब अन्न पैदा होता है।

१०. हनुमान जयन्ती

जब भगवान राम ने पृथ्वीका भार उतारने का अयोध्या में जन्म लिया तब उनकी रक्षा और साथ देनेके लिये शङ्कर

जी ने हनुमान जी के रूप में चैत्र सुदी पूर्णिमा को जन्म लिया। उन्हीं के उपलक्ष्य में मन्वादि पूर्णिमा को हनुमान जयन्ती भी कहते हैं। जो हनुमानजी का व्रत रखें वे स्नान करके हनुमानजी की मूर्ति को सिंदूर का चोला चढ़ावें चाँदी के वर्क लगावें और उनकी आरती उतारे। फिर हनुमानजी पर लगे सिंदूर में से एक टीका अपने माथे पर लगा लेवें। फिर वहीं बैठकर हनुमान चालीसा का सच्ची आत्मा से सातवार पाठ करें। दिन में बन्दरों को भुने हुए चने खिलावें। हनुमानजी के व्रत से भूत-पिशाच से छुटकारा मिलता है। हनुमान भगवान राम के सेवक होने से हनुमानजी की सेवा रामजी की सेवा में पहुँच जाती है। जिससे भगवान राम उस मनुष्य को अपने लोक में बुला लेते हैं। हनुमान चालीसाका पाठ करने से सिद्धी प्राप्त होती है। इसलिये महा पुरुषों ने कहा है हनुमान जयन्ती का व्रत अवश्य करना चाहिये।

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजे हनुमान ललाकी।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरवर काँपे। रोग दोष जाके निकट न झाँपे॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे वीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्रसी खाई। जात पवन सुत वार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित परे धरणी पर। आनि संजवन प्रान उवारे॥

पठि पाताल तोरि जंग कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।।
बाँयें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संत जन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारें । जै जै जै हनुमान उचारें ।।
कचन थाल कपूर लौ छाई । आरती करत अजनी माई ।
जो हनुमानजी की आरती गावै । वसि वैकुन्ठ परम पद पावै ।।

वैशाख मास के व्रत और त्यौहार

११ साँपदा (दसिया) का डोरा खोले

जिस स्त्री ने होली के दूसरे दिन दसिया का डोरा लिया हो वह वैशाख बदी में कोई शुभ दिन देखकर यह डोरा खोल देवे । जिस दिन डोरा खोले उसदिन व्रत करे, सांपदा की कहानी सुने, कहानी वही सुने जो डोरा लेने के समय सुनी थी । घर में हलुआ पूरी की रसोई बनावे ।

दसिया (साँपदा) की उजमन विधि

यह व्रत ८ वर्ष तक करके फिर जब मन चाहे इसका उजमन कर देवे । जिस दिन उजमन करे उस दिन गोटा लगा हुआ ओढ़ना ओढ़े, नाक में नथ पहिने, हाथ में मेंहदी लगावे । फिर १६ जगह ४-४ पूरी और हलुआ रखे और एक साड़ी या ओढ़ना तथा रुपया रखे और उसे रोली चावल से हाथ फेरकर (मिन्स कर) सासुजी को पाँय लगाकर देदेवे । फिर १६ ब्राह्मणियों को भोजन करावे और यथा श्रद्धा दक्षिणा देकर उन्हें विदा कर देवे ।

१२ बुड्ढा बासेड़ा

वैशाख लगते ही सोमवार या बुधवार या शुक्रवार

के दिन बासेड़ा की तरह ही बुड्ढ़ा बासेड़ा करे। इस दिन शीतला माता की पूजा करे व ठंडा खाना खावे।

१३ कच्छपावतार

यह त्यौहार वैसाख वदी पड़वा को मनाया जाता है। इस दिन भगवानकच्छप की पूजा करनी चाहिये। सबसेपहले भगवान कच्छपजी को स्नान करावें फिर वस्त्र पहिनावें और भोग लगावें। भोग के बाद आचमन कराकर फूल, दीप,धूप,चंदन आदि से आरती उतारें। इस तरह जो भगवान कच्छप की पूजा और व्रत करते हैं वे स्वर्ग लोक को जाते हैं और इस लोक में भगवान कच्छप हर कार्य में सहायता करते हैं और मनोकामनाओं को पूरी करते हैं।

कच्छपावतार की कहानी

एक समय देवताओं को असुरों ने हराकर इन्द्रलोक से इन्द्र समेत उन्हें भगा दिया, वे सब भगवान विष्णु के समीप पहुँचे और प्रार्थना की, तब भगवान बोले मेरे क्षीर-सागर का मंथन करो उसमें से रत्न निकलेंगे साथ ही अमृत निकलेगा तुम सब देवता उसको पी लेना फिर असुर तुम्हारा कुछ भी नहीं विगाड़ सकते हैं देवता बोले-भगवान मथानी किसको बनावें ? और रस्सी किसकी बनावें ? तब भगवान बोले मंदराचल पर्वत की रई बनाओ और राजा बासुकि नाग की रस्सी लपेटो उसके नीचे मैं कच्छप का रूप रखकर मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर साधूँगा। तुम नागकी पूँछकी तरफ रहना और असुरों को फनकी तरफ

रखना। ऐसा ही हुआ फिर मथनी प्रारम्भ हुई तब उसमें से चौदह रत्न निकले।

यह मथानी बैसाख वदी प्रतिपदा को शुरू हुई। इसी दिन भगवान ने कच्छपावतार धारण किया इसीसे इस दिन कच्छपावतार की पूजा होती है।

१४ भैरव शीतलाष्टमी

यह त्यौहार बैसाख वदी अष्टमी को आता है इस दिन माता शीतला की पूजा करनी चाहिये।

माता शीतला को पहिले ठंडे जल से स्नान करावें और चावल का भोग लगावें तथा शीतल पदार्थों से पूजन करें।

इससे बच्चों के शीतला नहीं निकलती जिसको गांवों में चेचक कहते हैं। यह बच्चों की रक्षा करती है, साथ ही हर प्रकार के रोगों से बचाती है। इसीलिये तो कहा है—

दोहा—रक्षक माता सम नहीं, दुनियाँ की जो मात।
छाती से चिपटा रखे, अपने अपने तात॥

१५ वरूथिनी एकादशी

यह एकादशी वैसाख वदी एकादशी को आती है। इस दिन भगवान मधुसूदन की पूजा करनी चाहिए।

इसदिन भगवान मधुसूदन को पंचामृतसे स्नान करावें, फिर अच्छे और सुन्दर वस्त्र पहिनावें और मीठे पदार्थों का भोग लगावें, भोग के बाद आचमन कराकर फूल, धूप, चन्दन, दीप आदि से उनकी आरती उतारें। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें अपनी शक्ति के अनुसार दान

देवें । इस दिन सोना,सोने की अँगूठी, अन्न और गाय का दान उत्तम कहा गया है। दान देने के बाद उनसे अपने पापों को कहकर आशीर्वाद लेवें । उनके जाने के बाद चरणामृत को घरमें सभी बाँटकर पीवें और फलाहार कर लेवें ।

इस व्रत से भगवान मधुसूदन प्रसन्न होते हैं । उनके प्रसन्न होने से व्रत रखने वाले के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं । चरणामृत पीने से अन्दर की शुद्धी हो जाती है । व्रत रखने वाले के हृदय को शान्ति मिलती है । इस ब्रत से पर स्त्री हरण का जो पाप लगता है । वह दूर हो जाता है । इसके बारे में एक कहानी कही जाती है ।

वरूथनी एकादशी की कहानी

बहुत दिनों की बात है काशी नगर में एक ब्राह्मण रहता था । उसके तीन लड़के थे जिनमें सबसे बड़ा लड़का मूर्ख और बुरे विचारों वाला था उनका परिवार भिक्षा से चलता था । उनका पिता रोज सुबह भिक्षा को जाता और सायं को वापिस आता था । ऐसे उनके घर का काम चलता रहा । एक दिन उस ब्राह्मण को ज्वर आगया उसने अपने तीनों लड़कों को भिक्षा माँगने के लिये भेजा ।

पिता की आज्ञा मानकर तीनों भिक्षा माँगने के लिये गये । शाम को भिक्षा माँगकर वापिस आये । ब्राह्मण ने पूछापुत्रों ! भिक्षा माँग लाये क्या ? पुत्रोंने कहा हाँ पिताजी । तब ब्राह्मण ने तीनों लड़कों को बुलाया और बहुत प्यार किया । इसी प्रकार धीरे-धीरे उनकी गृहस्थी चलती रही ।

एक दिन बाप ने बेटों से कहा—बेटा घर पर बैठ कर वेदों और शास्त्रों को पढ़ना शुरू करदो इस बात को सुनकर बड़ा लड़का तो उठकर चला गया और छोटे दोनों लड़कों ने पिता की आज्ञा मान ली और वेद और पुराणों को पढ़ना शुरू कर दिया। दोनों लड़के पढ़ कर विद्वान बन गये परन्तु सबसे छोटा लड़का सबसे विद्वान निकला। एक दिन बड़ा लड़का भिक्षा माँगने के लिये गया। भिक्षा माँगते-माँगते एक गांव में पहुँचा। जब उसने पहले पर घर ही आवाज दी, तो अन्दर से एक युवती भिक्षा लेकर आई। वह बहुत सुन्दर थी। बड़े लड़के के मन में उससे प्रेम की बात जाग्रत हुई। वह उस युवती को बातों में फँसाकर अपने घर ले आया। इस काम को देखकर उसे उन ब्राह्मण ने अपने घर से निकाल दिया तब वह लड़का दूसरे गांव में जाकर रहने लगा। एक दिन छोटा लड़का भिक्षा माँगते-माँगते बड़े भाई के घर पहुँच गया। उसे देखकर बड़े भाई ने उसे अपने पास बिठाया और अपने पाप से छुटकारा पाने की विधि पूँछी। तब छोटे लड़के ने बताया वैसाख में वदीपक्ष में बरूथनी एकादशी आती है उसका तुम व्रत रखना और भगवान मधुसूदन की पूजा विधि के अनुसार करना, रात्रि को उनकी मूर्ति के पास ही सोना। दिन में ब्राह्मणों को भोजन करा देना और सोने की अंगूठी अन्न आदि का दान देना इस व्रत से तुम्हारा पाप नष्ट होजायगा। बड़े भाई ने वैसाख बदी एकादशी को व्रत रखा, मधुसूदन की विधि-

व्रत पूजा की और दिन में ब्राह्मणों को भोजन कराया और उसने आशीर्वाद लिया। दिन में उसने हरि कीर्तन किया। रात्रि को मन्दिर में ही सो गया। जब वह रात्रि में सो रहा था तो उसने एक स्वप्न देखा। उसके सामने भगवान खड़े हैं, और उससे कह रहे हैं, तूने जो पाप किया है इस वरूथनी एकादशी से नष्ट होगया है। तू अपने घर को चला जा। मैं तेरे पिता को भी स्वप्न में दर्शन देकर समझा दूँगा।

सुबह जब वह जगा और घर पहुँचा तब उसने स्वप्न का समस्त हाल अपनी पत्नी को सुनाया। सुनकर उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई। दोंनों अपनी काशीनगरी को चल दिये और घर आकर पिता को प्रणाम किया। पिता पुत्र को बड़े प्यार से घर में ले गया और वे सब आनन्द से रहने लगे। कुछ दिन में बड़े लड़के के आचार-विचार भी बदल गये और विद्वान बन गया। हे एकादशी माता! जैसे तूने उस ब्राह्मण के लड़के को पाप से मुक्त किया वैसे सबको मुक्त करना।

१६ श्यामा खीचड़ी

वैसाख सुदी अखतीज के एक दिन पहले शाम को बाजरा और मूँग मिलाकर उसकी खीचड़ी बनावे। खीचड़ी में नमक नहीं डाले। साग में जीरे का छोंक नहीं देवे। पापड़ नहीं सेके। चौके में पक्की रसोई नहीं बनावे और न चूल्हे पर कढ़ाई चढ़ावे।

१७ अक्षयतीज (अक्षय तृतीया)

अक्षय तृतीया वैसाख सुदी तीज को मनाई जाती है। इस दिन सुबह मूँग और चावल की खीचड़ी बिना नमक की बनावे। पापड़ नहीं सेके। पक्की रसोई नहीं बनावे। घड़ा, पंखा, चावल, दाल, नमक, चीनी, घी, साग, इमली, रुपिया, कपड़ा ब्राह्मणों को दान देवे।

इसदिन लक्ष्मी सहित भगवान, नारायणकी पूजा करनी चाहिये। पहिले भगवान नारायण और लक्ष्मीजी की प्रतिमा को गंगा जल से स्नान करावे और सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों से सजावे। पुष्प, धूप, चन्दन और दीप से उनकी आरती उतारे, मिश्री और भीगे हुए चनों का भोग लगावे, तुलसी दल चढ़ावे फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे और श्रद्धा के अनुसार दक्षिणा देकर विदा करे। उनके चले जाने के बाद भाई-बन्धुओं के साथ बैठकर भोजन करे। इस दिन सबको अच्छे कर्म करने चाहिये। इस दिन के किये हुये कर्म कभी बेकार (क्षय) नहीं होते इसलिये इसे अक्षयतीज कहते हैं।

अखतीज (अक्षय तृतीया) की कहानी

बहुत समय पहले की बात है, महोदय नामक एक वैश्य कुशवती नामक नगरी में रहता था। उसने किसी पंडित से कथा में अक्षय-तीज का नाम सुना तब फिर उसने उसका नियम पूर्वक व्रत रखा। इस व्रतके प्रताप से वह कुशवती नामक नगरी का महाप्रतापी राजा हुआ। उसका खजाना हर समय हीरा जवाहिरातों से भरा रहता था। वह राजा

5231

दान भी करता था। एक वार कुछ मनुष्यों ने इसका कारण पूँछा तब उसने अपने अक्षय व्रत की बात सुनाई। तब से उस बातको सुनकर नगर वासियों ने भी व्रत को रखना शुरू कर दिया और सभी नगर निवासी धन धान्य से वैभव पूर्ण होगये। हे अक्षय तीज माता! जैसे तूने उस वैश्य को धन दिया वैसे सबके खजाने भरना।

दूसरी कहानी

जब राजा युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ हो रहा था। तभी एक नेवला वहाँ आकर लोटने लगा। कुछ लोगों ने देखा कि उसका आधा शरीर, सुवर्ण-मयी है और आधा वैसा ही है। जैसे नेवला का हुआ करता है। उसे देखकर युधिष्ठिर पुरोहित से इसका कारण पूछने लगा। तब पुरोहित कहने लगे हे राजन्! इसका कारण नेवला से ही पूछो। राजा ने नेवला से पूछा तब नेवला कहने लगा। तुम्हारा यज्ञ अक्षय-तृतीया के दिन दिये गये गेहूँ के कणों के बराबर भी नहीं है। तब युधिष्ठिर पूछने लगे क्यों? तब नेवला बोला मुगल नामका एक ब्राह्मण खेतों से दाना बीनकर अपना पोषण किया करता था वह सत्यवादी था। एकदिन की बात है कि भगवान ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। वे अक्षय तृतीया के दिन उसके पास आये और अन्न जल माँगा ब्राह्मण ने अपना और अपनी स्त्री का भाग उठाकर दे दिया। देते समय कुछ दाने पृथ्वी पर गिरगये। मैं वहाँ लेटा रहा था तब लौटते ही लौटते मेरी सुवर्ण काया होगई। तबसे मैं पूरे

शरीर को सुवर्णमयी करने के लिये यज्ञोंमें घूमरहा हूं परन्तु अक्षयतृतीयाके दानेके बराबर कोई यज्ञ फलदायक नहीं मिला जिससे मेरी सम्पूर्ण सुवर्णकाया होजाय। यह सुनकर युधिष्ठिर लज्जित हुए और अक्षयतृतीया का उसीदिन से नियमपूर्वक व्रत करने लगे। हे अक्षयतीज माता! जैसे तूने उस नेवलेकी सुवर्ण देही की वैसी सबकी करना।

आरती श्री सत्यनारायणजी की

छन्द—जय सत्य कारण, जय नारायण, सत्य में स्थित श्रीपते।
जय काल सत्य स्वरूप, तब सुन सत्य प्राप्य स्वजन गते॥
जय सप्त धर्म प्रबर्त्तकाच्युत सत्य आश्रय श्री हरे।
यह सप्त सत्य स्वरूप प्रभु तव चरण शरणी हम परे॥

सवैया--तुमही इस कारण हो जग के, तुमको प्रति पालन वेद पुकारे।
पुनि अन्तस में लय होवत है यह विश्व सभी तव धाम मझारे॥
तुमरी शकती कर मोहित जो नर सो तुममें बहु रूप निहारे।
मति मान्ति मुनीश सुपंडित जो,सबके इक उत्तम रूप बिचारे॥
निज बोध स्वरूप अरूप प्रभो तुम रूप धरो शुधसत्य उवारे।
सब स्थावर जंगम जीवन के सुख कारण हेतु सुरेश मुरारे॥
खलमूढ़मती नर पायर जो, तुमसे दुख पावत हैं अविकारे।
निज भक्त विरक्त उदारन को, तुम देख मोक्ष अखंड खरारे॥

जय देह अनातम को तुम जानत बिश्व प्रकाशक रूप तुमारा।
तुमको नहिं जानत को हरि को मन वाक अगोचर वेद उचारा॥
इम जान तुमें तब नाम जपें प्रिय के पद को उर धार उदारा।
तुमरे पदपंकज माँहि पुना पुन, लक्ष्मी पति होत प्रणाम हमारा॥

(श्रीमद् गोपाल विलास से)

१८ मोहनी एकादशी

मोहनी एकादशी वैशाख सुदी एकादशीको मनाई जाती है। इसदिन भगवान पुरुषोत्तमकी पूजा करनी चाहिये। भगवान

पुरुषोत्तमकी प्रतिमाको शुद्ध जलसे स्नानकराकर अच्छे और शुद्ध वस्त्र पहिनावे। ऊँचे आसन पर बैठाकर मीठे-फलों का भोग लगावे। फिर धूप, दीपकसे आरती उतारे। आरती के बाद प्रसाद बाँटे। फिर ब्राह्मणोंको भोजन करावे और अपनी शक्तिके अनुसार दक्षिणा देकर विदाकरे। दिनमें भगवान का कीर्तन करे और रात्रि को भगवानकी मूर्तिके चरणोंमें ही शयन करे। जो नियमपूर्वक इस एकादशीको व्रत रखते हैं वे हरेक पापसे मुक्त होजाते हैं। अन्तसमय स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। इस एकादशीसे गुरुपत्नी के साथ भोगकरने का जो पाप लगा होता है वह दूर हो जाता है भगवानकी मूर्ति के पास शयन करनेसे भगवानके चरणों में मन लगा रहता है।

मोहनी-एकादशी की कहानी

व्यासरा गाँव में एक ब्राह्मण रहता था उसके एक पुत्र था। ब्राह्मणने सोचा जब यह बड़ा होजायगा तो इसे काशी में गुरुजीके पास पाठशालामें पढ़नेके लिये भेज दूँगा। तीनवर्ष बाद वह लड़केको लेकर काशी पहुँचा। काशी में अपने कुल-गुरुकेघर पहुँचा और जाकरगुरुजीको दण्डवत् किया, दण्डवत्के बाद गुरुजीने कुशल समाचर पूछे साथ ही यह भी पूछा कैसे आना हुआ ? तब ब्राह्मण बोला-हेगुरुदेव ! चन्द्रपाल नामका यह मेरा पुत्र है इसको विद्या पढ़वाने के लिये आपके समीप लाया हूँ। अब यह आपके चरणों में आगया है। इसे शिक्षा दीजिये। गुरुजीने ब्राह्मणके बचनों को सुनकर चन्द्रपाल को गोदमें उठालिया और प्यार करने लगे। ब्राह्मण को धीरज

बंधाते हुए कहनेलगे आपके पुत्रको मैंने अपना लिया है। इसे विद्यापढ़ाकर निपुण करदूँगा। गुरुदेवकी बात सुनकर ब्राह्मण अपने घर चला आया। गुरुदेव २५ वर्षतक चन्द्रपालको शिक्षा देते रहे। २५ वर्ष बाद चन्द्रपाल पूर्ण-यौवनावस्थामें आगया एकदिन गुरुजी घरपर नहीं थे। काशी से बाहरगये थे। तब चन्द्रपालके मनमें गुरुकी पत्नी जो यौवनपूर्ण थी उसके साथ भोग-विलास करनेकी इच्छा जाग्रत हुई। उसने अपनी इच्छा की पूर्ति जबरदस्ती की और वहां से भाग गया, भागते-भागते जब दिन छिपनेको आगया तो वह एक कुएँ के पास रुका। वहां उसने पानी खींचा और हाथ मुँह धोकर सोगया। इतने में वहाँसे शिवजी और पार्वतीजी घूमते-घूमते आगये पार्वतीने देखा कि कुएँके पास कोई सोरहा है तो शिवजीसे कहने लगीं महाराज! कोई दुखिया जंगलमें सोरहा है चलो देखें कौन है? जंगलमें क्यों सोरहा है? शिवजी मना करने लगे परन्तु पार्वती कब मानने वाली थीं उनको ले गईं। चंद्रपाल घबड़ाया हुआ तो वैसेही था वह सोते से चौंकगया और बिना देखेही गुरु समझकर पैर पकड़ लिये और क्षमाकरो कहकर रोने लगा, उसको देखकर शिवजी कहनेलगे तूने कौनसा कामकिया है जो तू इतना डररहा है बिना संकोचके बता। तब उसने सारीकथा कह सुनाई। तब शंकरजी ने कहा मेरा नाम शंकर है, तू वैशाखकी सुदी पक्षकी जो एकादशी आयेगी उसदिन व्रत रखकर भगवान की पूजा करना, तेरा पाप दूर होजायगा। जब मोहनी एकादशी आई तब उसने व्रत रखा तो उसके

सब पाप दूर हो गये और अन्तसमय पर स्वर्ग लोकको गया हे मोहनी एकादशी माता ! जैसे तूने उस चन्द्रपालका उद्धार किया वैसा सबका करना ।

१६ श्री नृसिंह जयन्ती

श्री नृसिंह-जयन्ती वैशाख शुक्ल चौदसको मनाई जाती है । इस दिन नृसिंह भगवान ने अवतार धारण किया था । इस दिन नृसिंह भगवानका व्रत करनेसे समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती हैं सायंकालको भगवान नृसिंह को पंचामृत (दूध, दही, शहद, बूरा, घी) में तुलसी के पत्ते डालकर स्नान करावे । फूल, दीप, धूप आदि से उनका पूजन करे । उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान से क्षमा की प्रार्थना करे—

तप्तहाटक के शान्त ज्वलत्पावकलोचन ।
'वज्राधिक नख स्पर्श दिव्य सिंह नमोऽस्तुते ॥

अर्थात् "दिव्यसिंह ! आपके बाल तपाये हुए सोनेके समान दमक रहे हैं नेत्र प्रज्वलित अग्नि के समान दहक रहे हैं और आपके नखोंके स्पर्श वज्र से भी अधिक कठोर हैं आपको नमस्कार है" इस प्रकार प्रार्थना करते हुए व्रत रखने वाला जमीनपर सोवे । अपनी इंद्रियोंको वशमें रखे । क्रोधको रोके रहे और विषय-भोग से दूर रहे । शान्तिपूर्वक ब्रतको रखते हुए भगवानकी पूजाकरे और एक समय (शामको) भोजन करे जो मनुष्य इसप्रकार नृसिहजी का ब्रत रखते हैं वे संसार के समस्त सुखों को भोगकर स्वर्ग को प्राप्त होते हैं ।

२० लिंग व्रत

यह व्रतवैशाखसुदी चौदसको किया जाता है। जिस दिन नृसिंह जयन्ती होती है उसीदिन यह व्रत भी रखा जाता है। इसदिन नृसिंहजीके साथ-साथ शिव-लिंगकी भी पूजा करनी चाहिये। पहिले आटेका एक शिव-लिंग बना लेवे फिर उसे पंचामृतसे स्नान करावे, कुंकुमका लेप करे अच्छे वस्त्र पहिनावे और धूप, दीप नैवेद्य, फूल आदि से पूजा करे। जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं वह अपने सभी मनोरथों को पूर्ण कर लेते हैं। सांसारिक भोगोंको भोगकर अन्त-समय दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त करते हैं इस दिन 'ॐकारेश्वर' की याद करनी चाहिये। इससे मनुष्य मोक्ष प्राप्तकर स्वर्ग के सभी ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

२१ धर्मराज व्रत (सत्य विनायक पूर्णिमा)

यह व्रत वैशाखकी पूर्णिमाको आता है। इसदिन धर्मराज की पूजा करनी चाहिए। धर्मराज की मूर्ति को स्नान कराकर अच्छेवस्त्र पहनाकर, फूल चढ़ाकर, दीप धूप से पूजा करे। इस दिन जलसे भरा हुआ मटका, पकवान और पान आदि ब्राह्मणोंको दान देकर फिर स्वयं भोजन करलेवे।

इसदिन जलसे भरा मटका दान देने से सोने से भरेमटके को दान देने के समान फल प्राप्त होता है। पकवान दान देनेसे गौके दानके बराबर फल मिलता है। इस व्रतसे धर्मराज प्रसन्न होते हैं। जिससे घरमें किसीकी कुमृत्यु या अकालमृत्यु नहीं होती है। जो जलके साथ सोनेका दान देते हैं वे कभी

शोक में नहीं पड़ते अर्थात् उनके शोक दूर हो जाते हैं और धन-धान्य से पूर्ण हो जाते हैं।

ज्येष्ठ (जेठ) मास के व्रत और त्यौहार

यह हिन्दी महीनोंका तीसरा महीना है। इस महीने में गर्मी पड़ने लगती है। लू काफी चलती है। इसमें निम्न-लिखित व्रत और त्यौहार होते हैं:—

२२ अपरा एकादशी

ज्येष्ठ वदी पक्षमें आनेवाली एकादशीको अपराएकादशी कहते हैं। इसदिन भगवान त्रिविक्रमकी पूजा करनी चाहिये। एकादशी को व्रत रखकर भगवान त्रिविक्रम को शुद्ध जल से स्नान करावें फिर उन्हें स्वच्छ वस्त्र पहिनावें फिर धूप, फूल और घीके दीपकसे पूजाकरें। ब्राह्मणोंको भोजन कराकर उन्हें अपनी श्रद्धाके अनुसार दानदेकर उनसे आशीर्वाद लेकर उन्हें सम्मान पूर्वक विदाकरें। फिर आप फलाहार करें। दिनमें भगवान की मूर्तिके पास बैठकर कीर्तन करें और रात्रि में मूर्तिके चरणोंमें शयन करें। जो इसप्रकार व्रत करते हैं उन्हें स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। साथ ही इस व्रत के करने से पीपलका वृक्ष काटने का पाप दूर होजाता है।

अपरा एकादशी की कहानी

बहुतसाल पहलेकी बात है एक महीध्वज नामका राजा राज्य करता था। वह बहुतदानी था। उसका एक छोटाभाई था। उसका नाम वज्रध्वज था। वह हिंसक स्वभाव का

मनुष्य था । एकदिन उसने अपने भाई को मार दिया और पीपलके नीचे गाढ़दिया । इस गतिसे राजा बड़ा भारी प्रेत हो गया । वह पीपल पर बैठा-बैठा उत्पात किया करता था । एक दिन वहाँ से धौम्य नाम के ऋषि आ रहे थे । उन्होंने प्रेतको देखा और अपने पास बुलाकर अपने तपोबलसे उसका प्रताप जान लिया । मुनिने उसे मुक्ति का उपाय बताया कि वह अपरा नामक एकादशी का ब्रत रखे । वह बोला हे भगवन ! मैं नहीं कर सकता । तब मुनिने स्वयं उसके मोक्ष के लिये एकादशी का ब्रत किया । जिससे राजाकी मुक्ति होगई और दिव्य लोक को प्राप्त हुआ ।

२३ 'बड़साँयत-अमावस्या' या 'बड़-सावित्री ब्रत'

बड़साँयत अमावस्या ज्येष्ठ वदीकी अमावस्याको मनाई जाती है । इसदिन बड़के पेड़की पूजा करनी चाहिये । यहव्रत केवल औरतों को ही करना चाहिये । एक थालमें जल,रोली, चावल,हल्दी,गुड़,भीगे चने आदि लेकर बड़के पेड़ के पास जावें । वहाँ बड़के तनेसे रोलीके टीकेलगावें फिर चना-गुड़, चावल सबको बड़के पेड़के नीचे चढ़ा देवें और घी का दीपक जलादेवें । फिर हल्दीमें कच्चे सूतके धागे रंगकर बड़के पेड़से लपेटदेवें । सात परिक्रमा बड़के पेड़की करें । बड़के पेड़के पत्तों की माला बनाकर पहन लेवें और उसकी कहानी सुनें । घर में जो वस्तु बनीहोवे उसेया चने, रुपया रखकर वायनों के रूपमें अपनी सास और सहेलियों के यहाँ भिजवायें फिर अपनी सासुजी के पाँयन लगें और आशीर्वाद प्राप्त करे ।

बड़-सांयत की कहानी

एक राजा था उसके कोई संतान नहीं थी। एकदिन उसने बड़े२ पंडितों, ज्योतिषियों और विद्वानों को बुलाया। जब ज्योतिषी आये,तो राजाने उन्हें अपने आसनपर बिठाया और पूछनेलगा महाराज! मेरे कोई संतान है या नहीं तब ब्राह्मणोंने बताया कि आपके एककन्याका जन्म होगा जो अपने विवाहके एकसाल बाद विधवा होजायगी यहसुन राजा सोचमें पड़गये। बात बीतती गई। एकसाल बाद उनके घर एक पुत्रीका जन्म हुआ। उस लड़कीका नाम उन्होंने सावित्री रक्खा। जिसप्रकार सुदीपक्षका चन्द्रमा दिनपर दिन बड़ता जाता है उसी प्रकार सावित्री भी बढ़ने लगी। १८ वर्ष बाद जब वह यौवनावस्था में आई तो पिताको उसकी शादीकी चिंताहुई। तब पिताने नारदजीको बुलाया और साराहाल कहा। तब नारदजी कहने लगे,हे राजन्! तुम अपनी पुत्री सावित्रीसे कहोकि वह अपने योग्य पति को स्वयं ढूँढले। फिर उसीसे शादी कर देना। राजाने अपनी पुत्रीको पास बुलाया और नारदजीके द्वारा कही बात कहदी। सावित्री भी उनकी बात मानगई औरपति की खोजमें यात्राके लिये चलपड़ी। उसके साथ बहुतसी सहेलियाँ थीं,वे गाँव,शहर और जंगलोंमें घूमती हुई एक जंगल में पहुँची। वहाँ पर उन्होंने अपना रथ रुकवाया और विश्राम करने लगीं। वहीं पर एक सत्यवान नामका लड़का लकड़ी काटरहा था। सावित्री उसे देखकर उसपर मोहित हो गई और उसे अपने पास बुलाया। उसने उसका नाम, पता माँ

बाप आदि को पूछा सत्यवानने कहा पिता-माता अंधे हैं। मैं उन्हींके साथ इस जंगल में रहताहूँ और लकड़ी काटकर गुज़ारा करता हूं। सावित्री ने उससे शादी करने को कहा, सत्यवान हँसने लगा और कहा तुम महलोंमें रहती हो और मैं जंगल में रहता हू मेरा-तेरा कैसे साथ हो सकता है, परन्तु सावित्री उससे हठ पड़ गई और सत्यवान को अपना पति बनाने की कोशिश करने लगी। अन्त में सत्यवान मानगया और उसे अपनी जंगलकी कुटिया में लेगया उसने उसे अपने माता-पिता से मिलाया और उसकी हठ सुनाई। सत्यवान के पिताने उसे काफी समझाया परन्तु सावित्री के सामने एक भी न चली। सत्यवानको अपना पति स्वीकार करके घर वापिस आई और पिताजी को बात बताई कि उसने अपना पतिचुनलिया है। जब सावित्री अपने पितासे ये बातकह हीरही थी तभी नारदजी आगये। नारदजीने पूछा कि तूने अपनेलिये कौन-सा पति चुना है? तब सावित्रीने बताया कि सत्यवान नामका युवक अपना पति चुना है। तब नारदजी कहने लगे उसमें सब गुण ही गुण हैं परन्तु वह विवाह के एक साल बाद मृत्युको प्राप्तहोजायगा। इसलिये तू कोई दूसरा वर चुनले। सावित्रीने कहा हिन्दू-नारी एकही बार पतिको चुनती है इस लिये चाहे कुछ भी हो, मैं उन्हें ही अपना पति चुन चुकी हूँ। माता-पिताके बहुत समझाने पर भी वह नहीं मानी तब नारदजीने उसे आशीर्वाद दिया, "कि तेरा कल्याण हो"। यह कहकर नारदजी चलेगये। सावित्री और सत्यवान का

विवाह होगया। सावित्री अपने पतिके कल्याणके लिये भगवान शिवकी पूजा करने लगी। जब वह दिन निकट आनेलगा तब वह उपवास रखने लगगई। सातदिन पहिले उसने बड़ी भक्ति से पूजाकी। तब भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुए और पूछा कि "तेरी पूजा करनेसे मैं प्रसन्न हूँ जोवर माँगना है माँग" तब सावित्रीने उनसे वर माँगा कि मेरे पतिके अन्तसमय में २ दिन शेष रह गये हैं उनके बचाने का उपाय बताओ।

तब भगवान बोले-कल ज्येष्ठकी अमावस्या है कल तू बड़के वृक्षकी पूजाकरना वह तेरे मनोरथोंको पूरा करेगा, तब सावित्री ने वैसा ही किया। रात्रि जागरण भी किया। सुबह जब सात्यवान जंगलको जानेलगा तब कहनेलगी मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। सत्यवान ने मना किया परन्तु साबित्री नहीं मानी, वह अपने सास-ससुरसे आज्ञा लेकर जंगल में सत्यवान के साथगई। सत्यवान जंगलमें पहुँचकर एक पेड़पर चढ़गया। उसने लकड़ी काटनी शुरू करदी। कुछ देर बाद उसके सिरमें दर्द हुआ और बृक्ष से नीचे आकर सावित्री की गोदमें लेट गया। सावित्रीकी चिंता बढ़ने लगी। इतनेमें सत्यवान बेहोश होगया। सावित्रीने देखा मेरे सामने कोई खड़ा है उसने पूँछा, आप कौन हैं ? तब उसने कहा—मैं धर्मराज हूँ, मैं तुम्हारे पतिसे प्राण लेने के लिये आया हूँ इतना कहकर धर्मराज सत्यवान के प्राण लेकर चलदिये। सावित्री भी उनके पीछे-पीछे चलदी। धर्मराज ने मना किया परन्तु नहीं मानी तब उसने कहा अपने पति के अलावा कोई तीन वर माँगलो

तब सावित्रीनेकहा-प्रथम मेरे सास-सुसरकी आँखें ठीकहोजायँ,

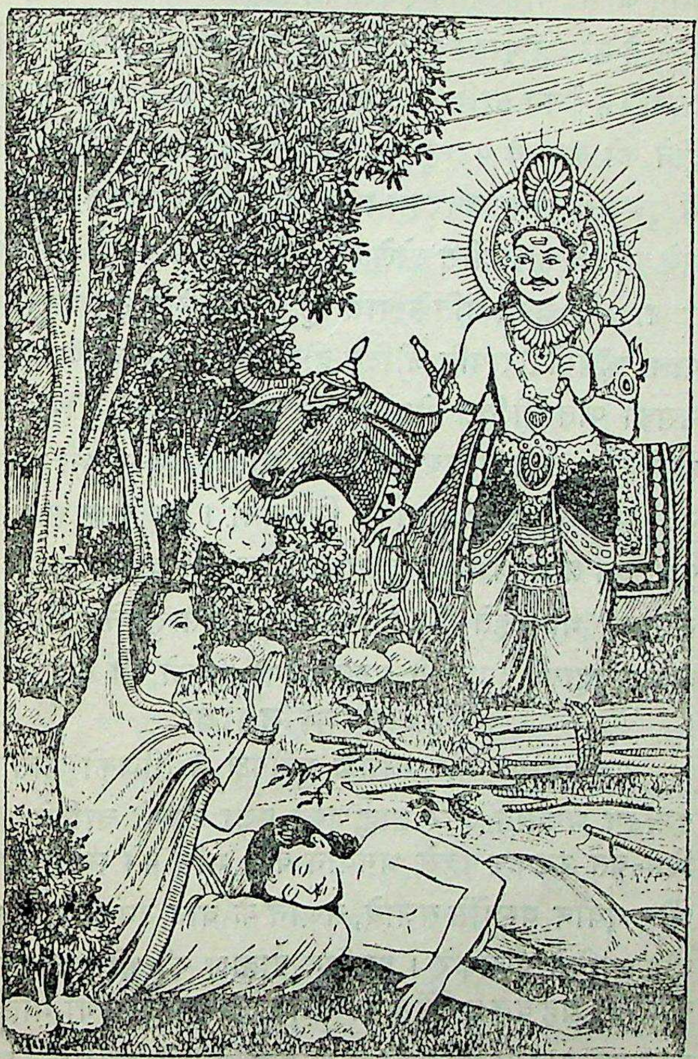

दूसरा उन्हें राज्य वापिस मिलजाय, तीसरा मैंपुत्रवती होजाऊँ धर्मराजने कहा ऐसा ही होगा। यह कहकर वह आगे चलदिये

आगे जाकर पीछे मुड़कर देखा तो सावित्री फिर भी पीछे२ आ रही है तो वह गुस्सा होकर कहने लगे—अब क्यों मेरे पीछे आरही है ? तब सावित्री ने कहा भगवन् ! आपने मुझे पुत्रवती होने को कहा है परन्तु मेरे पति को तो आप लिये जारहे हैं मैं पुत्रवती किसप्रकार हो सकती हूँ ? धर्मराज चक्कर में पड़ गये और वे सावित्रीसे बोले तूने मुझे जालमें फँसालिया। अब तू जा और अपने पतिके पास पहुँच जा, जैसे ही तू अपने पतिके पास पहुँचेगी तेरापति जीवित होजायगा। वह वापिस आगई उसका पति जीवित होगया फिर वह घर आये और सुख से रहनेलगे। तभी सत्यवानके पिता-माताकी आँखें भी ठीक हो गई और राज्य भी वापिस मिलगया। यह सबकुछ बड़की पूजा एवं व्रतके प्रभावसे हुआ इसीलिए इसे बड़सायत या बड़ सावित्री भी कहते हैं। हे भगवन् ! जैसे तुमने सावित्रीको अटल सुहाग दिया वैसे सबको देना हमको भी देना।

२४० रम्भा तृतीया

यह तृतीया ज्येष्ठमासके सुदीपक्ष में तीजको आती है इसदिन भगवान और ब्राह्मणकी पूजा करनी चाहिये। इस दिन व्रत रखकर पहले भगवान की मूर्ति को स्नान करावे और नवीन वस्त्रोंसे सजावे, सजाने के वाद उनकी फूल, धूप दीप आदिसे पूजाकरे। इसदिन ब्राह्मण की भी पूजा करनी चाहिये। यह व्रत धर्ममें श्रद्धा बढ़ाता है। इसीदिन गौ-माताका दान बतायागया है इसकी पूजा करने वाली नारी धन-धान्य से सम्पन्न और अपने पतिको सुख देती हुई स्वर्ग जाती है

२५. दशहरा (गंगा दशमी)

यह ज्येष्ठसुदी दशमी को आताहै,इसदिन सरिताओंमें श्रेष्ठ जह्नु-पुत्र श्रीगंगाजी राजा-भागीरथके द्वारा स्वर्ग से पृथ्वीपर लायी गई थीं। इसदिन हस्तनक्षत्र,बुधदिन, दशमी तिथि, गर करण,आनंद योग, व्यतिपाल, कन्या राशिके चन्द्रमा और बृष राशि के सूर्य इन दसोंके योगकामहान पुण्य बतलाया गया है।

इसदिन सुबह गंगा-स्नान करे तथा दूध, बताशे चढ़ावे। जल,रोली, चावल, मोली, नारियल चढ़ावे और दीपक जला कर गंगामें बहादे। इसदिन घरमें जितने स्त्री-पुरुष हों उतनी ही जगह सवा२सेर आटा लेकर पूड़ी और चूरमा बनावे और एक जगह घरकी तरफसे १। सेर चूरमा बनावे और सवासेर निकालकर गंगाजी का भोग लगावे और बचेहुएको ब्राह्मणों को बाँठ देवे। गंगाजी की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर फूल, घीके दीपक से पूजा करे साथ ही भगवान नारायण, शिव, ब्रह्मा,सूर्य, राजा भगीरथ और हिमालय की भी मूर्ति बना कर उनकी पूजाकरे। बिना दियेहुए किसी की वस्तुको लेना, हिंसा करना, पराई स्त्रीके साथ सम्बन्ध रखना-ये शारीरिक पाप माने जाते हैं। कठोर बोलना, झूँठ बोलना, चुगली करना और अनाप सनाप बातें करना-ये चार वाचिक पाप कहे जाते हैं। दूसरों का धन हड़पने की बात सोचना,किसी का बुरा सोचना और मारने की सोचना-ये मानसिक पाप कहे जाते हैं। ऐसे कभी भूलसे किये हुए पाप क्षण मात्र में दशहरा के दिन गंगा-स्नान करने से दूर हो जाते हैं।

गंगा-दशहरा की कहानी

बहुत समय पहले की बात है एक सगर नामके रा
राज्य करते थे। उनके ६०,००० पुत्र थे। एकबार उन्होने अश्
मेध-यज्ञ किया। यज्ञकी पूर्ति के लिये उन्होंने घोड़ा छोड़ा
यह देख इन्द्रको डरलगा कि कहीं यज्ञपूरा न होजावे। इसलि
वह उस घोड़ेको चुराकर लेगया और कपिलमुनिके आश्रम
बांध दिया। राजाने खोजने के लिये अपने ६०,००० पु
को भेजा। खोजते २ वे कपिलमुनिके आश्रममें पहुँचे। कपि
मुनि समाधि लगाये हुए बैठे थे। उन्होंने घोड़ेको देख मु
जी को पकड़ने का प्रयास किया। इस पर मुनिजी ने क्रो
में आकर सबको भस्म कर दिया।

बहुतदिन बीत जानेपर राजा सगरने देखाकि उसके पु
अभी तक वापिस नहीं आये हैं तो वह अपने अङ्ग रक्षकों
साथ उनकी खोज करने चल पड़े। खोजते-खोजते वह कपि
मुनिके आश्रममें पहूँचे। मुनिजीसे अपने बेटोंके बारे में कह
तब मुनिजीने साराहाल कह सुनाया। तब राजा ने मुनि
उनकी शाँतिका उपाय पूछा। मुनिजी ने बताया कि भगव
विष्णुके पैरोंसे निकली हुई गंगाजी जो अब ब्रह्माजी के क
ण्डलुमें हैं, पृथ्वीपर लेआओ और इन राखकी ढेरियों को उ
विसर्जित करदो, तब उनकी आत्माओं को शांति मिलेगी

यह सुनकर राजा चले आये और गंगाजी को पृथ्वी
लानेके लिए तपस्या करने लगे। उन्होंने बहुत से प्रयत्न कि
परन्तु गंगाजीको पृथ्वीपर लानेमें असमर्थ रहे। यह क्रम

पीढ़ियों तक चलता रहा। आगे चलकर इसी कुटुम्ब में एक राजा भगीरथ हुए। उन्होंने हिमालय पर जाकर ब्रह्माजी की तपस्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न होकर प्रकट हुए। उन्होंने राजा भगीरथसे पूछा कि क्या माँगते हो? तब राजा भगीरथ बोले भगवन्! आपके कमण्डलु में जो गंगाजी हैं उन्हें पृथ्वीपर भेजें जिससे मेरे पूर्वजोंकी अस्थियोंका और संसार का कल्याण हो। तब ब्रह्माजी कहने लगे-मैं गंगा को पृथ्वी पर भेज तो सकता हूं परन्तु इसे सँभालेगा कौन? तब भगीरथ बोले भगवन्! आपही बतायें। तब ब्रह्माजी बोले आप अपनी तपस्यासे भगवान शकरजी को प्रसन्न करें। वही गंगाजी को सँभाल सकते हैं। इतना कहकर ब्रह्माजी चले गये। राजा भगीरथ फिर शंकरजी को प्रसन्न करने के लिये तपस्या करने लगे। भगीरथ ने बहुत कठोर तपस्या की। उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर शंकर भगवान प्रकट हुये और भगीरथ से कहने लगे राजा! मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूं वर माँगो। राजा बोले भगवन्! विष्णुजीके चरणोंसे प्रकट हुई गंगाजी जो ब्रह्माजीके कमण्डलुमें विराजित हैं, मैं उन्हें पृथ्वीपर लाना चाहता हूँ परन्तु उनका बहाव अधिक होने के कारण ब्रह्माजीने कहा है कि इसे सिर्फ शङ्करजी ही संभाल सकते हैं। अतः आप गंगाजीको सँभालिये। शङ्करजी बोले ब्रह्माजी से कहो वे गंगाजी को आकाश से छोड़ें, मैं तैयार हूँ। तब भगीरथजी ने हाथ जोड़कर कहा हे ब्रह्माजी! आप गंगाजी को पृथ्वी पर छोड़िये, शंकर भगवान गंगाजी

के वेग को संभालने के लिये तैयार हैं।

इतनी बात सुनकर ब्रह्माजीने गंगाको छोड़ा। रास्तेमें बड़ी जोरका शोर हुआ। तब भगीरथ को ऐसा मालूम पड़ा मानो गंगाजी शंकरजी सहित पातालको चली जायँगी परन्तु कुछ देर बाद ही शोर बन्द हो गया। भगीरथ ने देखा शंकरजी की जटाओंमें गंगाजी समागई हैं। तब राजा भगीरथने शंकरजीसे कहा हे भगवन्! गंगाजीको धीरे से पृथ्वीपर छोड़िये। तब भगवान शङ्करने एक जठा खोली जिसमें से तीन धारायें निकलीं जो एक आकश, एक पाताल और एक जमीन पर रह गई। तब शङ्करजी बोले भगीरथ जी! आप अपना रथ आगे बढ़ावें, गंगाजी आपके रथके पीछे २ बहती चली जायँगी। भगीरथ रथमें बैठकर चलपड़े। गंगाजीपीछे२ चल पड़ीं। चलकर भगीरथजी कपिल-मुनिके आश्रममें आये और राजा सगरके साठ हजार पुत्रोंको गंगाजीका स्पर्श करा कर उनको शाँति दी। उसी दिन से गंगाजी इस संसार में मनुष्यों के पापों को नाश करनेके लिए बहा करती हैं।

२६. निर्जला एकादशी

ज्येष्ठ (जेठ) सुदी एकादशीको निर्जला एकादशी मनाई जाती है। इस दिन भगवान हृषिकेशकी पूजा करनी चाहिए।

जैसा इसका नाम 'निर्जला' है वैसाही इसका नियम भी है। इसदिन न तो अन्न खाना चाहिये और न पानी ही पीना चाहिए। बिना खाये-पीये ही व्रत रखना चाहिए।

पहले भगवान को स्नान करावें फिर उनको अच्छे-

अच्छे वस्त्रों से सजावें और भोग लगावें। भोग लगानेके वाद उनकी फूल,धूप,दीप आदिसे आरती उतारें। दिनमें हरिकीर्तन करें, रातको भगवानकी मूर्ति के पास ही शयन करें। इसदिन गायोंको चून का लोआ खिलावें। ब्राह्मणों को भोजन करावें और कपड़ा, वस्त्र और पैसे अपनी श्रद्धानुसार दान देवें। स्त्रियां सुहागके अच्छे २ कपड़े पहिनकर अपनी सास एवं वृद्धाओं के पैरोंको छूएँ, उनको सुराई और चीनीका वायना देवें और उनसे आशीर्वाद लें अगर किसी की सास दूर रहती हों तो वे उनको कपड़े भेज देवें। स्त्रियोंके व्रत करनेसे उनका सुहाग अटल रहता है मनुष्य इस व्रतको रखता है तो वह सभी पापोंसे मुक्त होजाता है। इस एकादशी के व्रत से झूँठ बोलने और बुराई करनेका जो पाप होता है वह दूर होजाता है और ब्रह्म भोज कराने से २४ एकादशियों का व्रत मिलता है।

२७. वट-सावित्री

यह ज्येष्ठकी पूर्णमासीको आती है इसदिन भी स्त्रियों को अपने पतिकी रक्षाके लिये व्रत रखना चाहिए। इसके व्रत की विधि भी बड़-साँयत के व्रत की तरह ही होती है।

२८. जल यात्रा पर्व

यह पर्व ज्येष्ठ-सुदी-१४ या पूर्णमासीको मनाया जाता है। इसदिन मूर्तियों का फूलोंसे शृंगार करे। फूलोका ही बंगला बनावे तथा सरोवरोंके जलसे स्नान करावे। वरुण-देव का मिष्ठान्न का भोग लगाकर श्रद्धा पूर्वक वेदपाठी ब्राह्मणोंको दानदेवे। इससे वरुणदेवता प्रसन्न होते हैं।

आषाढ़ मास के व्रत और त्योहार

यह माह भारतीय महीनों के अनुसार चौथा महीना है। यह ज्येष्ठ के बाद आता है। इस महीने में गर्मी पड़ती है और वर्षा भी होने लगती है।

२६. योगिनी एकादशी

यह एकादशी आषाढ़ के बदीपक्षमें मनाई जाती है। इस दिन भगवान नारायणकी पूजा करनी चाहिये। इसदिन व्रत रखकर नारायण भगवानको प्रतिमा को स्नान करावें, भोग

लगावें, फिर फूल, दीप, धूप आदि से आरती उतारें। वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन करावें, और उन्हें अपनी शक्ति के अनुसार दान देककर आशीर्वाद प्राप्त करें। इसदिन व्रत रखनेसे मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। इस एकादशी को विधि विधान से व्रत करने से पीपल काटनेका पाप और दूसरों के द्वारा दिया गया श्राप नष्ट हो जाता है। अंतमें स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

योगिनी एकादशी की कहानी

बहुत पुरानी बात है कि अलकापुरी में कुबेरके यहाँ एक हेम-माली रहता था। वह शिवजीकीपूजाके लिये मान सरोवर से फूल लाया करता था। एकदिन वह अपनी स्त्री के साथमें बिहार करनेके कारण फूल लाना भूलगया और देरसे पहुँचा

तब कुवेरने गुस्सा होकर श्राप दिया कि तू कोढ़ी होजा। वह कहते ही कोढ़ी होगया। कोढ़ी होकर वह मार्कण्डेय मुनि के यहाँ पहुँचा। मुनिने उसे दुःखी देखकर योगिनी एकादशी के दिन व्रत रखने की आज्ञा दी। उसने ऐसा ही किया। व्रतके फल स्वरूप उसके शरीर से कोढ़ समाप्त हो गया और अंतमें दिव्य देह धारणकर स्वर्ग प्राप्त किया। हे एकादशी माता! जैसे तूने उसको निरोगी किया वैसे सबको निरोगी करना।

३०. रथ यात्रा

रथयात्रा आषाढ़ सुदी दौजको होती है। इसदिन भगवान श्रीबलराम, कृष्णजी तथा सुभद्रा देवीकी पूजाकरनी चहिये। इसदिन सुभद्रा देवी और श्रीबलरामजी को सजाकर रथपर बिठाकर नगर या गाँव में सवारी निकालनी चाहिये। साथ में कृष्णकी प्रतिमाभी बलरामके पास सजाकर रखनी चाहिए, फिर उन प्रतिमाओं को मन्दिर में रखना चाहिए। व्रत रखने वाले को इसदिन भगवानकी मूर्तिके समीप ही सोना चाहिये। व्रतको पूरा करने के लिये ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिए। उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिये। इस दिन व्रत रखने वाले स्त्री-पुरुषों की शेषनाग रक्षा करते हैं और उन्हें सब ऐश्वर्य प्राप्त होकर अन्त में स्वर्ग प्राप्त होता है तथा उनके सभी पाप नष्ट होजाते हैं।

बलरामजी की स्तुति

जय हो फणिनाथ अनन्त विभो, यह विश्व अमेय अधार तुमारे।
तुम हो दुरज्ञेय अयोगिन को तुमको श्रुति नेति च नेति उचारे॥
निज योग सुसिद्ध हितारथ को, तव पाय मुसीवत हैं मुनि सारे।
तुमरे पद पंकज ने मुख जो तिसको नहिं होवत बोध उबारे॥
भव वध पदांबुज द्वन्द्वन की कलिका कल सौरभ गंध सुहाई।
तब श्वाँस श्रुति पवमाद रमाकर साथ मिली दशहुँ दिशि छाई॥
विषयांडज वायस वा सरमा सुत के मल की दुरगन्ध विलाई।
ललना तनु प्रेम पुरीष भरा जिस घ्राण विषे तिसने नहिं पाई॥

:: २ ::

जय राम रमापति पाय नन्दी जल शीतल शीकर के केश भिगोई।
तब पाद सरोजनि सिंचित हैं निज बोध लिये मुनि नायक कोई॥
पुनि योग कलाकर सीखन को सुर सिद्ध यती तब सेवक होई।
निज योग बड़े कर जानत है जिनके अब गोचर हैं फणि सोई॥
सहसात समुद्र महीधर के, यह लोक चतुर्दश का गण जोई।
गुरु मानव दानव और बली जिसके शिर में सम सर्षप होई॥
रजताचल तुल्य तनू जिसका दश सौ शिर हो तुम पन्नग सोई।
यह गौर मनोहर श्याह ननू मम चित्त वसे प्रिय और न कोई॥

(श्रीमद् गोपाल विलास से)

३१. देव शयनी (सोवनी) एकादशी

देव-सोवनी एकादशी आषाढसुदी एकादशीको आती है इस दिन भगवान चार-महिनेके लिये शयन करते हैं। इसी कारण से इसे देव-सोवनी या देवशयनी एकादशी कहते हैं।

इसदिन भगवान विष्णु की प्रतिमाको उच्च-आसन पर बैठावे। मूर्तिके हाथोंमें शङ्ख,चक्र,गदा,पद्म सुशोभित करे। उन्हें पीत या पीले दुपट्टे से सजावें। फिर उन्हें पंचामृत से स्नान करावें और पीत दुपट्टा बदलकर पहिनावे। तत्पश्चात्

उनकी धूप, दीप फूल आदिसे पूजाकरें और आरती उतारें। इसके बाद निम्न मन्त्र द्वारा स्तुति करें :—

सुप्ते त्वयि जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे त्वयि बुद्धं च जगत्सर्वं चराचरम्॥

अर्थात् "हे जगन्नाथजी! आपके सो जाने पर सारा संसार सो जाता है और आपके जाग्रत होने पर यह सम्पूर्ण संसार और चराचर भी जाग जाते हैं।"

इस प्रकार प्रार्थना करके भगवान विष्णुकी पूजा करनी चाहिये। इसके बाद वेदपाठी ब्राह्मणको भोजन करावे और स्वयं फलाहार करे। रात्रि को मन्दिर में ही सोवे और सोते समय भजन गावे और भगवानको भी शयन करावे, इस तरह जो इस एकादशीका व्रत रखते हैं वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

भगवान को सुलाने का गीत

नैनन में नींद भरि आई क्षीर बिहारी जी के।
कौन बिहारी जी को दूध पिलावे, कौन खवावे मलाई॥
देवनि विहारीजीको दूध पिलावें कमलाजी खवावें मलाई। नैनन
कौन बिहारीजी की सेज बिछावे, कौन करै गुणगाई॥
देव बिहारी जी के सेज बिछावें, ब्रह्माजी करें गुणगाई॥
नैनन में नींद भरि आई क्षीर बिहारी जी के॥
नैनन में नींद भरि आई जगत बिहारी जी के॥

३२. गुरु पूर्णिमा

गुरु-पूर्णिमा आसाढ़-मास के सुदीकी पूर्णमासीको मनाई जाती है। इस दिन अपने गुरुजी महाराजकी या कुल गुरुजी को पूजा करनी चाहिये। इसदिन सबसे पहले सूर्योदय से पूर्व शौच आदिसे निवृत्त होकर स्नान करे, फिर गुरुजी को स्नान

करावे। उन्हें अच्छे वस्त्रों से सजावे, उनकी आरती उतारे।

अगर कोई शिष्य विद्वान हैं तथा उसने कोई ग्रन्थ लिखा है और उसे गुरुजी को समर्पित करना चाहता है तो गुरु पूर्णिमा के दिन उन्हें समर्पण कर देवे। कोई विरक्ती साधू हो तो फल लाकर पूजा करे और अगर फल नहीं भी मिले तो पुष्पों से ही पूजा करे और निम्न मंत्र बोलता जावे-

गुरुर्ब्रह्मा गुर्र्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात् "हे गुरुजी! आप ही ब्रह्मा हो, आपही विष्णु हो, आपही महेश्वर हो, आपही साक्षात् परब्रह्म हो, आपको नमस्कार है।" इसके बाद अगर कुछ भी न मिले तो श्रद्धासे साष्टांग दण्डवत् करे और गुरुजीकी आरती उतारे। गुरुजी की पूजा करनेसे भगवान प्रसन्न होते हैं, भगवानने स्वयं कहा है बिना गुरु के मैं प्राप्त नहीं होता हूँ। भगवान कृष्ण ने गुरु भक्तिके सम्बन्धमें भागवत के एकादश स्कन्ध के १८वें अध्याय के ३९ वें श्लोक में कहा है:--

तावत् परिचरेद् भक्तः श्रद्धावान न सूचकः।
यावत् ब्रह्म विजानीयान्ममेव गुरुमादृत;।।

थर्रात् गुरुकी दृढ़ भक्ति करे, श्रद्धा रखे औरउनमें कोई दोष नहीं देखे,जब तक ब्रह्मका मिलने का उपाय न मिले तब तक गुरु के ही रूपमें मुझे देखे। कबीरदास ने भी कहा है-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियौ बताय।।

अर्थात् कबीरदास जी कहते हैं मेरे सामने गुरु और भगवान दोनों खड़े हैं किसके चरण पहले छुऊँ ? तब कबीर दासजी कहते हैं मुझे गुरुजी के ही प्रथम चरण छूने चाहिए क्योंकि गुरु के ज्ञान से ही मुझे भगवान प्राप्त हुए हैं। जो इसतरह से गुरु-पूर्णिमा को मनाते हैं वे कुशाग्र बुद्धिवाले होते हैं। उनपर गुरुके साथ २ ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं।

गुरु-पूर्णिमा की कहानी

बहुत पहलेकी बात है एक व्यास नामके बहुत बड़े विद्वान ऋषी थे उन्होंने १६ शास्त्र १८ पुराण आदि लिखे। इनकी शिष्य मंडली बहुत बड़ी थी। इनके शिष्य भी बहुत विद्वान थे। उनमें से ५ शिष्य अधिक विद्वान थे। एकबार उन पाँच शिष्योंने सलाह की कि गुरुजी की पूजा की जाया करे। ये बातें सभी शिष्यों को अच्छी लगीं परन्तु सामने प्रश्न यह आया कि किसदिन पूजा की जाय ? इसपर बहुत बाद-विवाद चला, अन्तमें यह निर्णय हुआ कि आषाढ़की पूर्णिमाकोगुरूजी की पूजा की जाय। दिन निश्चय हो जाने पर आषाढ़ की पूर्णिमा आई। इसदिन शिष्य मंडली ने बहुत बड़ा मंडप सजाया। उस मंडप में व्यासजी महाराज को बिठाया। उन पर फूलों की मालायें चढ़ाईं। जो शिष्य विद्वान थे उन्होंने लिखे हुए ग्रन्थ गुरूजी को भेंट किये। जो विरक्त थे, उन्होंने फूल चढ़ाये। इस सबके बाद उन्हौंने घी का दीपक जलाकर अपने गुरूजी की आरती उतारी। उनको साष्टाँग दण्डवत

किया और आशीर्वाद प्राप्त किये। यह कार्य उनका हरसाल चलता रहा। वही परम्परा आज भी चली आरही है और गृहस्थी, विरक्ती, सन्यासी सभी प्राणी अपने गुरू की पूजा गुरु-पूर्णिमा को करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

आरती गुरुजी की

आरती गुरुदेव की कीजै, अपनो जनम सुफल कर लीजै।
कंचन थार कपूर की बाती, जगमग जोति जलै दिन राती॥
भव सहित गुरु भक्ती कीजै॥ आरती॥
काम क्रोध मद लोभ विसारौ, गुरु मूरति हृदय में धारौ।
तन मन धन गुरु अर्पण कीजै॥ आरती॥
भाव के फूल भक्ति की माला, श्रद्धा दीपक ज्योति उजाला॥
श्रीगुरु चरन कमल चित दीजै॥ आरती॥
भक्ती ज्ञान सदा उर आवे, जो जन गरु सरणी में जावे।
गुरु कृपा भव रोग हरी जै॥ आरती॥
चार पदारथ सभी बतावें, गुरु सेवा कर तिनको पावें॥
अति अनुराग वारणे लीजै॥ आरती॥
जो कोई गुरु आरती गावे, विन श्रम सकल मुक्ति जन पावे।
दुन्द्र मुनी गुरु चरण गहीजै॥ आरती॥

गुरुजी का गुण गान

गुरु सम नहिं उपकारी आन।
संसृति सागर पार करत जो देकर आतमज्ञान।
अस्थिर मन संसारी नर को बतलावत हरि ज्ञान॥
विषयासक्तन को विषयों से करहिं दोष बखान।
धर्म रहित को धर्म सुनाकर अघ में देवन जान॥
शोग मोक्ष को देने वाली विद्या करते दान।
काम क्रोध मद लोभ न जिनके चहित नहिं निजमान॥
पर हित नित चित चिन्तन चाहित सब जग का कल्यान।

पर उपकार अल्प भी लखकर जानत जोऊ महान ।।
मधुर मनोरथ ऋत हित मित प्रिय बोलत वचन प्रमान ।
सज्जन के हित जिनको जग में नहिं प्रिय अपने प्रान ।।
बिन स्वारथ के प्रीति करत हैं निज आतम पहचान ।
अस गुरु करुण से अधिकारी पावत पद निर्वान ।।
(श्रीमद् गोपाल विलास से)

३३. कोकिला व्रत

यह त्योहार जब आषाढ़ दो होते हैं उनके पहले मास की पूर्णिमासे दूसरी पूर्णिमा तक कोकिला व्रत होता है। इससे हररोज नदी में स्नान करके ब्रह्मचर्य का पालन करे तथा जमीन पर सोवे एक समय भोजन करे। जीवों को न सतावे, इसमें नदी के जल से या तालाब के जल से स्नान का अधिक महत्व होता है। इस व्रत से नारीका सौभाग्य अचल रहता है। पति की रक्षा होती है।

कोकिला व्रत की कहानी

एकबार दक्ष प्रजापति ने बहुत बड़ा भारी यज्ञ किया। उस यज्ञ में सभी देवताओं को बुलाया परन्तु अपने दामाद शंकरजी को नहीं बुलाया। शङ्करजी के लिये दक्ष प्रजापतिकी सती नामकी कन्या व्याही हुई थी। जब सती को पता चला तब वह शङ्करजीसे मायके जाने को आग्रह करने लगीं। शङ्कर जीने बहुत समझाया परन्तु सती नहीं मानीं और अपनी माय के चली आई। वहाँ उनका बड़ा भारी अपमान हुआ वह उस अपमानको सह न सकीं और यज्ञ में ही जलकर भस्म होगईं। शिवजी को पता चला तो वे बहुत क्रोधित होकर अपने गणों से बोले जाकर दक्षके यज्ञको तहस-नहस करदो।

गणोंने ऐसाही किया। फिर शंकरजीको दक्ष प्रजापति मनाने आया। वे प्रसन्न होगये और गणों को वापिस बुलालिया परन्तु सतोको दशहजार वर्षतक कोकिलाबनी रहनेका शाप देदिया, वह नदो वनमें घूमती रहीं फिर वह पार्वतीके रूप में जन्मी और आषाढ़ मासके अधिकमासमें व्रतरखकर शिवजीकी पूजा की। शिवजी प्रसन्न होगये और पार्वतीको अपनी अर्धाङ्गिनी बना लिया। इसलिए इस व्रत को कोकिला-व्रत कहते हैं।

श्रावण मास के व्रत और त्यौहार

यह महीना आषाढ़ के बाद आता है। यह वर्षका पाँचवां महीना है। इस महीनेमें वर्षा होती है,चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती है। यह महीना बहुत ही सुहावना मस्त और मनको आनन्द देने वाला होता है।

३४. शिवजी का व्रत

यह व्रत सावनके महीनेमें जितनेभी सोमवार आवें उन सबको करना चाहिये। इसदिन नादिया,गणेशजी, शङ्करजी

पार्वतीजी की पूजा करनी चाहिए। पूजाके सामान में जल, दूध, दही चीनी घी, शहद, मोली (कलाया) वस्त्र जनेऊ, चन्दन, रोली, चावल, फल, वेलपत्र, जायफल, भाँग, आक, धतूरा, कमल गट्ठा, मिष्ठान्न, पान, सुपारी, लोंग, इलायची, मेवा और दक्षिणा रखकर शिवजी के ऊपर चढ़ावें, धूप करके कपूर से

आरती उतारें और रात्रि को जागें। इन दिनों में सावन का महात्म्य सुनें 'सोलह सोमवार व्रत कथा' पुस्तक का पाठ करें और शिवजीके गुणगान करें। इस व्रत से शिवजी उसकी रक्षा करते हैं। स्त्री अगर व्रत रखती हैं तो उसके पति की रक्षा करते हैं। गणेशजी बुद्धिको बढ़ाते हैं। यह व्रत सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

३५. मंगला-गौरी पूजन और व्रत

गौरी-व्रत सावन में जितने भी मंगलवार आते हैं रक्खा जाता है। इसदिन गौरीजी की पूजा करनी चाहिये। यह व्रत मंगलवार को कियाजाता है। इसकारण इसको मंगल गौरी व्रत भी कहते हैं। यह व्रत स्त्रियों के लिये है। पूजा करने से पहले स्नान कर लेवें उसके बाद एक पट्टेपर लाल और सफेद कपड़ा रख लेवें। सफेद कपड़े पर चावलकी ६ और लाल कपड़े पर गेहूँ की १६ छोटी २ ढेरी बना देवें उसी पट्टे पर थोड़े से चावल रखकर गणेशजी को रख देवें तथा पट्टे के एक कोने में गेहूँ रखकर उस पर कलशमें जल रखलेवें।

एक आटे का चौमुखा दीपक जलावें, १६ धूपवत्ती जलावें। फिर पूजा करने के लिये संकल्प लेवें। सबसे पहले गणेशजी की पूजा करें, उन पर पंचामृत, जनेऊ चन्दन रोली, सिन्दूर, सुपाड़ी, लौंग, पान, चावल, फूल, इलायची, परशाद बिल—

फल, मेवा और दक्षिणा चढ़ावें और उनकी आरती उतार लेवें। फिर कलशकी पूजा करें, कलशको जलसे भरलें, उसमें आमकी डाल भी लगावें। एक सरवा (सकोरा) में गेहूँ का आटा रखकर उसपर सुपाड़ी रखें, और जो दक्षिणा रखें उसे आटे में दबा देवें। फिर बेलपत्र चढ़ावें तथा जिस प्रकार गणेशजीकी पूजाकी थी उसी प्रकार कलशकी भी पूजा करें। कलशपर सिंदूर, बिलपत्र नहीं चढ़ावें। इसके बाद जो चावल की ९ ढेरियां बनाईं थीं उनकी कलशकी तरह ही पूजा करे उनको 'नौ (नव) ग्रह' कहते हैं। इसके बाद १६ जगह जो गेहूँ रखे थे उनकी पूजा करें। उनको 'शोडष मातृका' कहते हैं। इन पर खाली जनेऊ नहीं चढ़ावे। हल्दी, मेंहदी तथा सिंदूर चढ़ावें। इन सबकी पूजा कलश और गणेशजी के अनुसार होती है। इसके बाद कलाया लेकर पंडितजी के बांध देवें फिर पंडितजी से अपने हाथ में भी बंधवालें। तदनन्तर मंगला-गौरीका पूजन करें। मंगलागौर के पूजन के लियेएक थाली में चकला रखलें उसपर गंगाजी की मिट्टी से गौरीकी मूर्ति काढ़ले या मूर्ति बनालें। आटे की एक लोड़ी बनाकर रखलें पहले मंगला गौरी की मूर्तिको जल, दूध, दही, घी, चीनी शहद आदिका पंचामृत बनाकर स्नान करावें। स्नान कराकर कपड़े पहिनावेंऔर नथ पहिनाकर रोली, चंदन, सिन्दूर, हल्दी, चावल, मेंहदी काजल लगाकर १६ तरह के फूल चढ़ावें १६ माला, १६ तरह के पत्ते चढ़ावे, १६ आटेके लड्डू, १६ फल, पाँच तरहकी मेवा, १६ वार चढ़ावें, १६ वार ७ तरह

का अनाज, १६ जीरा, १६ धनियां, १६ पान, १६ सुपाड़ी १६ लौंग, १६ इलायची, १ सुहागकी डिब्बी चढ़ावें। सुहाग की डिब्बीमें,तेल,रोली, मेंहदी,काजल, हिंगुल, सिंदूर, कंघा, शीशा, १६ चूड़ी, एक रुपया और बैंदी दो। उनपर दक्षिणा चढ़ावे फिर कहानी सुने, चौमुखा दीपक बनाकर उसमें १६ तारकी चार बत्ती बनावे और कपूर से आरती उतारे फिर परिक्रमा करे। १६ लड्डुओं का वायना सासुजी के पाँय लग-कर देवे। इसके बाद भोजन कर लेवे। इसमें एकही नाजकी रोटी खानी चाहिये। नमक नहीं खावे। दूसरे दिन मंगला-गौरीको तालाब या कूआके पास विसर्जन करके भोजन करे।

मंगला-गौरी का उजमन

मंगलागौरी का उजमन १६ या १० मंगलवारों को व्रत रखकर करना चाहिये। जिसदिन उजमन करना हो उसदिन कुछ नहीं खावे, हाथों पर मेंहदी लगावे। सायं को सिर से नहाकर दीपक जलने से पहिये गौरोकी पूजाकरे। पूजाचार ब्राह्मणों से करावे। एक चौकी लेवे और उसके चारों पायों पर एक-एक केले का पत्ता बाँध देवे, फिर चारों को ऊपर एक जगह बाँध देवे जिससे मंडप वनजाय उसपर एकओढ़नी चढ़ावे। मंडप में एक कलश रखलेवे। एक गंगोटी (गंगाजी की मिट्टी)की मंगलागौरी बनाकर पंचामृतसे स्नान कराकर मंडपमें बिठावे। मंगलागौरी को नथ पहिनावे,काजल लगावे और उनका सभी सुहाग कर देवे। जिस तरह और मंगलवार की पूजा बताई है। उसी प्रकार पूजा कर लेवें। फिरहवन

करावे और कथा सुनकर आरती उतारे। पीछे जो मंगलवार की तरह १६ लड्डू रखे होवें उन्हें सासुजी के पांयन लगकर और साथ ही एक रुपया विदाका रखकर दे देवे, पूजाकरके पंडितजी को जिमाकर धोती, लोटा और माला देवे।

दूसरे दिन मंगला गौरी की पूजा करके आरती उतारे। ब्राह्मण के १६ लड़का तथा १६ लड़कियों को भोजन करावे, पंडितजी को एक रुपया दक्षिणा का देवे। १६ ब्राह्मणियोंको १६ सुहाग पिटारी भोजन कराकर देवे। एक सुहागपिटारी अपनी सासुजी को दे देवे। फिर १६ ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन कर लेवे। जो मंगला गौरी का प्रसाद हो उसे बाँट देवे। और मंगला गौरी की प्रतिमा को कूआँ के पास रख देवे।

३६. नाग पंचमी

नाग पंचमी श्रावण लगते ही पंचमी को आती है। इस दिनसे एकदिन पहले चौथको बाजरा भिगो देवे और अपने खानेका भोजन बना लेवे, फिर दूसरे दिन ठंडा भोजन खावे। दूसरेदिन पंचमीको उठकर सबसे पहिले घरको गोबर और लाल मिट्टी से लीप लेवे। एक जेवरी (रस्सी) में सातगाँठ लगाकर सर्प बनावे उसे एकपट्टे पर रखकर उसकी पूजाकरे कच्चा दूध, घी, चीनी मिलाकर चढ़ावेथोड़ासा कच्चादूधमीठा डालकर सर्पके बिल में डालदेवे और उस छेदपर से थोड़ी-सी मिट्टी ले आवे उस मिट्टीमें थोड़ासादूध डालकरचक्कीचूल्हे आदि के ऊपर सर्प केसे निशान बनावे। उनको कच्चा दूध,

भीगे हुए बाजरे और घी से पूजे, और दक्षिणा चढ़ावे फिर अपनी सास, जेठानी, दादस आदिके पाँय छुऐ और उन्हें मोंठ बाजरे का बायना देवे। गाँव में जितनी सहेली होवें उन सबको बुलाकर नाग-पंचमीकी कहानी सुने। कहानी सुनने के बाद बिलोंसे लाई हुई मिट्टी में (गेहूं के दाने) बो देवे।

नाग-पंचमी की कहानी

बहुत पुरानी बात है कि एक साहूकार था। उसके सात बेटे थे। सातोंके विवाह होगये थे। जिनमें सबसे छोटे बेटेको बहू बहुत सुशील और अच्छे चरित्रवाली थी। एकदिन सबसे बड़ी बहू सभी छोटी बहुओं से बोली-चलो आज पीली मिट्टी खोदलावें क्योंकि हमें अपना घर लीपना है। इतनी सुनकर सातों बहू छबरा और खुरपी लेकर चलदीं और गड्डे पर पहुँच गई जहाँसे मिट्टी खोदनी थी। वहाँ पर वे मिट्टी खोदने लगीं। मिट्टी खोदते-खोदते एक सर्प निकल आया, उसे देखकर बड़ी बहू उसे मारने लगी, तभी छोटी बहू कहने लगी, इसे क्यों मार रही हो? इस विचारे ने क्या बिगाड़ा है। इसलिये तुम इसे मत मारो। छोटी बहू की बात सुन-कर सभी रुक गईं और सर्प अकेला बैठगया। छोटी बहू-सर्प से बोली मैं जब तक लौटकर न आऊँ तब तक यहीं बैठे रहना। इतना कहकर सातों दौरानी जिठानी मिट्टी लेकर वहाँ से चलदीं। वहाँ जाकर सर्प से कही बात भूल गईं और सभी बहुयें अपने काम में लग गईं।

दूसरे दिन छोटी बहू को याद आई और सभी जिठानियों

को साथ लेकर गड्ढे पर गई तो उसने देखा वह सर्प व
पर बैठा है। छोटी बहू दूर से ही बोली-भैया ! राम राम
सर्प कहने लगा तूने मुझसे भैया कहदी है, नहीं तो मैं तुम
खा जाता। छोटी बहू कहने लगी-तुम मेरे भाई जो हो,तुम मु
खा कैसे जाते। सर्प कहने लगा-अच्छा आज से मैं तेरा ध
का भाई और तू मेरी धर्मकी बहिन है। बता तुझे क्या माँग
है? तब कहने लगी मेरी जिठानी की पायजेव खो गई है
उन्हें लादो, सर्प ने उनकी पायजेव लाकर देदी। जिठान
उन्हें पहनकर खुशी २ घर चली आई और छोटी बहू
कहने लगी यह तो कोई देवता है।

कुछ दिन बाद सर्प भाई बनकर उसके घर आया औ
कहने लगा मेरी बहिनको भेजदो। सर्पके साथ छोटी बहू भेज
दी और वह अपने घर ले आया और अच्छी तरहसे खाति
करने लगा। एकदिन सर्प की माँ कहने लगी-मैं तो घूमने जा
रही हूँ,तू अपने भाई को दूध ठंडा करके पिला देना। उसने
उसे गरम दूध पिला दिया जिससे उसकी पूँछ और मुँहजल
गये। जब उसकी माँ आई तो गुस्सा हुई पर चुप रही। एक
दिन सर्प कहने लगा-बहिनको सास के यहाँ भेज दो, मां ने
भी उसकी बात मान ली उसे खूब धन दिया। भाई बोला
हमारे यहाँ सात कोठे हैं तू जिसको चाहे खोल ले और धन
लेजा,परन्तु सातवें को मत खोलना क्योंकि उसमें तेरे लिये
खतरा है। बहन बोली मैं तो उसीको खोलूँगी। जब बहननहीं
मानी तो उसे ताली देदी। ज़ब उसने ताला खोला तो एक

बहुत बड़ा अजगरसाँप फुँसकार कर बाहर निकला,तभी वह बोली दादा राम राम । अजगर कहने लगा-तैंने मुझसे दादा कहा नहीं तो मैं तुझे खाजाता । तब छोटीबहू बोली तुममेरे दादा जो हो मुझे खा कैसेसकतेथे,तब अजगर बोला आतू मेरी धर्म की वेटी है और मैं तेरा धर्मका बाप हूं बता तुझे क्या चाहिए?वह कहने लगी मुझे हार चाहिये । अजगरने बहुत अच्छा हीरों का हार दिया औरवह अपने सासके यहां चली आई,साथमें उसका भाई आया,तब उसकी जिठानी बोली तेरे भैया,दादा नाग देवता हैं तो सोने, चांदी की बोरी भरवाके मँगाले । यह बात सर्पने सुनली इसको सुनकर वह घर आया और माँ से कहने लगा-माँ ! बहिनने इस तरहसे कहा है । मैं तो वहाँ सोने चाँदी की वोरीभरकर पहुँचाआऊँ उसने पाँच वोरी सोने की और पाँच वोरी चाँदीकी भरकर बहिनके यहाँ भेजदीं । जब वह दुबारा गया तब फिर जिठानी कहने लगी-अगर तुझे झाड़ना है तो अपने भाई से सोने चांदी की झाड़ू मँगाकर उससे झाड़ । यह सुनकर सर्प अपने घर पहुँचा और माँ से कहने लगा-माँ ! वहिनने सोने चाँदी की झाडू का ताहिना मारा है। मैं तो सोनेचाँदीकी झाडू वनवाकर दूँगा । मांने कहा जैसी तेरी इच्छा होकर, उसने सोनेचाँदी की झाड़ू वनवाकर बहिन के घर पहुँचा दी ।

उसी शहरमें एक राजा था । उसकी रानीने उस छोटी बहू के हार के बारे में सुना तो वह राजा से बोली-मैं तो साहूकार की छोटी बहूके हारको पहनूँगी । राजा ने छोटी

बहू को बुलाया और कहा, यह हार हमारी रानी को देदो। छोटी बहूने उतारकर देदिया और भाई को याद करके कहा-रानी के हार पहिनते ही वह सर्प बन जाय।

जब रानी ने हार पहिना तो सर्प बनकर उसे काटने लगा। रानी रोने लगी और कहने लगी—साहूकार की बहू मेरे ऊपर कुछ जादू टौना करगई। राजा ने उसको बुलाया और कहा तू जादू टौना कर गई। इस पर वह कहने लगी- मैंने कोई जादू टौना नहीं किया। यह हार सर्पने मुझे दिया है इसलिये इसे मैं ही पहिन सकती हूँ, दूसरे को सर्प बनकर वह काट लेता है। राजाने यह सुनकर हार लौटा दिया और बहुतसा धन दिया। यह देखकर छोटी बहू की जिठानी जल गई तो उसके पतिको सिखा दिया। रात को वह सोने गया तो उसने अपनी बहू को मारकर पूछा—तू यह धन कहां से लाती है ? तब उसनेसारा वृत्तान्त कह सुनाया। यह सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ तभी से नागपंचमीकीपूजा होने लगी। हे नागदेवता ! जैसे तूने उस साहूकारनी को अच्छा दिखाया, खूब धन दिया, वैसा सबको करना, हमको भी करना।

३७. पवित्रा (कामिका) एकादशी

पवित्रा एकादशी सावनवदी एकादशी को मनाई जाती है इसदिन भगवान श्रीधर की पूजा करनी चाहिये सूर्योदय से पूर्व सबसे पहले स्वयं स्नान करे स्नान के बाद भगवान की मूर्तिको पंचामृत से स्नानकरावे और भोग लगावे, भोग लगाकर आचमन करावे। आचमन के बाद उनकी फूल, दीप

धूप, चंदन आदिसे आरती उतारे, उसके बाद भगवान के भोग से ब्राह्मणोंको भोजनकरावे और उनको दक्षिणा देकर आशीर्वाद लेकर विदा करे। उसके बाद आप फलाहारकर लेवे। जो इस प्रकार कामिका एकादशी का व्रत करते हैं वे संसार के सभी सुखोंको भोगकर बिष्णु लोकको प्राप्त होते हैं। इस व्रतके प्रभाव से ब्राह्मण की हत्याका पाप दूर हो जाता है।

कामिका (एकादशी) की कहानी

एक गाँवमें एक बहुत बलवान और धनी क्षत्री रहता था। उसकी एकदिन एक ब्राह्मण से लड़ाई हो गई। उस लड़ाईमें उस ब्राह्मणकी हत्या होगई। उसने उस ब्राह्मण की तेरहवीं करनी चाही परन्तु जब तक तेरहवींमें ब्राह्मण नहीं आते तबतक सूतक नहीं जाते। ब्राह्मणों ने उस तेरहवीं में आने से मनाकर दिया, उन्होंने कहा तुमने ब्राह्मण की हत्या की है तुम पर ब्रह्महत्या का पाप है। इस पापको छुड़ाओ तब हम तुम्हारे यहाँ भोजन करेंगे। उसने कहा-महाराज ! यह पाप कैसे दूर होगा सो इसका उपाय बताओ। तब वह बोले-सावनके वदी पक्ष में पवित्रा एकादशी आती है उसदिन व्रत रखकर भगवान श्रीधर की पूजा करो और ब्राह्मणोंको भोजन कराओ तभी तुम्हारा पाप दूर होगा।

उसने ऐसाही किया। रात्रिको जब वह भगवानकी मूर्ति के पास लेटा हुआ था तब उसे स्वप्न हुआ, स्वप्न में भगवानने, उससे कहा कि तेरा पाप दूर होगया है। अब तू ब्राह्मणकी तेरहवीं करदे। तेरे घरसे सूतक छूट जायेंगे। उसने

ऐसाही किया इससे उस क्षत्रीका ब्रह्म हत्याका पाप छूटगया अन्त समय वह विष्णु के लोक को प्राप्त हुआ।

३८. हरियाली तीजें या स्वर्ण गौरी व्रत

हरियाली तीजें सावन सुदी पक्ष की तीज को मनाई जाती हैं। इसदिन भवानी की पूजा अच्छी तरहसे करें जैसे एकादशी के व्रत में की जाती है। इस दिन ब्रत रखने वाली स्त्री धन-धान्य से पूर्ण होकर देवलोक को प्राप्त होती है।

३९. पुत्रदा एकादशी

पुत्रदा एकादशी सावनसुदी एकादशीको मनाई जाती है। इसदिन भगवान जनार्दनकी श्रद्धापूर्वक पूजाकरनी चाहिये। और व्रत रखना चाहिये। भगवान जनार्दनको पहिले सुन्दर ऊँचे आसनपर बिठाबे, फिर उनकेचरण धोबे, आचमन कराबे, भोग लगाबे, इसके बाद उन्हें स्नान कराबे, स्नान कराकर इन्हें अच्छे वस्त्रोंसे सुशोभित करे, फिर धूप, दीप, फूल, चंदन आदिसे आरती उतारे और पूजा करे। इससे बाद वेद-पाठी ब्राह्मणोंको भोजन कराबे और श्रद्धानुसार दानदेकर आशीर्वाद प्राप्तकरे। दिनभर कीर्तन करे और रात्रिको भगवानकी मूर्तिके समीपही शयन करे। दिनमें एक समय फलाहारकरे।

इसप्रकार नियम पूर्वकब्रत रखने वालेकी सभीमनोकामनायें पूर्ण होती हैं। निःसन्तान को सन्तान प्राप्त होती है। पुत्रकी इच्छा वाले को पुत्र की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी की कहानी (१)

बहुत समय पहिलेकी बात है कि कंचनपुर नामक नगर

में एक सूरसेन नामक राजा राज्यकरते थे। उनके राज्यमें प्रजा बहुत सुखी थी। राजाके यहां किसीभी बातकी कमी नहीं थी। वह बड़े धर्मात्मा, दानी और प्रण पालक थे। राज्यकी ओर से उनकी आत्मा सन्तुष्ट थी, परन्तु मनमें वे बहुत दुःखी रहते थे। दुःखी रहनेका कारण उनके कोई संतान नहीं थी। हर समय यही सोचते रहते थे कि मेरे मरनेके बाद राज्यका कौन उत्तराधिकारी होगा। उनके १०१ रानियां थीं। वे सभीइसीकारण दुःखी थीं। राजाकी इसीसोच विचारमें दिनप्रतिदिन अवस्था बिगड़तीगई। यहाँतककि एक समय ऐसा आयाकि उनको हर समय बुखार रहने लगा और अन्त में मियादी बुखार पड़ गया।

जब राजाकी ऐसी हालत देखी तो मंत्री भी दुःखी होने लगे उन्होंने राजा को बहुत समझाया परन्तु सब व्यर्थ गया अपना सब प्रयत्न व्यर्थ देखकर मन्त्रीके पासगये। उन्होंने पुराने मंत्री को राजाका पूरा२ हाल कह सुनाया। तब पुराने मन्त्री बोले-राजासे कहो कि वह अपने राज्यके सभी विद्वान और ज्योतिषियों को बुलावे और उनसे संतान प्राप्तिके बारे में पूछताछ करे। यह सुनकर मन्त्री राजाके पास आये और पुरानेमन्त्री की सलाह कह सुनाई। यह सुनकर राजाने अपने राज्य में खबर फैलादी कि जितने भी राज्यमें विद्वानपंडित और ज्योतिषी हैं वे सब राजदरबारमें हाजिर होवें। यहबात सुनकर सभी विद्वान राज दरबारमें हाजिर हुए। तब राजाने कहा मैंने आपको जो आनेका कष्ट दिया है उसका कारण है कि मेरे कोई संतान नहीं है। अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे यह

बतायें कि मेरे संतान होगी भी या नहीं। तब विद्वानों ने अपने २ शास्त्रों में देखा परंतु संतान का कोई योग दिखाई नहीं दिया। तब विद्वानोंने निराश होकर कहा-आपके भाग्य में कोई संतान नहीं है। इसकोसुनकर राजा बहुत दुखीहुआ। राजाको दु:खी देखकर विद्वानों में सबसे वृद्ध विद्वान बोले-हे राजन्! सामनमासके सुदी पक्षमें जो पुत्रदा एकादशी आती है उसको आप व्रत रखें,भगवानकी पूजाकरें,वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन करावें तथा भिक्षुकोंको दान देवें रातको भगवान की मूर्तिके समीपही सोवें। हो सकता है कि आपके भगवान की कृपासे पुत्रका जन्म हो। राजाने वृद्ध विद्वानकी ओर आये हुये समस्त विद्वानोंको हाथ जोड़कर प्रणाम किया और पुत्रदा एकादशी के दिन व्रत रखने का प्रण किया। इसके बाद उन विद्वानों को खूब दान दक्षिणा देकर विदा किया और आप महलमें चलागया। महल में पहुँचतेही रानियाँ पूछने लगीं। तब राजाने रानियों से कहा-विद्वानों ने मुझे सावन-मासकी पुत्रदा एकादशी के दिन ब्रत रखने को कहा है और बताया है कि भगवानकी कृपासे पुत्र होजायगा। राजाकी बात सुनकर सभी रानियाँ बोलीं-हम भी एकादशी के दिन व्रत रखेंगी। इस बात को सुनकर राजा बहुत हर्षित हुआ।

जब सावन-मासकी पुत्रदाएकादशी आयी तब राजानेरानियों सहित व्रतधारणकिया और भगवानका भलीप्रकार पूजनकिया दिनभर राजा और रानियोंने हरीकीर्तन किया। ब्राह्मणों को भोजनकराया और उन्हेंअच्छी तरहसे दक्षिणादेकर विदाकिया

जब रात हुई तब राजा अपनी रानियों सहित जमीन पर ही अपनी इन्द्रियों को वशमेंकरके भगवानकी मूर्तिकेसमीपहीसोया रातको भगवानने राजाको स्वप्नदिया और कहा-हेराजन्! मैं तुमपर प्रसन्न हूं। तुम्हारी प्रत्येक रानीसे एक २ पुत्र होगा अर्थात् १०१पुत्रहोंगे जो सुन्दर,विद्वान और चरित्रवान होंगे। राजाकी जबआंख खुली तो उसने अपनी रानियोंको जगाया और स्वप्न का सारा हाल सुनाया। स्वप्नकी बातको सुनकर रानियाँ बहुत प्रसन्न हुईं। दूसरे दिन सुबह होते ही राजाने बहुत-सा दान दिया और भिखारियोंको भरपेट भोजनकराया।

कुछ समय बाद राजाकी प्रत्येक रानीके गर्भसे १-१ पुत्र उत्पन्न हुआ। जिनका रूपचंद्रमाके समान उज्ज्वलथा। राजा ने पुत्र उत्पन्न होनेकी खुशीमें खूब हीरे,जवाहिरातों का दान दिया। ब्राह्मणों एवं विद्वानोंको सुन्दर २ भोजन कराये और दानदेकर आशीर्वाद प्राप्तकिया। इसके अलावा उसने राज्य में घोषणा करादी कि हर एकादशी को सारी जनता व्रत रखे। विद्वानोंका आदर करे क्योंकि मेरे १०१ पुत्र जो आज आँगनमें खेल रहे हैं। यह एकादशी के व्रत का ही फल है।

पुत्रों के पैदा होजाने के वाद राजा के सब दुःख दूर हो गये। राजा रानी सुख पूर्वक राज्य करने लगे।

पुत्रदा एकादशी की कहानी (२)

बहुत पुराने समय की वात है कि माहिष्मती नगर में महीजित नामके राजा राज्य करते थे। राजा बड़े धर्मात्मा दानी और न्याय प्रियथे परन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी।

राजा इसीकारण दुखी रहते थे। इसदुखसे दुखीहोकर राजा ने अपने राज्यके ऋषियोंको बुलाया और सन्तानप्राप्त करने का उपाय पूछा। तब लोमशऋषिने बतायाकि तुमने पिछली साल सावनकी पुत्रदा एकादशीको एकगायको अपने तालाब से पानी पीने से हटा दियाथा। अतः उसीके श्रापसे आपके कोई सन्तान नहीं हुई है। इस श्राप से बचने के लिये उसी पुत्रदाएकादशीको तुम नियमपूर्वक ब्रत रखना और जागरण करना तो तुम्हारा पाप दूर हो जायगा और तुम्हारे पुत्र उत्पन्नहोगा। ऋषिजीकी बात सुनकर राजाने रानी सहित एकादशी को ब्रत रखा। ब्रतके प्रभाव से नौ महीने पश्चात ही रानी ने एक पुत्र रत्नको जन्मदिया। पुत्र पाकर राजा रानी सुख पूर्वक रहने लगे। जब प्रजा को इस बात का पता लगा तो वह भी इसे रखने लगी। इस प्रकार समस्त प्रजा आनन्द पूर्वक रहने लगी।

स्तुति संतान प्राप्ति

हे दया सागर ! दयाकर दास को सन्तान दो।
दीन बन्धो ! दीन की इस प्रार्थना पर ध्यान दो॥ टेर॥
पुत्र बिन यह व्यर्थ जीवन भार सा लगता हरे।
दीनजन के कल्पतरु प्रभु ? पुत्र भिक्षा दान दो॥
गेहनि घर में बिलखती रातदिन आत्मज बिना।
गोद इसकी शीघ्र भरकर पुत्र भिक्षा दान दो॥
पाप जन्या बिघ्न बाधा आप सब हरलो हरे।
मेरे अनेकों दुष्कृतों की ओर मत कुछ ध्यान दो॥
है नहीं अवलम्ब मेरे बस कृपा तेरी बिना।
रोते हुए के आंसुओं को पोंछकर सन्तान दो॥

दुःख सागर में पड़ा हूँ आज प्रभु ! नाविक बनो।
अवलम्ब मम सन्तान रूपी हे प्रभो ! जलदान दो ।।
पापी न मुझसा अन्य होगा पापहर तुमसा नहीं।
आप अपने विरुद्ध पर दीन बन्धो ! ध्यान दो ।।
सन्तान भिक्षा मांगता कर जोड़ विनयावनत हरे।
'धरणी' भिखारी को प्रभो अब पौत्र भिक्षा दान दो ।।

४०. रक्षा बन्धन (राखी पूर्णिमा)

यह त्यौहार सावन मासकी पूर्णिमा को मनाया जाताहै। यह भाई-बहन का बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है। इसदिन

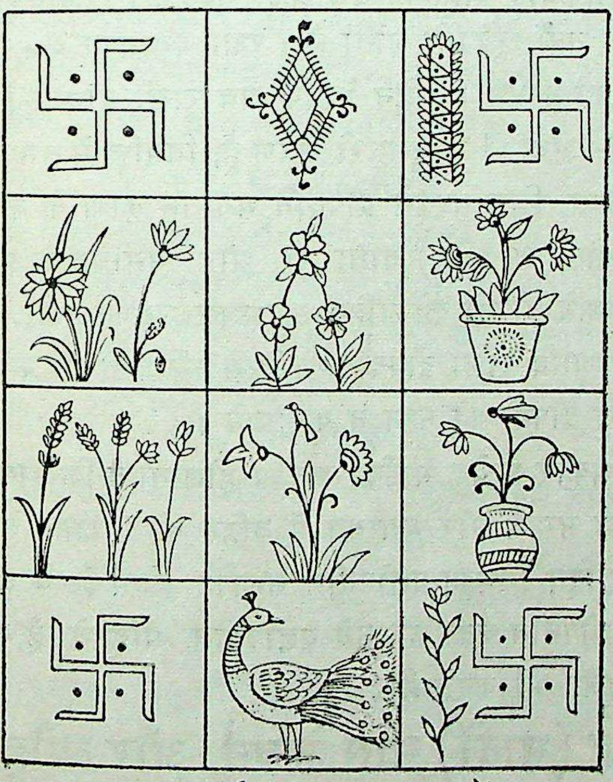

सनूना (राखी) इस प्रकार बनावें।

नागपंचमीके दिन वोये हुए घूगों(गेहूँके छोटे-छोटे पौधों) या सोना की पूजा करनी चाहिये। पहिले घर को गोवर और पीली मिट्टी से लेप लेवे। आंगनों में चौक पूरे और वहां पर चूने और गेरू से सोना (घूगों)रखले। जिससमय भद्रा नहीं हों उनको सिवई लड्डू और चावलका भोग लगावे। रोली, कलाये से पूजन करे, साथही जलका अर्कदेवे। फिर वहिन अपने भाई के रक्षा का वन्धन (राखी) वांधे व टीका करे। भाई,राखीकेवाद वहिनको यथाश्रद्धा रुपये दे। राखीका पैसों से वदला नहीं चुकाया जाता है। रक्षा वन्धनका अर्थ होता है रक्षा का वन्धन। वहिन भाईके जव राखी वांधती है तो कहती है–'भैया'! मैं तुम्हारी शरण हूँ, विपत्ति में तुम मेरी रक्षा करना, जिस तरहसे द्रौपदीने भगवान कृष्ण के कच्चा धागा (धोती की चीर) वांधा था और मुसीवत के समय उन्हीं कृष्णने द्रोपदी को वहिन समझकर उसकी रक्षा की। दुःशासन आदि राजा द्रौपदीके शरीरसे चीर खींचते २ हार गये किन्तु द्रौपदी को नग्न न कर पाये।

इसप्रकार प्रत्येक भाईका कर्तव्य होजाता है कि राखीके महत्व को समझे और मुसीवत में वहिन की रक्षा करे।

इस दिन जिनका यज्ञोपवीत संस्कार होता है, वे अपने पुराने यज्ञोपवीत वदलकर नये यज्ञोपवीत पहिनते हैं और उनकी पूजा भी करते हैं।

भाद्रपद (भादों) मास के व्रत और त्यौहार

यहमहीना सावन महीनेके वाद शुरू होताहै। यहसाल

का छठा-महीना होता है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। वर्षा समाप्त होती जाती है, साथ ही कुछ ठंड पड़ने लग जाती है। इसलिये कहा भी जाता है—
"बीतगई जन्माष्टमी पाड़न लागी ठंड, भजो रधे गोविन्द"

४१. बूढ़ी तीज

यह भादोंवदी तीजको मनाई जातीहैं। इसदिन व्रत रखकर गायोंका पूजनकरे तथा ७ गायोंके लिये ७ आंटेकी लोई बनावे और उनको गुड़,घी आदि सहित गायोंको खिलादेवे। फिर स्वयं भोजन करलेवे।इसदिन बहुओंको सिधारा दियाजाताहै। बहुऐं चीनी और रुपयाका वायना सासुजीको पायँ लगकर देती हैं।

४२. कजरी तीज

यह तीज भादोंवदी तीज को मनाई जाती हैं,खासतौरसे ये तीज बनारस के आस-पास मनाई जाती हैं, नावमें बैठकर कजरी नामके गीत गाये जाते हैं। कजरी गीत गाने से सुनने वालों का मन मस्त हो जाता है।

४३. गूगा पंचमी

यह त्यौहार भादों लगते ही पंचमीकों मनाया जाता है। इस दिन नागों की पूजा करनी चाहिये।

सबसे पहिले एक कटोरी में दूध लेकर सर्पोंको पिलाना चाहिये अर्थात् सर्पोंके बिलों में डाल देना चाहिये। फिर घरमें आकर दीवालको गेरू से पोत लेवे और थोड़े से दूधमें कोयला पीसकर चौकोर घर जैसा बनाकर उसमें पाँच सर्प बनावे और उनको जल, कच्चा दूध, रोली, चावल, बाजरा, आटा,

घी और चीनी मिलाकर चढ़ावे साथमें दक्षिणाभी चढ़ावे फिर पीछे दी हुई नाग-पंचमीकी कहानीसुने। कहानी सुननेके बाद भीगे हुए मोंठ बाजरेका वायना अपनी सासुके पाँयलगकरदेवे।

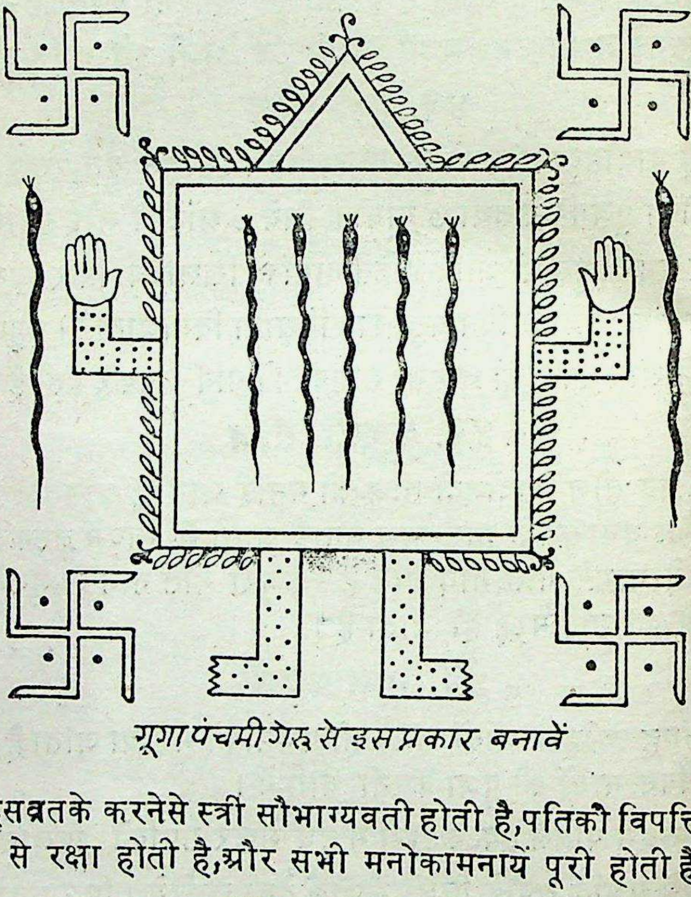

गूगा पंचमी गेरु से इस प्रकार बनावें

इसव्रतके करनेसे स्त्री सौभाग्यवती होती है, पतिकी विपत्तियों से रक्षा होती है, और सभी मनोकामनायें पूरी होती हैं।

४४ चाना-छठ

यह त्यौहार भादों लगते ही छठ को मनाया जाता है। यह व्रत केवल कुँवारी लड़कियों के लिये करना चाहिये।

इसदिन व्रत करने वाली लड़कियोंको कुछभी नहीं खाना चाहिये,इसदिन एक पट्टे पर जलका भरा हुआ लोटा रखकर उसपर रोली से एक सतिया(स्वस्तिक)काढ़ लेवे और लोटाके किनारेपर रोलीकी सात बिन्दी लगा लेवे। पासही एकगिलास में गेहूँ रख लेवे। इसी गिलास पर दक्षिणा रखदेवे। फिर हाथमें ७-८ दाना गेहूँके लेकर कहानी सुने। कहानीके बाद जलके लोटे और गेहूंओं को तो उठाकर रखदेवे। इसी जल के लोटे में से चंद्रमाको अर्घ्य देवे, उन गेहूँओं और दक्षिणा को ब्राह्मणी को देदेवे,कहानी सुनते समय एक कलश जल रख लेवे, उससे रसोई तैयार कर लेवे। उस खाने को चन्द्रमा निकलने पर उसे अर्घ्य देकर खा लेवे।

चाना-छठ का उजमन

जिससाल जिस लड़कीका विवाह होवे,उससाल वह लड़की चाना छठका उजमन करे। व्रत और पूजा पहिले की तरह करे तथा कहानी सुने और एक थाली में सात जगह ४-४ पूरी और सीरा रखे। उनपर कुछ मीठा और रुपया रखकर, सासुजीको पाँय लगकर देदेवे। अपने साथ७ कुवाँरी लड़कियों को व्रत करावे। रात्रिको चन्द्रमा को अर्घ्य देकर उन सातों कुवाँरी लड़कियोंके सहित भोजन करलेवे। साथमें एककुआंरे लड़केको भी भोजन करावे। अगर उन सात कुवाँरी लड़कियों में कोई ब्राह्मण की लड़की हो तो उसे दक्षिणा भी दे देवे।

चाना,छठ की कहानी

एक साहूकार था। उसकी एक पत्नी थी। दोनोंमें से

कोई भी अपना काम नही करते थे । वे दोनों अपना काम नौकरों से करवाते थे । उनकी पत्नी बर्तनों को नाकसे सूँघा करती थी कि उनमें कोई चीज लगी तो नहीं रहगई। कुछ दिन बाद उनके एक पुत्र हुआ । उसकी उन्होंने शादी की। शादीके कुछ दिनों बाद साहूकार और साहूकारनी की मृत्यु होगई । मृत्युके बाद साहूकार तो बैल बना और साहूकारनी कुतिया, वे दोनों अपने बेटे के घर पर ही पहुँच गये । बेटा बैलसे खूब काम लेता था। दिन भर खेतमें जोतता और कुँये में से पानी निकलवाता था। कुतिया उसके घर की रखवाली करती थी। जब उनको वहाँ एक साल होगया तो उस लड़के के पिता का श्राद्ध आया। श्राद्धके दिन खूब पकवान बनाये गये। उनमें खीर भी बनाई गई। खीर को ठंडा करने के लिये एक थालीमें फैलाकर रख दिया गया। उसी समय एक चील उड़ती हुई आई जिसके मुँह में मरा हुआ सर्प था । वह सर्प उसके मुँहसे छूट गया और खीर में गिर गया। यह बात बैठी बैठी कुतिया देखरही थी परन्तु उसके लड़के की बहू को पता नहीं था। कुतिया सोचने लगी कि जो कोई इस खीर को खावेगा मर जावेगा। अतः अब क्या करना चाहिये। कुतिया यह सोचही रही थी कि भीतर से लड़केकी बहू उठकर आई कुतियाने उस खीर में मुँह देदिया। जब लड़केकी बहूने देखा कि कुतियाने खीरमें मुँह देदिया है तो वह डंडा लेकर कुतिया के पीछे भागी और उसकी पीठ में एक ऐसा डंडा मारा कि कुतियाकी पीठ की हड्डी टूट गई। जब रात हुई तो कुतिया

बैलके पास आई और बोली आज तो तुम्हारा श्राद्ध था तुम्हें तो खूब भोजन मिला होगा। बैल बोला-मुझे तो आज कुछ भी नहीं मिला है, दिनभर खेतमें ही काम पर लगा रहा हूँ। कुतिया बोली-जो आज श्राद्धको खीर बनाई थी उसमें चील ने सर्प डाल दिया था, उससे कई एक को मरनेसे बचाने के लिये मैंने खीरमें मुँह देदिया था, जिससे बहूने मेरी पीठ पर ऐसा डंडामारा कि मेरी हड्डी टूटगई। इससे बहुत दर्द होरहा है और कुछ खाने को भी नहीं मिला है।

यह सब बात बहू सुन गई। उसने कुतिया बैलकी सब बातें अपने पति से कहीं। तब लड़के ने ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा कि मेरे माता-पिता किस योनि में हैं? तब ज्योतिषी बोला-तुम्हारे यहाँ जो बैल है वही तुम्हारे पिता है और तुम्हारे यहाँ जो कुतियाहै वही तुम्हारी माँहै। लड़का बोला-इनका कैसे उद्धार हो? तब ज्योतिषी बोला-अपनी कुवाँरी लड़की से भादों लगतेहीं जो चाना छठ आती है उसको व्रत रखवाना। तबतुम्हारे माता-पिता दोनोंका उद्धार होजावेगा। उस लड़केने ऐसाही किया। तब उसके माता-पिता दोनों का उद्धार होगया और दिव्य-देह धारणकर स्वर्गको चले गये।

४५. ललिता व्रत

यह व्रत भादों वदो छठ को किया जाता है। इसदिन ललिता सखी की पूजा करनी चाहिये।

इसदिन स्त्रियोंको चाहिये कि वे सुवह ही स्नानकरके सफेद वस्त्र पहिनें। नदीमें से वालु या रेत लाकर एक पिंड (आकृति)

बनावें और उसे काँसेके पात्रमें रखें। इसीप्रकार पाँच पिण्ड बनावें। उन पिण्डोका ही ललिता देवी का ध्यान करके पूजन करें। फिर कमल,कनेर,मालतीगुलाब आदि फूल चढ़ावें। पूजा के बाद उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े होकर प्रार्थना करें-

गंगा द्वारे कुशावर्तें विल्वके नील पर्वते।
स्नात्वा कनखले देवि हरं लब्धवतीं पतिम्॥
ललिते सुभगे देवि सुखसौभाग्यदायिनि।
अनन्तं देहि सौभाग्यं महय तुभ्य नमो नमः॥

अर्थात्—हे देवी! आपने गंगाद्वार, कुशावर्त, बिल्वक, नील पर्वत और कनखल तीर्थमें स्नान करके भगवान शिवको पति रूपमें प्राप्तकिया है। सुख और सौभाग्य देने वाली सुन्दरी ललिता देवी! आपको बार-बार नमस्कार है, आप मुझे अक्षय सौभाग्य दीजिये।

इसमंत्रसे चम्पाके फूलों द्वारा ललितादेवीकीविधि पूर्वक, पूजा करे और भोग लगावे। खीरा, ककड़ी,कुम्हड़ा नारियल, अनार,बिजौरानीबू,तुण्डीर,कारवेल्ल आदि देवीके आगे रखे। साथही, धान, दीप, अगर,धूप, सौहालक, करंजक, गुड़, फूल आदि कानके आभूषण, लड्डू आदि अपनी शक्ति के अनुसार वस्तुयें रखकर भोग लगावे। रातको जागरण करे, सवेरे देवीजी को नदीके किनारे लेजावे। वहाँपर उनकी पूजा करे और जो सामान उनके सामने रखा था उसे ब्राह्मणोंको देदेवे। फिरनदी में स्नान करके घर आकर हवन करे। देवताओं और पितरों का पूजन करके कन्याओं और १५ ब्राह्मणों को भोजन करावे। भोजनके बाद दक्षिणा देकर उन्हें विदा करे।

इस ललिता व्रतके करने वाली स्त्री की समस्त मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। यह व्रत सभी प्रकार के दान व्रत आदिसे ऊपर है। मृत्युके बाद वह स्त्री ललिता देवीकी सखी बनकर शिव-धाम में चिरकाल तक सुख भोगती है और उसका पति शिव के समीप रहकर सुख भोगता है।

४६. केसरीय की जात

भादों लगते ही अष्टमीको केसरीयकी जात लगती है। इस दिन हाथमें दाल का दाना लेकर किसी भी गाछमें जल चढ़ा देवे और नारियल भी चढ़ा देवे। केसरीयजी के नाम कादूध रोली,चावल, फूल, परशाद तथा दक्षिणा आदि भी चढ़ा देवे।

४७. जन्माष्टमी

जन्माष्टमी भादों वदी अष्टमीको मनाई जाती है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्म असुरों के नाश करनेके लिए हुआ था। इस महापर्व के ऊपर श्रीकृष्णजी की पूजा करनी चाहिये। इसदिन सभी स्त्री-पुरुष व्रत रखकर सुबह स्नानकरें विद्वान स्त्री पुरुष नदीके जलमें तिल मिलाकर स्नान करें। दिनमें भगवान कृष्णकी मूर्तिकी पंचामृत (दूध,दही, घी,शहद, चीनी) से स्नान करावे, अच्छे-अच्छे वस्त्र पहिनावे। फिर मूर्ति को एक सुन्दर हिंडोला में विराजित करे। इसके बाद फूल,धूप दीप आदि से आरती उतारे और माखन मिश्रीका भोग लगावे। दिन में उनकी मूर्ति के सामने बैठकर कीर्तन करे और भगवान के नामों का उच्चारण करे। दिनमें यदि भूख लगे तो फलाहार करले। रात्रिको जव १२ बजे,तब खीरा

फोड़कर भगवानका जन्म करावे फिर उस समय हवन करे। हवन में आहुती डालते समय, "ॐ कृष्णाय नमः विष्णवे

नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः, गरुड़ध्वजाय नमः, दामोदराय नमः, हृषीकेशाय नमः, पद्मनाभाय नमः, हरये नमः, प्रभवे नमः, वृन्दावन बिहारिणें नमः," आदि मन्त्रों से आहुती देवें। होम के बाद विद्वान पुरुषोंको भोजन करावे और इसके बाद ब्रत रखनेवाला अन्न रहित प्रसाद पाकरही कृष्णकी मूर्तिके पास ही सोवे। दूसरेदिन सुबह स्नान आदिसे निवृत्त होकर भोजन करे। जन्माष्टमी के दिन उपवास रखने से मनुष्य सात जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है।

इस जन्माष्टमी के दिन जो पुरुष गो-दान में देते हैं।

तथा नियमपूर्वक व्रत रखते हैं वे स्त्री, पुरुष श्रेष्ठ विमान पर बैठकर साक्षात् देवलोक को जाते हैं। इस जन्माष्टमीके बराबर तीनों लोकों में कोई व्रत नहीं है। इसको रखने से करोड़ों एकादशियों के समान फल प्राप्त होता है।

भगवान श्रीकृष्ण की कहानी

द्वापर युग में जब पृथ्वी पर बहुत पाप बढ़गया तब उन पापों से दुःखी हो पृथ्वी गाय का रूप रखकर ब्रह्माजी के पास गई। ब्रह्माजी ने सब देवताओं को बुलाया और पृथ्वी का दुःख सुनाया। यह सुनकर सब देवता बोले-हे भगवन्! विष्णु के पास जाया जाय। तब सब पृथ्वी को साथ लेकर क्षीर-सागर के तटपर पहुँचे जहाँ पर भगवान विष्णु शयन कररहे थे और स्तुति करने लगे। भक्तों की पुकार सुनकर भगवात विष्णु प्रकटहुए और उनका आने का कारण पूछने लगे। तब पृथ्वी बोली-भगवन्! मेरे ऊपर बहुत पापाचार होरहे हैं। उनका निवारण कीजिये। तब भगवान विष्णुबोले-मैं ब्रजमंडलमें वसुदेव नामक जो गोप हैं उसकी भार्या देवकी जो कंस की बहिन है उसके गर्भ से जन्म लूँगा। तुम सभी ब्रज में जाकर यदुकुल में अपने-अपने शरीर धारण करो। यह कहकर भगवान अंतर्धान होगये। कुछ समय बाद वसुदेव देवकी विवाह कर कंस के साथ गोकुल जा रहे थे। तभी आकाशवाणी हुई कि हे "कंस! जिसको तुम अपनी बहिन समझकर विदा कर रहे हो उसीके गर्भ से आठवाँ-पुत्र तेरा काल होगा।" कंसने जब यह सुना तो वह देवकी को मारने

लगा। तब वसुदेव ने कंस से कहा-औरत को मारना ठीक नहीं है। हम तुम्हें अपनी प्रत्येक संतान दे आया करेंगे। कंस उनकी बात मानगया और उनको अपने जेलखानेमें डाल दिया। वसुदेव अपने सभी पुत्रों को देतेगये। जब भादों के वदी पक्ष की अष्टमी आई तब भगवान विष्णुने दर्शन दिये और कहा—तुम मुझे गोकुल नंद के घर पहुँचा दो। वहाँ यशोदा के लड़की हुई है उसको ले आओ।

यह सुनकर वसुदेवजी भगवान कृष्ण को लेकर गोकुल चलने को तैयार हुए कि उनकी हथकड़ी और वेड़ी खुल गई, जेलके दर्वाजे अपने आप खुलगये, वसुदेवजी कृष्णको लेकर बाहर आये तब देखा कि पहरेदार सोयेहुए हैं। जब वे कृष्ण को लेकर यमुना के किनारे आये तो यमुना बढ़ने लगी। यहाँ तक कि गलेतक पहुँचगई। भगवान ने अपना पैर निकाला और यमुना में लटका दिया। कृष्णजीके चरण छूते ही यमुना एकदम उतरगई। यमुना को पार करके वसुदेवजी गोकुल पहुँचे,वहाँपर भी सभी सोये हुए थे। दरवाजे खुले हुए थे। वे घर के अन्दरगये और बालक कृष्ण को सुलाकर लड़की को लेआये। जब वे जेल में आगये तब जेल का फाटक बंद हो गया, वसुदेव देवकीके हाथ पैरोंमें हथकड़ी और बेड़ी पड़गई, पहरेदार जाग गये और लड़की भी रोने लगी। लड़की का रोना सुनकर पहरेदार कंस के पास गये और बालक होनेकी खबर सुनाई। समाचार सुनकर कंस आया और लड़की को उठाकर पत्थर पर जैसे ही पटकने लगा कि वह लड़की

उसके हाथ से छूटकर आकाश में उड़गई और देवी का रूप रखकर बोली-अरे कंस ! तुझे मारने वाला तो ब्रजमें कहीं पैदा हो चुका है। इन्हीं भगवान कृष्णने बड़े होकर पापी कंस आदि राक्षसों को मारकर पृथ्वी का भार दूर किया।

भगवान कृष्णचन्द्रजी की आरती

आरती श्री कृष्ण की कीजै । टेक.........
शकटासुर को जिसने मारा । तृणावर्त को आय पछारा ।।
उनके गुण का वर्णन कीजै ।। आरती.......
यमुलार्जुन वट जिसने तारे । बकासुरादि जिसने मारे ।।
उनकी कीरति वर्णन कीजै ।। आरती.........
जिसने धेनुक प्राण निकारे । कालियनाग नाथि के डारे ।।
उसी नाथ का कीर्तन कीजै ।। आरती.......
व्योमासुर को स्वर्ग पठाया । कुब्जा को जिसने अपनाया ।।
दयावान के सुपरथ हूजै ।। आरती.........
वृषभासुर से जिसने मारे । चारुणादिक सभी पछारे ।।
आरति यदुनन्दन की कीजै ।। आरती.........
जिसने केसी केश उखारे । कंसासुर के प्राण निकारे ।।
आरती कंस हनन की कीजै ।। आरती.........
जिसने द्रौपदि लाज बचाई । नरसीजी का भात चढ़ाई ।।
आरति भक्त बसल की कीजै ।। आरती.........
भक्तन के जो हैं रखवारे । 'रनवीरा' मन बसने वारे ।।
उनहीं पर बलिहारी हूजै ।। आरती.........

४८. गूगा नवमी

यह त्यौहार भादों वदी नौमी को आता है। कहीं-कहीं राखी पून्यों के दिन पूजे हुये गूगाओं को रख लेते हैं और इसदिन पूजा करते हैं। इसदिन रक्षा वन्धन (राखी-पून्यों)

के दिन जो राखी बाँधी जाती है इसदिन खोलीजाती है। गूगाओं को पास रख लेवें। उनको रोली, चावल, कलाया आदि से पूजें। यदि मीठा चढ़ाना हो तो मीठा चढ़ावें।

४६. अजा (प्रबोधनी) एकादशी

यह एकादशी भादों वदी एकादशोको आती है। इस-दिन भगवान उपेन्द्र की पूजा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए। इस व्रत के करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य नियम पूर्वक इस व्रत को रखते हैं वे इसलोक में समस्त सुखोंको भोगकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

अजा एकादशी की कहानी

प्राचीनकाल में हरिश्चन्द्र नामका चक्रवर्ती राजा राज्य करता था। वह अत्यन्त वीर,प्रतापी व सत्यवादी था। उसने किसी अज्ञात कर्म तथा प्रतिज्ञाके कारण अपने राज्यको त्याग दिया और अपनी स्त्री व पुत्रको बेचदिया। स्वयं एक चांडाल का सेवक बनगया। वह चांडाल के यहाँ रहकर कफन लेनेका काम करता थ। इसतरह उसको बहुतवर्ष बीतगये। इसकर्म से छूटनेका वह कोई उपाय ढूँढ़गे लगा। सौभाग्य से राजा हरिश्चन्द्रकी गौतम ऋषि से भेंट हुई। राजा ने उन्हें अपनी समस्त दुःख कथा कह सुनाई। महर्षि गौतमने राजासे कहा-हे सत्यवादी ! तुम भादोंमाह के कृष्ण पक्ष की अजा एकादशी का व्रत करो। ऐसा करनेसे तुम सब पापोंसे छूट जाओगे। पुनः सब वैभव मिल जवेगा। तब राजाने इस एकादशीका नियम पूर्वक व्रत किया। इसके प्रभावसे राजाके सब पाप दूर हो

गये। उसका मृतक पुत्र पुनः जीवित होगया, स्त्री भी मिल गई और अन्त में स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

५०. बछवारस

यह भादों वदी द्वादशी को आती है। इसदिन स्त्रियोंको गाय बछड़ों की पूजा करनी चाहिए। अगर किसीके यहाँ गाय और बछड़े न हों तो किसी दूसरे की गाय या बछड़े की पूजा करें अगर गाँव में भी न हों तो मिट्टी के बना कर उनकी पूजा करें। ऊपर दही, भीगा हुआ बाजरा आटा, घी

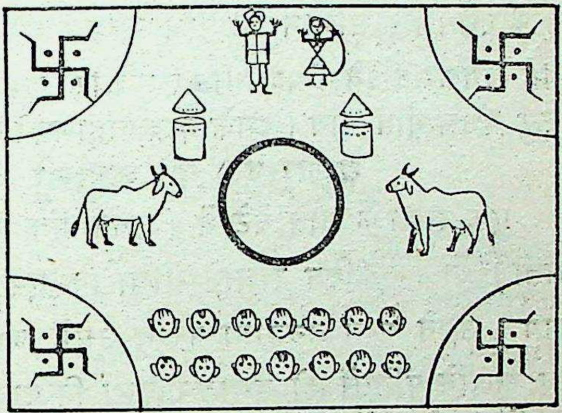

'बछबारस' इस प्रकार बनावें

आदि चढ़ावें, रोली से तिलक करें, चावल चढ़ावें, दूध चढ़ावें,फिर बछवारस की कहानी सुनें। फिर मोंठ,बाजरा पर एक रुपया रखकर वायना काढ़ सासुजी को दे दें। इसदिन बाजरे की ठंडी रोटी खावें। गाय का दही, दूध, गेहूँ, चावल नहीं खावें। यह व्रत पुत्र होने के बाद ही किया जाता है। अपने कुँवारे लड़के की कमीज पर साँतिया बनाकर पहिनावें और कुएँ को पूजें। इससे बच्चे के जीवन की रक्षा होती है। भूत प्रेत और नजर से बचा रहता है।

बछबारस का उजमन

जिससाल लड़के का विवाह हो या लड़का पैदा होवे तो यह उजमन किया जाता है। इसदिन से एकदिन पहिले १। सेर बाजरा दान देवे। बछवारस के दिन एक थाली में १३ मोंठ बाजरे की ढेरी बनाकर उनपर दो मुट्ठी बाजरे का आटा जिसमें घी चीनी मिली होवें रखदेवें एक तीयल और रुपये रखे। इस सामान को हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवे। पश्चात बछड़े और कूआकी पूजा करें। फिर मंगल गीत गावें। इसके बाद ब्राह्मणको दक्षिणा दे देवें।

बछबारस की कहानी

एक राजा के सात बेटे थे। उनके एक पौत्र (पोता या नाती) था। एकदिन राजाने सोचा कि एक कूआ बनवाया जाय। उसने कूआँ बनवाया परन्तु उसमें जल नहीं आया। तब राजाने पंडितों को बुलाकर पूछा कि क्या बात है ? मेरे कुए में पानी क्यों नहीं आया है ? तब ब्राह्मण कहने लगे– महाराज ! अगर आप अपने नाती की बलि देवें और यज्ञ करें तो पानी आजावेगा। राजा ने कहा ऐसा ही करो। यज्ञ की तैयारियाँ हुई और बच्चे को बलि दिया गया। बच्चेकी बलि लगते ही वर्षा होने लगी और कुआँ पानीसे भरगया। राजा ने जब यह समाचार सुना तो वह पानी सहित कूआ पूजने गये। घर में जब साग सब्जी न होनेके कारण उनकी नौकरानी ने गाय के बछड़े को काटकर साग बना दिया। जब पूजा करके राजा रानी वापिस चले आये तब राजाने

पूछा-गाय का बछड़ा कहाँ है ? तब नौकरानी कहने लगी-वहतो मैंने काटकर साग बनादिया । तब राजा कहने लगा-पापिन ! तूने यह क्या किया । राजाने उस माँसकी हाँडीको जमीनमें गाढ़ दिया और कहने लगा-जब गाय वनसे लौटकर आवेगी तो उसको किसप्रकार समझाऊँगा।शामको जब गाय वापिस आई तो वह जहाँपर बछड़ेका माँस गढ़ा हुआ था । उस जगहको अपने सींगसे खोदने लगी । जब सींग हाँड़ी में लगातो गायने उसे बाहर निकाला,उसहाँड़ीमेंसे गायका बछड़ा और राजाकानाती निकले । उसीदिनसे इसदिन का नाम बछ-वारस पड़गया और गायों तथा उनके वछडोंकीपूजा होनेलगी ।

५१. कुशोत्पादिनी अमावस

भाद्रपद की अमावसको यह अमावस्या मनाई जाती है । इसदिन सभीलोग अपने पितरोंको जल देते हैं। उनकी पूजा करते हैं, इसके लिये जंगलसे कुशा उखाडते हैं । कुशा उखा-ड़ते समय 'हुँ फट्' मन्त्र बोलते जाना चाहिए ।

५२. सती व्रत

यह व्रत भादोंकी अमावस्या को किया जाता है । इसदिन सती की पूजा करनी चाहिये । इसदिन सतीजी के मन्दिर में जाकर जल कलाये,नारियल,परसाद, पूड़ी, फूल,रोली,चावल, मेंहदी,काजल,चूड़ी,हींगुर,लड्डू आदि चढ़ाकर दक्षिणाचढ़ावें।

५३. सती की धोकमारना

एक पट्टे को जलसे धोकर उसपर तेरह २रोली, मेंहदी, तथा काजल से कुड़ी बनावे और प्रत्येक कुड़ीपर मीठी पूड़ी,

मीठा, चीनी, प्रसाद और मीठी चीली और कच्चा नारियल चढ़ावे। फिर एक दीया जलावे, धूप जलावे फिर सती की दण्डवत कर टीका काढ़ लेवे।

५४. हड़ताल-तीज का व्रत

यह व्रत भादोंसुदी तीजको मनाया जाता है। इसदिन व्रत रखकर स्नानकरे। नया कपड़ा पहिने। पूजाकी सामिग्री रख लेवे, शामको शिवजी और पार्वतीजीकी पूजा करे और प्रसाद चढ़ावे। कहानी सुनने के बाद शिवजी पर धोती, अंगोछा चढ़ावे, फिर आरती उतारे। पार्वतीजी के लिए एक सुहाग पिटारी व १३ मिठाई चढ़ावे। फिर ब्राह्मण को धोती और अँगोछा दान देदेवे और सुहाग पिटारी किसी ब्राह्मणी को दे देवे। एक रुपया, तेरह मिठाइयां अपनी सासुजी को देकर उनके पाँय लगे और आशीर्वाद प्राप्त करे। दूसरे दिन एक ब्राह्मण और एक ब्राह्मणी की श्रद्धापूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा देवे फिर स्वयं भोजन कर लेवे।

५५. गणेश चौथ

यह चौथ भादोंसुदी चौथको आती है। बच्चोंको गणेश जी की और डण्डों की पूजा करके बेसन के लड्डू का भोग लगानाचाहिए। सबसे पहिले गणेशजीका ध्यान कर अपने मन में बिचार करे कि जिनके एक दाँत है, कान सूपके समान हैं, उनका मुँह हाथी के समान है, वे चार भुजाओं से सुशोभित हैं, वे अपने हाथों में पास और अंकुश धारण किये हैं, उनके शरीरकी शोभा तपाये हुए सोने के समान चमक रही है।

इस प्रकार उनके इक्कीस नाम लेकर इक्कीस पत्ते चढ़ावे। इक्कीस नाम ये हैं—सुमुखाय नमः कहकर शमीपत्र, गणाधीशाय नमः से भगरैया पत्र, उमापुत्राय नमः से विल्वपत्र, गज मुखाय नमः से दूर्वादल, लम्बोदराय नमः से बेरका पत्र, हर सूनवे नमः से धतूरा पत्र, शूर्पकर्णाय नमः से तुलसी पत्र, वक्र तुण्डाय नमः से शेमका पत्र, गुहाग्रजाय नमः से अपामार्गकापत्र, एक दन्ताय नमः से वनभंटा या भटकटैया पत्र, देरम्बाय

नमः से सिंदूर का पत्ता, चतुर्भुजे नमः तेजपात और सर्वेश्वराय नमः से अगस्त्य का पत्ता, विकटाय नमः से कनेर का पत्ता, इमतुण्डाय नमः से अश्मातका पत्ता, विनायकाय नमः से आक का पत्ता, कपिलाय नमः से अर्जुन का पत्ता, वटवे नमः से देवदारूका पत्ता, भाल कन्द्राय नमः से मरूआ का पत्ता, सुराग्रजाय नमः से गान्धारी का पत्ता, सिद्धि विनायकाय नमः से केतकी के पत्ते चढ़ावे। पाँच लड्डुओं का भोग लगावे और आरती उतारे। फिर आचमन करावे और नमस्कार करे। इस प्रकार पूजा करनेसे गणेशजी प्रसन्न होते हैं। पूजा के बाद आचार्य और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे। इसप्रकार पाँच-वर्ष तक पूजा करने से पूजा करने वाले इस लोक और परलोक में अच्छे भोगों को भोगते हैं। ईसदिन चन्द्रमाके दर्शन नहीं करने चाहिये। जो दर्शन कर लेता है उसे झूँठ बोलने का पाप लग जाता है। अगर चन्द्रमा

दीख भी जाय तो सत्राजित की कथा सुनकर अथवा इस मन्त्र को पढ़कर दोष की शान्ति करे—

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंह जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीस्तवै वेषः स्यमन्तकः॥

अर्थात् सिंह ने प्रसेन को मारा और सिंह को जाम्बवान् ने मार गिराया। सुकुमार बालक तू रो मत। यह स्यमन्तक अब तेरा ही है।

गणेश चौथ का सिन्धारा

इसदिन बच्चोंका सिंधारा करना चाहिये। बच्चोंके हाथों में मेंहदी रचाकर उनको रुपये देवें और मिठाई खिलावें।

गणेशजी की आरती

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा, माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।
पानचढ़े फूलचढ़े और चढ़े मेवा, लड्डुओं का भोग लगे संत करे सेवा।
बाँझनको पुत्रदेत निर्धनको माया, अन्धनको आंखदेत कोढ़िनको काया।
जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।

५६- ऋषि पचमी व्रत

यह व्रत भादोंसुदी पंचमी को आता है। इसे स्त्रियों और पुरुषों के लिये अलग २ ढंग से करना चाहिये। स्त्रियों के लिये व्रत इस प्रकार करना चाहिए :—

(अ) स्त्रियों के लिये इस व्रत का नियम

पंचमीके पहलेदिन गंगास्नानको जावे और पंचमीको व्रत रखकर स्नानकरके वापिस आवे। यदि गंगाजी न जा सके तो घर पर इसप्रकार स्नान करे। सुबह १०८ बार मिट्टी से हाथ धोवे, मिट्टी, गोबर, तुलसी की मिट्टी, पीपलकी मिट्टी, गंगाजी की मिट्टी, गोपी चंदन, तिल, आँवला, गंगाजल, गऊ

मूत्र,इन सबको जलमें मिलाकर हाथ पैर धोवे। १०८ बार मुँह में उँगलीसे दाँत माँजे। १०८ वार कुल्लाकरे,१०८ पत्ता सिरपर रखकर १०८ लोटे जलके डालकर स्नान करे। स्नान करके नये कपड़े पहिने,गणेशजी और अरुन्धतीजी की पूजा करे। सोलह प्रकारसे सप्तऋषियों की पूजा करे। सप्तऋषि ये हैं १-कश्यप, २-अत्रि,३-भारद्वाज, ४-विश्वामित्र, ५-गौतम ६-जमदग्नि, ७-वशिष्ठ। इन ऋषियों की कथा सुने। पूजा की सामिग्री मँगावे। पूजाके बाद सात केला, घी, चीनी,और दक्षिणा रखदेवे। बादमें उन्हें किसी ब्राह्मणको दे देवे। शामको ७ बजे के बाद भोजन कर लेवे। इसदिन नमक,दूध, घी, चीनी, नहीं खावे। केवल वृक्षके पके हुए फल ही खावे।

पुरुषों के लिये इस व्रत का नियम

प्रातःकाल गंगा-स्नानकरे। घर आकर अपनेहाथोंसे वेदी बनावे। उसे गोवर से लोपकर साफ करलेवे। इसके बाद कुशाका आसन बिछाकर वहाँ सुगन्धित अगरबत्ती,फूल, धूप, और सुन्दर दीपोंके द्वारा सातों ऋषियों (१ कश्यप,२ अत्रि, ३ भारद्वाज,४ विश्वामित्र,५ गौतम,६ जमदग्नि,७ वशिष्ठ) की पूजा करे। पूजा के बाद अर्घ्य देवे। विद्वान पुरुषको चाहिये कि बिना हुए बोये पदार्थ जैसे,समाके चावलोंका भोग लगावे,इसी भोग को प्रसाद के रूपमें उपस्थित जनों में बाँट-कर व्रत रखने वाला पुरुष स्वयं खा लेवे। जो प्राणी इस प्रकार व्रत करता है वह इस लोक में सुख भोगता हुआ सप्तऋषियों की कृपा से दिव्यलोक को जाता है।

५७. देव-छठ

यह त्योहार भादोंके सुदीपक्षमें छठी (षष्ठमी)को आता है। इसदिन भगवान श्रीकृष्णके बड़े भाई बलदेवजी का जन्म हुआ था इसलिये इसदिन को देवछट कहते हैं। इसदिन भगवान बल्देवजी की पूजा करनी चाहिये। सबसे पहले व्रत रखने वाला स्नान करे फिर भगवान बलरामजी को पञ्चामृतसे स्नान करावे, माखन मिश्री का भोग लगावे, आचमन करावे और बाद में शुद्ध जल से स्नान कराकर कपड़े पहिनावे। फिर धूप, दीप, फूल चन्दन आदि से पूजा करे। पूजा के बाद पञ्चामृत और मिश्री माखन को बाँट देवे। विद्वान ब्राह्मणों को भोजन करावे और दक्षिणा देकर उन्हें विदा करे। फिर कीर्तन करे और भोजन कर लेवे। रात्रिको मूर्ति के पास ही शयन करे। इस तरह जो व्रत और पूजा करते हैं वे इस लोक और परलोक में सुख भोगते हैं। इस लोक में बलरामजी उनकी सदा सहायता करते हैं।

आरती बलदेवजी की

आरति हलधर जी की कीजै ॥ टेक ॥

जो पृथ्वी को धरें शीश पर भगवन शयन करें जिनहीं पर।
आरति उन्हीं शेष की कीजै ॥ आरति ॥

भगवन संग में करें विहारा। ब्रज में भी जो हुए सहारा।
आरति रोहणि सुत की कीजै ॥ आरति ॥

मूसल जिनके रहे संग में। हल भी राजे एक हस्त में।
आरति श्री बलराम की कीजै ॥ आरति ॥

कृष्ण संग जो मथुरा आये। भक्त कार्य में हाथ बढ़ाये।
आरति कृष्ण भ्रात की कीजै ॥ आरति ॥

रुक्मिणि के जो जेठ कहावें। सीताजी देवर बतलावें।
आरति रेवति पति की कीजै ॥ आरति ॥
भक्त जनों के जो रखवारे। "रनवीरा" के काज सँवारे।
आरति पृथ्वीधर की कीजै ॥ आरति ॥

५८. दुबड़ीसातें (दुबड़ी सप्तमी)

यह त्यौहार भादोंसुदी सातों को आता है। इसदिन दुबड़ी की पूजा करनी चाहिये। एक पट्टे पर दुबड़ी (कुछ बच्चों) की मूर्ति, सर्पों की मूर्ति, एक मटका और औरत का चित्र, मिट्टी से बना लेवें। उनको चावल, जल, दूध, रोली, आटा,

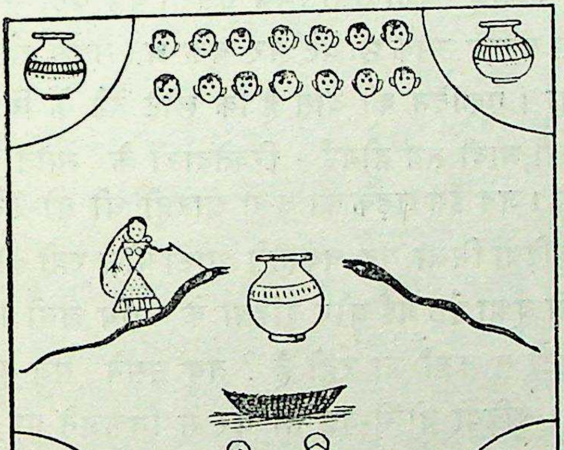

दूबड़ी सातें (सप्तमी) इसतरह बनावे

घी, चीनी, मिलाकर लोई बनाकर उनसे पूजें, दक्षिणा चढ़ावें और भीगा हुआ बाजरा चढ़ावें। मोंठ, बाजरे का बायना निकालकर सासुजी को पाँय लगकर दे देवे। फिर दुबड़ी

सातें की कहानी सुनें। इसदिन ठंडा खाना खाना चाहिये यदि इसी साल किसी लड़की का विवाह हुआ हो तो वह उजमन करे। उजमनमें मोंठ बाजरे की १३ कुड़ी एक थाली में लेकर तथा १ रुपया व एक साड़ी रखकर, हांथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवें।

दुबड़ी सातें की कहानी

एक साहूकार था उसके सात बेटे थे। जब वह अपने किसी बेटे का विवाह करती उसीसमय उसका वह बेटा मर जाता था। इस प्रकार उसके छः बेटे मर चुके थे। सबसे छोटा बेटा बाकी था। एकदिन की बात है कि छोटे बेटे के विवाह की बात चली,शादी तय होगई। रिश्तेदारों के न्यौते भी भेज दिये गये। जब इस लड़के की बूआ आरही थी तो उसे रास्ते में एक बुढ़िया मिली वह चक्कीसे आटा पीस रही थी। वहाँ लड़के की बूआ बैठ गई और बुढ़िया के पाँय लगी। बुढ़िया बोली-बेटी तू कहाँ जा रही है ? तब उसने सब हाल कह सुनाया। बुढ़िया बोली-वह तो घर से निकलने पर दरवाजे से दबकर मर जायगा। अगर वहाँसे भी बचगया तो रास्ते में बरात रुकेगी वहाँ पेड़ गिर जायगा, अगर वहाँ से भी बच गया तो ससुरालमें दरवाजा गिरने पर दबकर मर जायगा। अगर वहाँ भी न मरा तो सातवीं भाँवर पर सर्प काटलेगा और वह मर जायगा। यह बात सुनकर लड़के की बूआ कहने लगी—माँ ! बचने का कोई उपाय है ? तब बुढ़िया बोली-है तो सही परन्तु कठिन है। सुन उस लड़केको पीछे

को दीवाल फोड़कर निकालना, पेड़के नीचे बरात न रुकनेदेना, ससुरालमें भी पीछेसे दरवाजा कराकर ले जाना। भाँवरों पर एक कटोरा दूधका भरकर रखलेना और एक ताँत का फांसा बनाकर रखदेना, जब वहाँसाँप आवे तो दूध पिलाकर बाँधदेना फिर साँपिन आवेगी और वह साँप माँगेगी, तब तुम उससेअपने छः भतीजोंको माँगलेना, वह उन्हें जीवित करदेगी। साथमें इस बातको किसीको सुनाना मत, नहीं तो सुनाने वाले और सुनने वाले दोनोंकी मृत्यु होजायगी। फिर लड़का नहीं बच सकता है। यह कहकर बुढ़िया जाने लगी और बोली मेरानाम दुबड़ीहै।

यह सुनकर बुआ घर आई। जब बरात जाने लगी तब वह रास्ता रोककर खड़ी होगई और कहने लगी पीछे से दरवाजा बनाकर ले जाओ। जब पीछे के दरवाजा से लड़का निकला तो घरका पुराना दरवाजा गिरगया। तब सब कहने लगे—बूआ ने तो अच्छा किया। जब बरात चलने लगी तो बूआ भी जाने को बोली-सबने मना किया कि औरतें बरात में नहीं जातीं पर वह नहीं मानी और बरात के साथ-साथ चल दी। रास्तेमें जब बरात पेड़के नीचे रुकने लगी तो उसने मनाकिया और दूल्हा को वहाँ न बैठाकर धूप में बैठाया। दूल्हा के बैठते ही पेड़ गिरगया। इस बात को देखकर सब बूआ की बड़ाई करने लगे। जब बरात वहाँ से चलकर ससुराल में पहुँची तो वहांभी पीछेके दरवाजेसे जाने को कहा और उसकी बात सबने मानली। पीछे के दरवाजे से जैसे ही लड़का घरमें घुसा दरवाजा गिरगया। तब सब कहने लगे कि

यह बातें बूआ को किसप्रकार पता चलीं। जब भाँवरें पड़ने लगीं तो उसने एक कटोरा कच्चा दूध मँगाया और ताँत का फाँसा बनाकर रखलिया। जब सातवीं भाँवर पड़ने लगी। तभी सर्प आया बूआने सर्पके सामने दूध करदिया। दूध पीते समय सांप को उसने ताँत से बाँध लिया। तब बादमें साँपिन आई और उसने अपना साँप मांगा। तब लड़केको बूआ ने अपने छओं भतीजे माँगे। सांपिन ने उसके छओं भतीजे जीवित कर दे दिये और साँप को साथ लेकर चली गई। इस प्रकार उसे सातों भतीजे मिल गये। बारात घर वापिस आई तब लड़के की बूआ ने सप्तमी के दिन दूबड़ी की पूजा कराई। इसीसे इसको दुबड़ी सातें कहते हैं। हे दुबड़ी भैया! जैसे तैंने बूआ को सातों भतीजे दिये वैसे सबको दीजो।

गणेशजी (विन्दायकजी) की कहानी

एक ब्राह्मण था। वह रोजाना सुबह जल्दी उठकर पहले तो गंगास्नान करता था फिर गणेशजी की पूजा किया करता था। यह बात उसकी पत्नी को अच्छी नहीं लगती थी। वह गुस्सा होती और कहती कि अब मैं कैसे घरकी सफाई करूँ आप तो बीच में ही बैठ गये हो और कैसे घर का अन्य काम करूँ। परन्तु वह तो पूजा करता रहता और कुछ नहीं सुनता था। एक दिन वह ब्राह्मण तो गंगाजी स्नान करने चला गया कि पीछे से उसकी पत्नीने गणेशजी की मूर्ति को छिपाकर पटक दिया। जब वह ब्राह्मण लौटकर घर वापिस आया तो उसने अपनी पत्नीसे पूछा कि मूर्ति कहाँ है। उसने कहा-

मुझे क्या पता मूर्ति कहाँ गई। इस पर उस ब्राह्मण ने सब खाना-पीना छोड़ दिया और रोने लगा। गणेशजी की मूर्तिने जब यह पति-पत्नीका झगड़ा देखा तो वह हँसने लगी। तब वह ब्राह्मणी बोली वह पड़ी आपकी मूर्ति उठा लो उसे। तब उस ब्राह्मणने उस मूर्तिको उठाकर उसकी पूजा की। इस पर गणेशजी बहुत प्रसन्न हुए और ब्राह्मणसे बोले कि तू जो चाहिए वर माँगले। ब्राह्मण बोला-यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे खूब धन-दौलत दुनिया भरका सुख प्रदान करिये। तब गणेशजी ने उस ब्राह्मणको खूब धन-दौलत दिया और वह ब्राह्मण खूब आनन्द से सुख भोगने लगा। उसने एक गणेशजी का मन्दिर बनवा दिया जिसमें वह बैठा-बैठा पूजा करता रहता। उसकी स्त्री भी फिर तो गणेशजीकी खूब सेवा पूजा करने लगी। हे गणेशजी महाराज! जैसे तुमने उस ब्राह्मणको खूब दौलत दी वैसे सबको देना। हमको भी देना।

५९. महालक्ष्मी का डोरा पहिनें

महालक्ष्मीका डोरा दुबड़ी सातें को लेवें। एक सोलह तार के डोरे में सोलह गाँठ लगाकर, हल्दीकी गाँठ घिसकर उसमें रंग लेवें। फिर महालक्ष्मी की कहानी सुनकर उस डोरे को पहिन लेवें।

६०. महालक्ष्मी का डोरा खोलें

श्राद्ध लगते ही अष्टमीको महालक्ष्मी का डोरा खोलें। इसदिन शामको स्नान करके नये २ वस्त्र पहिनें, पूरी आदि सामान बनावें। फिर एक पट्टे पर एक पीपलकी टहनी और

१ लोटा रखलें। लोटे पर सतिया काढ़ देवें और १६ बिन्दी रख देवें। इसके बाद पीपल की पूजा करें और १६ सुहाली सीरा व पूरी चढ़ावें। पीपल के दोनों ओर २ आटे के चौमुखा दीपक रख देवें। फिर बाँये हाथकी तरफ का दीपक पीछे फेंक देवें और दाहिने हाथ का दीपक ढक कर रख दें। फिर १६ दाने गेहूँ के लेकर वही कहानी सुनें जो डोरा लेने के दिन सुनी थी। १ कटोरी में सीरा और १ रुपया रखकर वायना काढ़कर सासुजी को पाँय लगकर दे दें। लोटा और १६ दाने गेहूँ के उठाकर रख दें। रात्रिको जब चन्द्रमा निकले तब उसे अर्घ्य देकर भोजन कर लेवें।

६१. भभुत सिद्ध की जात

भादों उतरते ही सप्तमी को भभुत सिद्ध की जात लगती है। एक पट्टा रखकर उस पर सतिया काढ़ लेवें, दक्षिणा, जल रोली, चावल, लड्डू, नारियल चढ़ाकर टीका काढ़ लेवें। फिर हाथ जोड़कर धोक मार (दण्डवत) लेवें।

६२. राधाष्टमी व्रत

यह व्रत भादोंवदी अष्टमी को मनाया जाता है। इसदिन श्री राधाजी का जन्म हुआ था। इसदिन राधा-कृष्णकी पूजा करनी चाहिये, पहिले राधाजी को पंचामृतसे स्नान करावें फिर उनका शृंगार करें, भोग लगावें फिर धूप, दीप, फूल, आदि से आरती उतारें। इसप्रकार पूजा करने पर मनुष्य पापों से मुक्त होजाता है और इसलोक और-परलोकमें सुख भोगता है।

श्रीराधाजी की आरती

आरती राधाजी की कीजै ।। टेक ।।

कृष्ण संग जो करें निवासा, कृष्ण करें जिन पर विश्वासा।
आरति वृषभानु लली की कीजै ।। आरति........।।१।।
कृष्णचन्द्र की करी सहाई, मुँह में आनि रूप दिखलाई।
उस शक्ति की आरति कीजै ।। आरति........।।२।।
नन्द पुत्र से प्रीति बढ़ाई, जमुना तट पर रास रचाई।
आरति रास रचाई की कीजै ।। आरति........।।३।।
प्रेम राह जिसने बतलाई, निर्गुण भक्ति नही अपनाई।
आरति श्रीजी की कीजै, ।। आरति........।।४।।
दुनियाँ की जो रक्षा करती, भक्तजनों के दुःख सब हरती।
आरति दुख हरणी की कीजै ।। आरति........।।५।।
कृष्णचन्द्र से प्रेम बढ़ाया, विपिन बीच में रास रचाया।
आरति कृष्ण प्रिया की कीजै ।। आरति........।।६।।
दुनियाँ की जो जननि कहावें, निज पुत्रों को धीर वधावें।
आरति जगत मात की कीजै ।। आरति........।।७।।
निज पुत्रों के काज सँवारे, "रनवीरा" के कष्ट निवारे।
आरति विश्व मात की कीजै ।। आरति........।।८।।

६३. महालक्ष्मी व्रत

यह व्रत राधाष्टमी के ही दिन किया जाता है, यह व्रत १६ दिन तक रखना चाहिए। सबसे पहिले व्रत रखने पर यह मन्त्र पढ़कर संकल्प करे—

करिष्येऽहं महालक्ष्मि व्रत ते त्वत्परायणा।
तदविघ्नेन मे यातु समाप्तिं त्वत्प्रसादतः।

अर्थात् देवी! मैं आपकी सेवा में तत्पर होकर आपके इस महाव्रत का पालन करूँगी। आपकी कृपा से यह व्रत बिना विघ्नों के परिपूर्ण हो।

इतना कहकर अपने हाथमें कलायेका बनाहुआ डोराजिसमें १६ गाँठ लगी हों बाँध लेवे और प्रतिदिन आश्विन कृष्णा अष्टमी तक यह व्रत और पूजा चलती रहे, व्रत पूरा होजाने पर वस्त्र से एक मंडप बनावे उसमें लक्ष्मीकी प्रतिमा रखे फिर

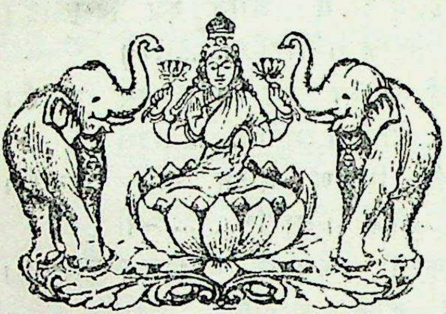

पंचामृत से स्नान करावे और सोलह प्रकार से पूजा करे। रात्रि में तारागणों को लक्ष्मीके प्रति अर्घ्य देवे और लक्ष्मी की प्रार्थना करे। फिर व्रत रखने वाली स्त्री ब्राह्मण व ब्राह्मणियों को भोजन करावे और दान देवे। उनसे हवन करावे और खीरकी आहूती देवे। सब रोगों की शान्ति के लिये भगवान धर्मराज को आहूती देवे। चन्दन, ताल पत्र, पुष्प माला, अक्षत, दूर्वा, लाल सूत, सुपारी, नारियल तथा नाना प्रकारके खानेके पदार्थ नये सूप में १६-१६ की संख्यामें रक्खे। फिर नये दूसरे सूप से ढक देवे और नीचेके मंत्रको पढ़कर लक्ष्मीके समर्पित कर देवे-

क्षीरोदार्णवसम्भूता लक्ष्मीश्चन्द्र सहोदरा।
व्रतेनानेन सन्तुष्टा भवताविष्णुबल्लभा॥

अर्थात् क्षीरसागरसे प्रकट हुई लक्ष्मी, चद्रमाकी सहोदर भगिनो, श्रीविष्णु बल्लभा, महालक्ष्मी इस व्रत से सन्तुष्ट हों। इसके बाद ४ ब्राह्मण और १६ ब्राह्मणियों को भोजन करावे और दक्षिणा देकर विदा करे फिर घरमें बैठकर स्वयं भोजन

कर लेवे । इस प्रकार जो व्रत करते हैं वे इस लोक में सुख भोगकर बहुत काल तक लक्ष्मी लोक में सुख भोगते हैं ।

६४. रामदेवजी की जात

भादों उतरते ही दशमी को रामदेवजी की जात लगती है । यदि रामदेवजी का मन्दिर हो तो मन्दिर में, नहीं तो घर में ही रामदेवजी की जात देदे । जल, रोली. चावल, चूरिमा, नारियल, दक्षिणा चढ़ावे । सभी टीका काढलें और रामदेवजी का नाम लेकर धोक मारें ।

६५. विश्वकर्मा (बिस्करमा) पूजा

जिस मिल मालिक का जिस तरहका भी काम होवे, बिस्करमा के दिन समस्त पूजा सामग्री से विस्करमा ज़ी की श्रद्धापूर्वक पूजा करे।

६६. परिवर्तनी (वामन) एकादशो

यह एकादशी भादों सुदी एकादशी को आती है । इसदिन भगवान की पूजा करनी चाहिये । यह एकादशी समस्त पापों का नाश करने वाली तथा वाजपेय यज्ञ के समान फल देने वाली है जो मनुष्य इसदिन बामन भगवानकी पूजाकरते हैं । वे ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों की पूजा का फल प्राप्त करते हैं । भगवान विष्णु करवट बदलते हैं इसलिये इसे परिवर्तनी एकादशी कहते हैं । जो मनुष्य मोक्ष चाहते हैं उन्हें यह व्रत अवश्य करना चाहिये । इस व्रत के करने से स्वर्ग मिलता है । इसदिन चावल, दही,रुपये का दान देवें ।

परिवर्तनी (वामन) एकादशी की कहानी

एक समय त्रेता युगमें दानव कुल में एक बलि नाम का अत्यन्त भक्त, दानी, सत्यवादी और ब्राह्मणों की सेवा करने वाला बड़ा प्रतापी राजा हुआ। राजा बलिने अपनी भक्तिके प्रभाव से इन्द्रलोक पर भी अधिकार कर लिया था। इससे इन्द्र सहित सभी देवता बड़े दुःखीहुए तब उन्होंने भगवानविष्णु के पास जाकर प्रार्थनाकी,प्रार्थनासे प्रसन्नहोकर वामनावतार धारण किया। वामन रूप रखकर भगवान विष्णु राजा बलि के यहाँ पहुँचे और उससे ३ पग भूमि दानमें माँगी और राजा बलि से कहा कि यदि तुम मुझे तीन पग भूमि दोगे तो तुम्हें तीनों लोकोंका फल प्राप्त होगा। राजा बलि वामन रूप भगवान को तीन पग भूमि देने को तैयार होगया। तब भगवान ने अपना इतना शरीर बढ़ाया कि दो पगों में ही भगवान ने तीनों लोकोंको नापलिया। तब भगवानने तीसरा पग बलि राजा के सिर पर रक्खा इससे वह पाताल को चला गया। भगवान ने बलिको अति दीन दशा में देख कहाकि मैं सदैव तुम्हारे निकटही रहूँगा। इसप्रकार भगवान ने इसदिन वामन रूप रखकर इंद्रको पुनःइंद्रलोक दिया,सब देवताओं का दुःख दूर किया। हे भगवान ! जैसे तुमने देवताओं का दुःख दूर किया वैसे सबका दुःख दूर करना।

६७ वामन द्वादशी

वामन द्वादशी भादोंसुदी द्वादशीको मनाई जाती है। इस दिन भगवान वामनकी पूजा समस्त सामिग्री करनी चाहिये।

पूजा करनेके बाद वामन भगवानका ५२ पेड़ा और उन पर ५२ दक्षिणा रखकर भोग लगावे। फिर एक डलिया में एक कटोरी चीनी, एककटोरी शरवत, एक कटोरी चावल और एक कटोरी दही व दक्षिणा रखकर ब्राह्मणको देदेवे। इसदिन व्रत रखकर उजमनभीकरनाचाहिए। उजमनसे वामन भगवान बहुतही प्रसन्न होते हैं। उजमनमें ब्रह्मणोंको माला, गऊमुखी कमण्डल, लाठी, आसन, गीता, फल, छाता, खड़ाऊँ व दक्षिणा देवे। इस प्रकार यह द्वादशी मनाने पर स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै।

६८ गौ-गिराज व्रत

यह व्रत भादों सुदी तेरसको आता है। इसदिन गौओंकी पूजा करनी चाहिये। साथमें भगवान लक्ष्मीनारायणकी भी पूजा करनी चाहिये। पहलेएक मंडप बनावे फिर उसमें भगवानकी मूर्ति को स्नान कराकर रखे और सुन्दर २ वस्त्राभूषण पहिनाकर आरती उतारे। फिर गौओं की पूजा करे और निम्न लिखित मन्त्र पढ़कर गाय को नमस्कार करे—

पंच गावः समुत्पन्नाः मध्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्मै धेन्वे नमः॥

अर्थात् क्षीर-सागर का मंथन होने पर उस समय पाँच गायें पैदा हुईं। उनके बीचमें नन्दा नामवाली गाय है उस गाय को बार-बार नमस्कार है।

पुनः नीचेका मंत्र पढ़कर गायको ब्राह्मणको दान दे देवे।

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे पार्श्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

अर्थात्-गौएँ मेरे आगे रहें, गौएँ मेरे पीछे रहें, गौएँ मेरी बगल में रहें और मैं गौओं के बीच में निवास करूँ।

इसके बाद ब्राह्मणका सत्कार कर विदा करे और आशीर्वाद प्राप्त करे। जो इस प्रकार व्रत करता है वह सहस्रों अश्वमेध और राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

६९. अनन्त चौदस

यह व्रत भादों सुदी चौदस को आता है इसदिन अनन्त भगवान की पूजा करनी चाहिये।

एक सेर गेहूँ के आटे में मीठा मिलाकर घी में पूआ (मीठीपूरी) बनावे और उन्हें भगवान अनन्तके अर्पण करे। इसके बाद चाँदी अथवा रेशम के सुन्दर सूत में चौदह गाठें लगाकर उसे धूप देकर पूजा करे और अपनी बाँह में बाँध लेवे। जो पुराना होवे उसे उतार कर किसी तालाब या पोखर में डाल देवे। इस सूत्र (धागे) को स्त्री बाँयीं भुजा में और पुरुष दाँयीं भुजा में बाँधे। अनन्त भगवान को कथा सुने फिर मोठे पूआ सभी व्यक्तियों में बाँट देवे।

यह व्रत १४ वर्षों तक लगातार करना चाहिए जब १४ साल हो जावें तब एक मंडप बनाकर उसमें ताँबे का कलश रखे। उसे रेशमी पीले कपड़े से ढक देवे। फिर उस पर अनन्त भगवान की मूर्ति रखे और सोलह प्रकार से पूजा करे। अनन्त भगवान के अलावा गणेशजी, लोकपाल आदि की भी

पूजा करे। हवन करावे। फिर चौदह ब्राह्मणों को भोजन करा-कर दान देवे और भगवान अनन्त की मूर्ति को आचार्य या वेदपाठी विद्वान पुरुषको दे देवे। फिर स्वयं भोजन कर लेवे।

इसप्रकार जो व्रत करता है वह मोक्षको प्राप्त होता है।

७० उमा--महेश्वर व्रत

यह व्रत भाद्र मास की पूर्णिमा को किया जाता है। इस दिन भगवान महेश्वर और उमा की पूजा करनी चाहिये। सबसे पहले सुबह उठकर स्नानादि करके प्रार्थना करे कि हे प्रभो ! मैं आज आपका व्रत धारण करूँगा, फिर भगवान महेश्वर की मूर्ति को स्नान कराकर बेल के पत्ते, फूल,धूप आदि से आरती उतारे और शंकरजीकी स्तुति करे। रात्रि को मन्दिरमें ही जागरण करे,इसप्रकार यह व्रत १५ वर्षो तक करना चाहिए। इसके बाद इसी प्रकार पूजाकर ब्राह्मणों को दान देवे और भोजन कराकर दक्षिणा देकर विदा करे। जो इसप्रकार व्रत रखता है वह पृथ्वी पर सुयश पाता है, और धन-धान्य से पूर्ण होकर अन्त में भगवान शंकर के लोक को जाता है।

उमा-महेश्वरी की कहानी

एकबार दुर्वासा ऋषिने भगवान विष्णुको एक शंकरजी की माला दी । भगवानने उसे गरुड़के गले में डाल दिया। दुर्वासा मुनि को यह बात अच्छी न लगी और गुस्सा होकर कहने लगे-हे विष्णु ! तुमने शङ्करजी का अपमान किया है। इसलिये तुम्हारी लक्ष्मी चली जायगी, क्षीर सागरसे तुम्हारा अधिकार जाता रहेगा और शेषनाग भी तुम्हारा साथ छोड़ देंगे। उनके कहने के अनुसार ऐसा ही हुआ । तब भगवान विष्णुने दुर्वासा ऋषिको प्रणाम करके इसका निवारण पूछा। तब ऋषिबोले यदि तुम उमा-महेश्वरका व्रत भादोंकी पूर्णिमा को रखोतो तुम्हें पुनःसभी वस्तुएँ मिल जायँगी। तब भगवान ने यह व्रत रखा और उन्हें सभी वस्तुयें पुनः प्राप्त होगईं। उसीदिनसे यह व्रत रखा जाता है। हे शङ्करजी ! जैसे विष्णु भगवानको सभी चीजें दुबारा मिलीं, वैसे सबको देना ।

७१. गाज का व्रत

अगर किसीके लड़का हुआ हो या लड़केकी शादी हुई हो तो उसीसाल भादोंमें शुभदिन देखकर गाजका व्रतकर उजमन करें। सात जगह चार २ पूड़ी, थोड़ा २ सीरा रखकर उस पर रुपया व ओढ़ना रखलें। एक जलके लोटा पर साँतिया काढ़कर ७ दाने गेहूँ के हाथ में लेकर गाज की कहानी सुनें। फिर ओढ़ना पर रुपया रखकर सीरा, पूरी पर हाथ फेरकर सासुजी को पायँ लगकर देदें। फिर सूर्य भगवान को लोटे से अर्घ्य देकर सात ब्राह्मणी सहित स्वयं भोजन कर लेवें।

भोजनकरनेके बाद उन ब्राह्मणियोंके टीकाकर दक्षिणा देदेवें।

गाज की कहानी

एकराजा था और एकरानी थी। वे दोनों महलमें रहते थे। एकदिन रानी बोली-हे गाज माता! यदि मेरे गर्भ रह जाय तो मैं तेरा शृंगार करूँ। तब रानी के गर्भ रह गया, परन्तु रानोने शृंगार नहीं किया। कुछदिन बाद रानी बोली-हे गाज माता! यदि मेरे पुत्र हो तो तेरा दो बार शृंगार करूँ। तब रानीके लड़का भी होगया किन्तु रानी इसबार भी शृंगार करना भूलगई। एकदिन रानी का लड़का पालने में सोरहा था कि गाजमाता के कोप से बड़े जोरकी आँधी आई और पालने सहित लड़केको उठाकर लेगई और एक भील-भीलिनी के यहाँ लेजाकर पालना रखदिया। उन भील भीलिनीके न तो धन था और न लड़का। वे जंगलकी घास खा-खाकर जीवन निर्वाह करते थे। भील जब जंगल से वापिस आया तो उसने पालने में लड़का देखा। उसे देखकर बहुत खुश हुआ और उस लड़केको खिलाने लगा। एक धोबी था जो राजा व भीलदोनों के ही कपड़े धोता था। राजा के महल में यह शोरगुल होरहा था कि गाज-माता लड़केको उठाकर लेगई। तभी धोबी बोला कि मैंने आज लड़का पालने में भील के यहाँ सोता हुआ देखा है। तब राजा बोला-भील को यहाँ बुलाकर लाओ। भीलको राजमहल में लेजाया गया। तब राजाने भील से पूछा कि तेरे घर पालने में लड़का कैसे पहुँचा? तब वह भील बोला-हे महाराज! मैं गाजमाता का व्रत करता हूँ। अतः गाजमाता

ने खुश होकर मुझे लड़का दिया है। तभी राजा-रानीको याद आई कि हमने गाज माताका श्रृंगार बोला था परन्तु वह पुत्र होनेके बाद भी नहीं किया। इसीलिए हमारा पुत्र चला गया। तब रानी बोली-हे गाजमाता! हमारा पुत्र लादे। मैंने जितने श्रृंगार बोले थे उनसे दूना श्रृंगार कर दूँगी। गाज-माता ने राजा-रानीका पुत्र ला दिया। तब रानी ने खूब उजमन किये, भील-भीलिनी के भी गाज-माता की कृपा से पुत्र होगया और खूब धनवान् होगये। हे गाजमाता! जैसे तूने भील भीलिनी को धन और पुत्र दिया, रानी का खोया हुआ पुत्र ला दिया वैसा तू सबको दीजो।

आश्विन (क्वार) मासके व्रत और त्यौहार

यह महीना हिन्दी संबतके अनुसार सातवाँ महीना है। इस माह में ठंड बढ़ने लगती है। दिन छोटे होने लगते हैं तथा रात बड़ी होने लगती हैं। इस माह में निम्नलिखित त्यौहार मनाये जाते हैं—

७२ श्राद्ध

आसौज लगते ही पूर्णमासी से श्राद्ध चालू हो जाते हैं। और अमावस्या तक रहते हैं। इसे श्राद्ध-पक्ष कहते हैं। इसमें अपने पितरों की शान्ति के लिए ब्राह्मण व ब्राह्मणियों को सुन्दर २ भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। फिर पितरों को जल देकर तर्पण करते हैं। यदि किसी पुरुष का श्राद्ध हो तो ब्राह्मण को भोजन कराकर धोती, गमछा और दक्षिणा

देकर विदाकर दे और यदि स्त्री का श्राद्ध हो तो ब्राह्मणी को भोजन कराकर साड़ी तथा दक्षिणा देकर विदा करदे। खीर,पूरी,इमरती की रसोई से पितर बहुत तृप्त होते हैं।

७३. साँजी

साँजीका त्यौहार आसौज लगतेही पूर्णमासीसे अमावस्या तक मनाया जाता है। कुवाँरी लड़कियों को घरों में साँजी का पूजन करना चाहिये। दीवाल पर गोबर से साँजा-साँजी की मूर्ति बनाकर उसका भोग लगाना चाहिये और आरती करनी चाहिए। इस प्रकार पंद्रह दिन तक नित्य प्रति तरह २ के रूपों में साँजा-साँजी बनाकर पूजन करना चाहिए। पंद्रहवें दिन अमावस्या को गोबर से विशाल कोट बनाकर पूजन करना चाहिये। जिस लड़कीकी शादी होजाय तो वह शादी के केवल उसी वर्ष १६ कोटोंकी १६ घर जाकर पूजा करे, भोग लगावे। इससे लड़कियोंकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

आरती साँजा-साँजी की

आरती री आरती साँजा माई आरती, आरती के फूल महेश्वर की बाती। गोरौ री गोरौ साँजा लाल गोरौ, गोरे के नैंन कजर भर थोड़ो। भावो री भावो कंत तिहारे। उजलिस दंतन विरन हमारे। पोयेंगे पुड़िया राधेंगे भ त, जीमेंगे मां के जाये सोने के थाल ।। चत्रो, वत्री सोलह दुलारी, वहाँ बैठी साँजा की माई। माई री माई देओ अशीष, साँजा जीवे कोटि बत्तीस। कोटि २ के ऊँचे पाये नीचे पाये राज करे बाबुल के जाये। बाबुल जाये गोद खिलाये, ले पट्टी टकसाल पढ़ाये। नौऊ नौऊ नौरता दुर्गा माई के, सोलह कनागत पित्रों के, जाग माई गौरा खोल किवाड़, हम आये तेरे पूजन हार, पूज पुजन्ती का फल होय, भैया भतीजे सम्पति होय। भैया होवें नौन्दस-वीस भतीजे होवें पूरे पच्चीस।

गीत

साँजा लाल बनरी को चाले रे, बनरा टेसुरा
बनरी से क्या क्या लाये रे ॥ बनरा टेसुरा ॥
माय कू हँसला वहिन कू कटला, तो
गोरी धन कारी कण्ठी लाये रे ॥ बनरा टेसुरा ॥
माय वाकी हँसे, बहिन बाकी खिलकं, तो
गोरी धन रूठी मटकी डोले रे ॥ बनरा टेसुरा ॥
माय पै से छीनो वहिन पै से झपटौ तो
गोरी धन ले पहरायो रे ॥ बनरा टेसुरा ॥
माय बाकी रोवे बहिन बाकी सुबके, तो
गोरी धन फूली न समाय रे ॥ बनरा टेसुरा ॥

७४. महालक्ष्मी व्रत

यह व्रत राधा-अष्टमी से शुरू होता है और क्वारके वदो पक्ष को अष्टमी को समाप्त होता है। इसदिन लक्ष्मीजी की पूजा करनी चाहिये।

इसदिन सबसे पहिले लक्ष्मीजी की मूर्तिको स्नान करावें फिर नये-नये वस्त्र पहिनाकर भोग लगावे और आचमन कराकर फूल,धूप,दीप,चंदन आदिसे आरती करें और भोगको आरती के बाद बाँट देवें। रात्रिको चन्द्रमा के निकलने पर उसे अर्घ्य देवें और आरती करें फिर स्वयं भोजन करें। इस व्रतके करनेसे धन-धान्यकी वृद्धि होती है और सुख मिलता है।

महालक्ष्मी व्रत की कहानी

बहुत समय की बात है कि एक गाँवमें एक विद्वान परन्तु गरीब ब्राह्मण रहता था। नियम का भी वह बहुत पक्का था। एक जंगलमें एक पुराना विष्णु का मन्दिर था उसमें

वह नित्यप्रति नियमसे पूजा करने जाया करता था। उसकी पूजाको देखकर भगवान् विष्णु उसपर प्रसन्न हुए और दर्शन दिये। भगबानने उसे धन देने के लिये कहा और उसे धन प्राप्त करनेका उपाय बताया कि मन्दिरके सामने एक औरत कंडे थापने आती है। सुबह आकर उसे तुम पकड़ लेना और अपने घर रहने का आग्रह करना और तब तक मत छोड़ना जबतक कि वह तुम्हारे घर रहना स्वीकार न करले। वह मेरी स्त्री लक्ष्मी है उसके तुम्हारे घरमें आतेही सारे दुःख दूर हो जायँगे। इतना कहकर भगवान अन्तर्धान हो गये। ब्राह्मण अपने घर चला आया। दूसरे दिन वह सुबह चार बजे ही मन्दिरके सामने जाकर बैठ गया। जब लक्ष्मीजी कंडा थापने आई तो उनको उस ब्राह्मण ने पकड़ लिया। लक्ष्मीजी चक्कर में पड़गईं कि आज मेरा आँचल किसने पकड़लिया? उन्होंने देखा कि एक ब्राह्मण आँचल पकडे खड़ा है उससे उन्होंने आँचल छोड़नेको कहा, परन्तु ब्राह्मणने नहीं छोड़ा। ब्राह्मण बोला-तुम मुझसे यह वायदा करो कि मैं तेरे घर में निवास करूँगी तब छोड़ूंगा। लक्ष्मीजी भगवान बिष्णुकी करतूत समझ कर बोलीं-हे ब्राह्मण! तुम अपनी पत्नी सहित मेरा १६ दिन तक व्रत धारण करो, फिर, सोलहवें दिन रात्रि को चन्द्रमा की पूजा करके उत्तर दिशा में मुझे पुकारना। तब मैं तेरे घर अवश्य आऊँगी। ब्राह्मणने ऐसाही किया जब रात्रि को चन्द्रमा की पूजा करके उत्तर दिशा में आवाज लगाई तो लक्ष्मीजी चली आईं और उसके साथ भोजन करके उसीके

घरमें निवास करने लगीं। इसीलिये यह व्रत महालक्ष्मी के नामसे प्रसिद्ध है। हे लक्ष्मीजी ! जैसे तुम ब्राह्मण के घर आई वैसे सबके घर आना। हमारे भी घर आना।

७५ पुत्र-जीवी व्रत

यह व्रत क्वार माह के वदी पक्ष की अष्टमी को किया जाता है। इसदिन सूर्य नारायण की पूजा करनी चाहिये।

व्रत रखनेवाला स्वयं स्नान करके भगवान सूर्य नारायण की मूर्ति को स्नान करावे और भोग लगावे तथा आचमन कराकर धूप, दीप आदिसे आरती उतारे। भोग को प्रसाद के रूप में बाँट देवे। इसदिन बाजरा और चनेसे बने पदार्थ भोग में लगाये जाते हैं तथा काटे हुए फल व शाक आदि नहीं खाये जाते और न काटने ही चाहिये।

इस व्रत के करने से जिनके पुत्र तो होते हों परन्तु जीवित न रहते हों, जीवित रहने लगते हैं। साथ ही मृत-वत्सा दोष दूर हो जाता है।

पुत्र-जीवी व्रत की कहानी

एकसमय की बात है कि जब भगवान कृष्ण द्वारिकापुरी में निवास करते थे, उस समय एक ब्राह्मण भी द्वारिका में रहता था। उसके सात पुत्र काल के गाल में बचपन में ही जा चुके थे। इस दशाको देखकर वह ब्राह्मण बहुत दुःखी था। एकदिन भगवान कृष्णके पास गया और कहने लगा-हे भगवन् ! आपके राज्यमें आपकी कृपा से मेरे सात पुत्र हुये परन्तु जीवित कोई नहीं रहा, क्या कारण है ? यदि आप

अपने राज्यमें मुझे दुःखी देखना नहीं चाहते तो कोई उपाय बताइये। तब भगवान् बोले-हे ब्राह्मण! सुनो, इस बार तुम्हारे जो पुत्र होगा उसकी उम्र ३ वर्ष की है। उसकी उम्र बढ़ाने के लिये तुम भगवान सूर्यनारायण की पूजा होने वाले पुत्रजीवी व्रत को धारण करो। तुम्हारे पुत्र की आयु अवश्य बढ़ेगी। ब्राह्मण ने वैसा ही किया। जब वह सपरिवार खड़े होकर इस प्रकार कह ही रहा था:—

दोहा—सूर्य देव विनती सुनो, पाऊँ दुक्ख अपार।
उम्र बढ़ाओ पुत्र की, कहता बारम्बार॥

कि भगवान सूर्य का रथ रुकगया और उन्होंने अपने गले से एक माला उतार कर ब्राह्मण के पुत्र पर डाल दी और आगे चले गये, उसी समय यमराज उस ब्राह्मण के पुत्र के प्राण लेने आया हुआ था। यमराजको देखकर ब्राह्मण और ब्राह्मणी कृष्णजी को झूँठा कहने लगे। उसी समय भगवान कृष्ण सुदर्शन चक्र लेकर आगये और बोले-इस माला को यमराजके ऊपर डालदो, इतना कहतेही ब्राह्मण उस माला को उठाने लगा कि यमराज डरकर भाग गये परन्तु वहाँ यमराज की छाया खड़ी रही। वह फूलोंकी माला यमराज की छाया पर गिरी। जिसके फलस्वरूप वह छाया शनी के रूप में आकर गिड़-गिड़ाने लगी। तब भगवान ने उस छाया को पीपल पर रहने को स्थान दिया। इस प्रकार भगवान ने उस ब्राह्मण के पुत्र की उम्र बढ़ाई। हे भगवान! जैसे तुम ने उस ब्राह्मणके लड़केकी उम्र बढ़ाई वैसे सबकी बढ़ाना।

७६. आशा-भगोती का व्रत

यह व्रत स्त्रियोंको श्राद्धों में ही क्वार वदी अष्टमीसे प्रारम्भ कर आठदिन तक करना चाहिये । आठ कुना को गोबर मिट्टी से चौका देकर आशा भगोती की कहानी सुने । फिर आठों कुनों पर आठ२ दूब,आठ२ पैसा, आठ२ चीटकी, एक-एक सुहाली तथा एक-एक फल चढ़ावे और ८-८ रोली की, ८ ८ मेंहदीकी तथा ८-८ काजलकी बिन्दी रखे । आठों कुनों पर १-१ दीपक भी जलावे । इस प्रकार नित्यप्रति ८दिन तक पूजा करे और कहानी सुने। आठवेंदिन एक एक सुहाग पिटारी आठों कुनों पर चढ़ावे और इसीदिन व्रत भी रखे । व्रत वाले आठवेंदिन ८ सुहाली का वायना काढ़कर सासुजीको देदे और स्वयं भी ८ सुहाली तथा फल एकसमय खाकर व्रत रखे। इसप्रकार यह ८ वर्ष तक करे । नवें वर्ष में उजमन करे।

आशा भगोती का उजमन

ऊपर लिखे अनुसार पहिले पूजा कर लेवे । ९ सुहाग पिटारी मँगावे जिसमें सुहाग की सभी बस्तुएँ होवें । फिर आठ सुहाग पिटारी तो आठों कुनों पर चढ़ा देवे और एक सुहाग पिटारी अपनी सासुजीको पायँ लगकर देदेवे । आठों सुहाग पिटारियों में एक-एक सुहाली भी रख देवे । इसके बाद आठ सुहागिन ब्राह्मणियों को भोजन कराकर प्रत्येक को एक-एक सुहाग पिटारी व दक्षिणा दे देवे । आशा भगोती की पूजा करने के बाद कहानी सुने ।

आशा भगोती की कहानी

एक हिमाचल नामका राजा था, उसके दो लड़कियाँ थीं। एक का नाम गौरा तथा दूसरी का नाम पार्वती था। एक दिन राजा ने उन दोनों लड़कियों से पूछा कि तुम किसके भाग्य का खाती हो ? इस पर पार्वती ने कहा--मैं अपने भाग्यका खाती हूँ तथा गौरा बोली-मैं आपके भाग्य का खाती हूँ। यह सुनकर राजाने अपना पुरोहित बुलाया और उससे कहा-कि पार्वती के लिये कोई भिखारी वर तथा गौरा के लिये किसी राजकुमार की तलाश करो। पुरोहित राजा की आज्ञानुसार वर की तलाश करने लगा। एक स्थान पर शिवजी भिखारी के रूप में बैठे हुये थे। उस भिखारी से पुरोहित ने पार्वती का सम्बन्ध तय कर दिया और एक वहुत सुन्दर राजकुमार से गौरा का विवाह तय कर दिया। गौरा की जब बरात आई तो राजा ने उसका खूब आतिथ्य सत्कार किया और बहुत सा दहेज दिया किन्तु जब पार्वतीकी बरात आई तो राजा ने उसका कुछ भी सत्कार नहीं किया केवल कन्यादान लेकर पार्वती को विदा कर दिया। शिवजी पार्वती को साथ लेकर कैलाश पर्वत आ गये। पीछे जब पार्वती जहाँ कदम रखें वहीं की घास जल जाय। यह देखकर शिवजी ने पण्डितों को बुलाया और इसका कारण पूछा। तब पण्डितों ने बताया कि पार्वती जी और इनकी भाभियाँ आशा-भगोती का ब्रत करती थीं। इनकी भाभियों ने तो पीहर (माँ के) जाकर उजमन ब्रत किया किन्तु

इन्होंने उजमन नहीं किया। यदि पार्वतीजी भी माँ के जाकर व्रत और उजमन करें तो सब दोष दूर हो जायगा। यह सुन कर शिवजी और पार्वती खूब कपड़े गहने पहन कर पार्वती जी के पोहर चलने को तैयार हुए। रास्ते में इन्होंने देखा कि एक रानीके बच्चा होने वाला है। वह बहुत कष्ट में पड़ी है। यह देखकर पार्वतीजी शिवजी से बोलीं कि हे नाथ! बच्चा होने में बहुत कष्ट होता है अतः तुम मेरी कूख बन्द करदो। शिवजीने कहा-तुम कूख बन्द मत करवाओ अन्यथा पीछे बहुत पछिताओगी। आगे चले तो फिर देखा कि एक घोड़ी के बच्चा होने वाला है। वह भी बहुत कष्ट में है। यह देखकर पार्वतीजी शिवजीसे हठ पकड़ गईं कि मेरी तो कूख बन्द करदो तभी आगे चलूँगी। बच्चा होने में बहुत तकलीफ होती है। शिवजी ने पार्वतीजी को बहुत समझाया परन्तु जब वह नहीं मानी तो शिवजी ने पार्वतीजीकी कूख बन्द करदी। तब वे दोनों बहुत से आभूषण पहन कर आगे चले। उधर गौरा ससुरालमें बहुत दुःखी थीं। जब पार्वतीजी अपने पीहर पहुँची तो उन्हें एकाएक माता-पिता कोई भी न पहिचान सका। बाद में उन्हें देखकर राजा-रानी बहुत खुश हुए। राजा ने फिर पार्वती से पूछा कि तू किसके भाग्य का खाती है। पार्वती ने कहा मैं अपने भाग्य का खाती हूँ। फिर पार्वती अपनी भाभियों के पास गईं तो देखा कि वे आशा भगोतीका व्रत और उजमन कर रही हैं। यह देखकर पार्वतीने भाभियों से कहा कि मेरे उजमन को कोई

भी तैयारी नहीं है। नहीं तो मैं भी उजमन और व्रत करती तब भाभियों ने कहा—तुम्हारे क्या कमी है। शिवजी स्वयं ही सारी चीजों की तैयारी कर देंगे। उनसे तो केवल कहने की ही देरी है। तब पार्वतीजी ने शिवजी से कहलवाया कि मुझे उजमन और व्रत की तैयारी करनी है। तब शिवजी ने पार्वती के पास मुन्दड़ी भेज दी और कहा-इससे जो चाहोगी वही काम हो जावेगा। पार्वती जी ने वह मुन्दड़ी लेली। इससे सभी समान की तैयारी फौरन ही होगई। नौ सुहाग पिटारी आगईं यह देखकर भाभियों ने पार्वती से कहा कि हम तो ८ महीने से तैयारी कर रही हैं फिर भी इतनी तैयारी नहीं हो पाई। तुमने इतनी जल्दी सब तैयारी करली। फिर सबने खूब धूम-धाम से उजमन और व्रत किया। फिर राजा ने शिवजी को भोजन करने के लिये बुलाया और उन्हें खूब मिठाई और सुन्दर २ भोजन कराये। यह देख सब स्त्री पुरुष कहने लगे कि पार्वती को भिखारीके लिये दिया किन्तु वह तो अपने ही भाग्य से राज्य कर रही है। जब शिवजीने भोजन करना शुरू किया तो उन्होंने इतना खाया कि पूरी रसोईमें सिर्फ पतली सब्जी को छोड़कर कुछ भी न बचा। पीछे पार्वतीजी वही सब्जी खाकर पानी पीकर शिवजी के साथ घर के लिये चलदीं। रास्ते में धूप के कारण वे दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये तब शिवजी ने पार्वतीजी से हँस-कर पूछा कि तुम क्या खाकर आई हो। पार्वती जी बोलीं-जो आपने खाया वही मैंने खाया। शिवजी यह बात जानते

हो थे कि पार्वतीजी ने केवल सब्जी खाई है। इसपर शिवजी को हँसी आगई और बोले-कि तुम तो सिर्फ सब्जी खाकर और पानी पीकर आई हो तब पार्वतीजी बोली-महाराज! आपने सब बात खोल दी। अब आगे कोई बात मत खोलना। मैंने हमेशा ससुराल की इज्जत पीहर में रक्खी और पीहर की इज्जत ससुराल से रक्खी। उठकर जब आगे चले तो सूखी घास पर पैर पड़ते ही वह हरी हो गई। जब और आगे बढ़े तो देखा कि उसी घोड़ी के पास उनका बच्चा खेल रहा है। यह देखकर पार्वतीजी बोलीं-महाराज! मेरी भी कूख खोल दो। तब शिवजीने कहा-मैंने तो पहले ही बहुत मना किया था कि कूख बन्द मत कराओ। अब कैसे खोलें। जब वे दोनों और आगे बढ़े तो देखा कि रानी यमुना पूजन के लिये जारही हैं। यह देख पार्वतीजी ने पूछा—महाराज! यह क्या है। शिवजी ने कहा-यह वही रानी है जो कष्ट में पड़ी थी! इसके लड़का हुआ है तब तो पार्वतीजी शिवजी से हठ पड़ गईं कि मेरी भी कूख खोलो। पार्वती की हठ देखकर शिवजी ने मैल से गणेशजी को बनाया। सब नेग-चार करके पार्वतीजी से यमुना पूजन कराया। फिर पार्वती बोलीं मैं तो सुहाग बाटूँगी। यह बात सब जगह फैल गई कि पार्वती जी सुहाग बाटेंगी, जिसको लेना हो ले जावे। यह सुन साधारण से मनुष्य तो दौड़ २ कर सुहाग ले आये ब्राह्मणी और वैश्य स्त्रियाँ सुहाग लेने देर से पहुँच पाईं। तब तो शिवजी पार्वतीजी से बोले-इनको भी सुहाग दो।

तब पार्वती बोलीं मैं तो सब सुहाग बाँट चुकी। इस पर शिवजी ने कहा-इनको तो सुहाग देना ही होगा। तब उन स्त्रियों को थोड़ा २ सभी को सुहाग दे दिया। इस प्रकार सबको सुहाग मिल गया। हे पार्वतीजी! जैसे सबको सुहाग दिया वैसे हमको भी देना।

७७. इन्दिरा एकादशी

यह एकादशी क्वारवदी एकादशी को आती है। इसदिन शालग्राम की पूजा करनी चाहिए और पूरे दिन व्रत रखना चाहिये। व्रत रहने वाले पहले स्वयं स्नान करें फिर शालग्राम की पिण्डी को पंचामृत से स्नान कराकर वस्त्र पहिनावें भोग लगावें और आचमन कराकर पुनः गंगाजल या यमुना जलसे स्नान करावें और पूजाकर आरती उतारें। ब्राह्मणों को भोजन करावें और पंचामृत को बाँट देवें, ब्राह्मणों को भोजन के बाद दक्षिणा देवें और आशीर्वाद लेकर विदा करें। इसदिन शालग्रामजी की मूर्ति पर तुलसी के दल अवश्य चढ़ावें। इसप्रकार जो व्रत धारण करते हैं वे अपने करोड़ों पितरों का उद्धार कर स्वयं स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं।

इन्दिरा एकादशी की कहानी

एक समय की बात है कि एक इन्द्रसेन नाम के राजा महिष्मती नगरी में राज्य करते थे। उनके माता पिता का शरीर छूट चुका था। एकदिन राजा इन्द्रसेन को स्वप्न हुआ कि उसके माता-पिता यमलोक में पड़े यातना भोग रहे हैं। जब उसकी आँखें खुलीं तो उसे स्वप्न की बात याद आई

और उसे यादकर दुखित होने लगा और उनको यमलोक से निकालने के उपाय सोचने लगा। एकदिन उसने मन्त्री को बुलाया और स्वप्न का सारा हाल कह सुनाया। मन्त्री ने ब्राह्मणोंको बुलाकर इसका उपाय पूछने का आग्रह किया। राजाने मंत्री की सलाह मानली और अपने राज्य के सभी ज्योतिषियों और विद्वानों को बुलाया।

राजा ने कहा-हे ब्राह्मणों एवम् ज्योतिषियो! मैंने एक स्वप्न देखा कि मेरे माता-पिता यमलोक में पड़े हैं। अतः उन्हें स्वर्ग पहुँचाने का कोई उत्तम उपाय बताओ। यह सुन कर ब्राह्मणों ने कहा–हे राजन्! यदि आप क्वार के वदी पक्ष की इन्द्रा एकादशी को अपने कुटुम्ब सहित व्रत धारण करें तो आपके माता पिता की मुक्ति हो सकती है। उसदिन आप शालग्राम की पूजा करो, उन पर तुलसी दल चढ़ाओ ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराओ और दक्षिणा देकर आशीर्वाद प्राप्त करो। इससे तुम्हारे माता-पिता स्वर्ग में जा सकते हैं। रात्रिमें मूर्तिके पास ही शयन करना। इतना सुनकर राजा ने ब्राह्मणों और ज्योतिषियों को दान देकर विदा किया। जब इन्दिरा एकादशी आई तब राजानेविधि पूर्वक व्रत रखा और रात्रि को मन्दिर में ही सोया। जब वह सो रहा था तब भगवान विष्णु ने उसे स्वप्न में दर्शन दिये और कहा-हे राजन्। तुम्हारे व्रत के प्रतापसे तुम्हारे माता-पिता स्वर्गमें पहुँच गये हैं अब तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। सुबह जब राजा की नींद खुली तो उसने सब

हाल अपने परिवार को सुनाया । इसीदिन से इस व्रत की महिमा बढ़ गई । हे इन्दिरा एकादशी—जैसे तैने राजा के माता,पित का उद्धार किया वैसे सबका करना ।

७८. पितृ-विसर्जन अमावस्या

क्वार पक्षकी अमावस्या ही पितृ विसर्जन की अमावस्य कही जाती है । इसदिन ब्राह्मणों को भोजन कराने से पितर तृप्त हो जाते हैं और जाते समय वे अपने पुत्रों को आशीर्वाद देकर जाते हैं ।

इसदिन शाम को दीपक जलाने के समय दरवाजे पर पूड़ियाँ आदि खाने के पदार्थ रख देते हैं और दीपक भी जलाकर रख देते हैं । इसका कारण यह है कि पितर जाते समय भूखे न जावें और दीप जलाने का अर्थ होता है पितरों को जाने के लिये रास्ता साफ दिखाई दे । दीप जलाने के बाद पितरों की इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये——

दोहा—हम अज्ञानी पुरुष हैं, बात न समझें कोय ।
बुरा कभी मानो मती, दुरगुण कोई होय ।।
सेवा कुछ कींनी नहीं, दीना नहिं कुछ ध्यान ।
गलती की माफी करो, मुझे जान अज्ञान ।।
दीप ज्योति हमने करी, लीजो पंथ निहार ।
भूखे गर होवो पितर, पूड़ी करो अहार ।।
नमस्कार पुन पुनि करू ँ, रखियो हमरो ध्यान ।
हस्त शीश धरते रहो, तुम हो कृपा निधान ।।

७९. नवरात्रि

नवरात्रि का पूजन तथा व्रत क्वारसुदी प्रतिपदासे प्रारम्भ

होकर क्वार सुदी नवमी तक चलता है। इस प्रकार नौदिन तक लगातार व्रत रखाजाता है। इन दिनों भगवती दुर्गा का पूजन करना चाहिये और दुर्गा-सप्तशती का नवमी तक

पाठ करवाना चाहिये। केवल एकसमय शामको भोजन करना चाहिए। बहुत से व्यक्ति ९ दिन तक केवल जल या लौंग के जोड़े पर ही निर्भर रहते हैं। यह व्रत शक्तियोंके सब व्रतों में ऊँचा एवम् महान फलदायक माना गया है। आठवें दिन दुर्गा अष्टमी मनाई जाती है। बहुत से व्यक्ति दुर्गाअष्टमी पूजते हैं तो बहुतसे नवमी के दिन दुर्गा का पूजन करते हैं।

❀ दुर्गा स्तुति ❀

द्वार पै पुकारो मैं अनहद बजाय बाजो,
दर्शन देउ श्रीमात अर्जी एक मेरी है।

भक्तन के तारन को निवाभ भूमि माँहि कीयो,
पंडन दुःख खंडन को करी नहिं देरी है ॥
कहाँलौं बखानूँ मात भक्त धाँधू उवार दीने,
मेरी वेर श्रीमात भई क्या अवेरी है ॥
'बांके' पै बने न मात सेवा कोई,
सेवा बिन तारो श्री दुर्गेमात मेरी है ॥

(सर्वदेव स्तुति से)

८०. अशोक व्रत

यह व्रत क्वारसुदी प्रतिपदाको किया जाता है। इसदिन अशोक के वृक्ष की पूजा करनी चाहिये। व्रत धारण करने वाले अशोक के वृक्ष को घी, गुड़, हल्दी, रोली, कलाया आदिसे पूजें और जलसे अर्घ्य देवें। यह नियम १२ वर्षतक करना चाहिये। बारह वर्षों के बाद अशोक का एक सोने का वृक्ष बनवायें और उसका पूजन करके अपने कुल-गुरु को समर्पित करदें। जो मनुष्य इसप्रकार व्रत धारण करते हैं वे अन्तमें शिवलोक में प्रतिष्ठा का स्थान पाते हैं और इस लोक में शिवजी उनके सभी मनोरथ पूरे करते हैं।

८१. दुर्गाष्टमी

यह त्यौहार क्वारसुदी अष्टमी को आता है। इसदिन दुर्गादेवी की पूजा की जाती है। इसदिन दुर्गादेवी को पूर्ण आहुती दी जाती है। भगवती दुर्गा का उबाले हुये चने, हलुआ, पूड़ी, खीर, पूआ आदि का भोग लगाया जाता है। बहुतसे व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के लिये हवन आदि भी करते हैं। जहाँ शक्तिको अधिक मान्यता दी जाती है

वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इसदिन कन्या लाँगुरा जिमावे। देवीजी की ज्योति करे। चित्र के अनुसार देवीजी बनाकर समस्त सामिग्री से पूजा करे।

दुर्गाष्टमी की कथा

हिन्दुओंके प्राचीन शास्त्रोंके अनुसार दुर्गादेवी नौ रूपोंमें प्रकट हुई हैं। उन सब रूपोंकी पृथक-पृथक कथा इसप्रकार है-

१. महाकाली

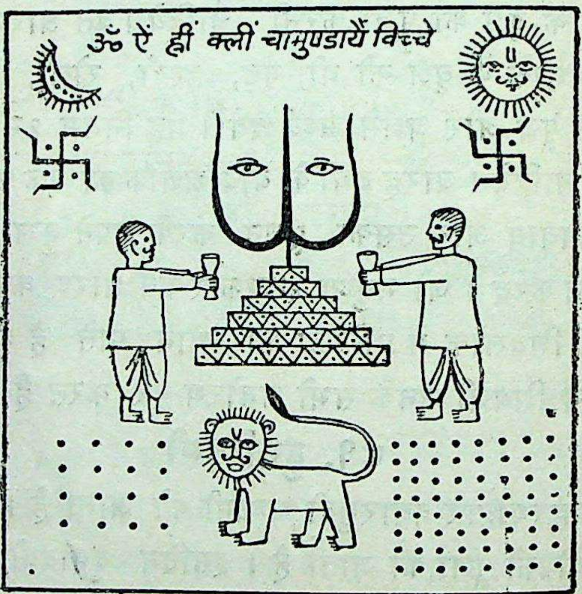

देवी पूजन

एकबार जबपूरा संसार प्रलयसे ग्रस्त होगया था चारोंओर पानी ही पानी दिखाई देता था। उससमय भगवान विष्णुकी नाभि से एक कमल उत्पन्न हुआ। उस कमल से ब्रह्माजी

निकले। इसकेअलावा भगवान नारायणके कानोंसे से कुछमैल भी निकला,उसमैलसे कैटभ और मधु नामके दो दैत्य बनगये। जब उन दैत्योंने चारों ओर देखा तो ब्रह्माजी के अलावा उन्हें कुछभी दिखाई नहीं दिया। ब्रह्माजीको देखकर वे दैत्य उनको मारने दौड़े। तब भयभीत हुए ब्रह्माजीने विष्णु भगवान की स्तुति की। स्तुतिसे विष्णु भगवानकी आँखों में जो महामाया योग निद्राके रूपमें निवास करती थी वह लोप होगई और विष्णु भगबानकी नींद खुलगई। उनके जगते ही वे दोनों दैत्य भगवानविष्णुसे लड़ने लगे। इसप्रकार पाँचहजार वर्षतकयुद्ध चलतारहा। अन्तमें भगवानकी रक्षा के लिये महामाया ने असुरोंकी बुद्धीको बदल दिया। तब वे असुर विष्णु भगवानसे बोले,हम आपके युद्धसे प्रसन्न हैं जो चाहो सो वर मांगलो। भगवानने मौका पाया और कहने लगे-यदि हमें वर देनाहै तो यह वर दो कि दैत्यों का नाश हो। दैत्यों ने कहा-ऐसा ही होगा। ऐसा कहते ही महाबली दैत्यों का नाश हो गया। जिसने असुरोंकी बुद्धिको बदला था वह "महाकाली" थी।

२. महालक्ष्मी

एकसमय महिषासुर नामका एक दैत्य हुआ। उसने समस्त राजाओंको हराकर पृथ्वी और पाताल पर अपना अधिकार कर लिया। जब वह देवताओं से युद्ध करने लगा तो देवता भी उससे युद्धमेंहारकर भागने लगे। भागते२वे विष्णुभगवान के पास पहुँचे और उस दैत्य से बचने के लिये स्तुति करने लगे। तब भगवान विष्णु और शंकरजी के शरीर से एक

तेज निकला जिसने महालक्ष्मी का रूप धारण किया इन्हीं महालक्ष्मी ने महिषासुर दैत्य को युद्ध में मारकर देवताओं का कष्ट दूर किया।

३. महासरस्वती या चामुण्डा

एक समय शुंभ-निशुंभ नामके दो दैत्य बहुत बलशाली हुए थे। उनसे युद्धमें मनुष्य तो क्या देवता तक हारगये। जब देवताओं ने देखा कि अब युद्ध में जीत नहीं सकते। तब वे स्वर्ग छोड़कर भगवान विष्णु की स्तुति करने लगे। उस समय भगवानके शरीर में से एक ज्योति प्रकट हुई। जो कि महा सरस्वती थी। उसका रूप देखकर वे दैत्य मुग्ध होगये और अपना सुग्रीव नाम का दूत उस देवी के पास अपनी इच्छा प्रकट करते हुए भेजा। उस दूतको देवीने वापिस कर दिया। तब उन्होंने अपना धूम्राक्ष नामक सेनापति भेजा जो अपनी सेना सहित देवी द्वारा मार दिया गया, फिर चण्ड-मुण्ड लड़ने आया। वह भी मारा गया। इसके बाद रक्त बीज लड़ने आया, जिसकी एक रक्तकी बूँद जमीन पर गिरने से एक वीर पैदा होता था। उसे भी देवी ने मार गिराया। फिर चामुण्डा से शुम्भ-निशुम्भ दोनों लड़ने आये और मारे गये। सब दैत्यों की मृत्यु के बाद देवता बहुत प्रसन्न हुए।

४. योगमाया

जब कंस ने वसुदेव के छः पुत्रों का वधकर दिया था। और सातवें गर्भमें शेषनाग बलरामजी आये जो रोहिणी के गर्भमें प्रवेश होकर प्रकट हुये। तब आठवाँ जन्म कृष्णजीका

हुआ। साथही साथ गोकुल में यशोदाजी के गर्भसे योगमाया का जन्म हुआ जो बसुदेवजीके द्वारा कृष्णके बदले मथुरामेंलाई गई। जब कंस उस योगमाया कन्या स्वरूपको मारने लगा तो उस योगमाया ने हाथसे छूटकर आकाश में जाकर देवी का रूप धारण किया। इसी योगमायाने कृष्णके साथ योगविद्या और महाविद्या बनकर कंस आदि असुरों को मरवाया था।

५. रक्त दन्तिका

एकबार पृथ्वी पर वैप्रचित्ति नाम के असुर ने बहुत से कुकर्म किये। उसने मनुष्य और देवताओं को बहुत दुःख दिया। उस समय दुर्गादेवी ने रक्त-दन्तिका नाम से अवतार लिया और वैप्रचित्ति आदि दैत्यों का संहार किया। इस देवी ने दैत्योंके खून का पान किया। इसी कारण इस देवी का नाम रक्त-दन्तिका विख्यात हुआ।

६. शाकम्भरी

एक समय पृथ्वीपर सौ वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। इसकारण पृथ्वीपर त्राहि२ होने लगी। सब प्रजा अन्न जलके बिनामरने लगी। उसी समय मुनियोंने मिलकर भगवती की आराधना की। तब जगदम्बेने शाकम्भरी नाम से अवतार लिया और जल वर्षा करके पृथ्वी केसमस्त जीवों को जीवन दान दिया।

७. दुर्गा

एक समय भारतवर्ष में दुर्गम नामका दैत्य हुआ। उसके डरसे पृथ्वी पाताल और स्वर्ग में निवास करने वाले सभी भयभीत रहते थे। उस समय भगवानकी शक्ति ने दुर्गा या

दुर्गसेनी नाम से अवतार लिया और दुर्गम दैत्य को मारकर ब्राह्मणों और हरि भक्तों की रक्षा की। दुर्गम दैत्य को मारने कारण इनका नाम दुर्गादेवी प्रसिद्ध हो गया।

८. भ्रामरी

एकबार एक महा अत्याचारी अरुण नामका असुर पैदा हुआ। उसने स्वर्ग में जाकर उपद्रव करना शुरू कर दिया। देवताओंकी पत्नियोंका सतीत्व नष्ट करने की कुचेष्टा करने लगा। अपने सतीत्वकी रक्षा करने के लिये देवियों ने भौंरों का रूप धारण कर लिया। तब उन देव-पत्नियों की रक्षा के लिये देवी दुर्गाने भ्रामरी का रूप धारण करके उस असुर को उसकी सेना सहित मार कर उनके सतीत्व की रक्षा की।

९. चण्डिका

एकबार पृथ्वीपर चंड और मुण्ड नाम के दो दैत्य पैदा हुये। उन्होंने संसार में अपना राज्य फैलाया यहाँ तक कि स्वर्गमें जाकर देवताओं को भी हराकर स्वर्ग पर भी अपना अधिकार कर लिया। इससे देवता बहुत दुःखी हुये। तब देवी चंडिकाका जन्म हुआ जिसने चंड और मुंड नामके दैत्यों को मारकर देवताओं को पुनः स्वर्गलोक का राज्य दिया।

आरती श्रीज्वाला काली देवी की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नरियल ले ज्वाला तेरी भेंट करे॥ टेक॥
सुन जगदम्बा कर न बिलम्बा सन्तन को भण्डार भरे॥
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे॥
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करो।

चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परो।।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर तब तब आप सहाय करो।। १ ।।
बार बार तें सब लग मोहो, तरुणी रूप अनेक धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, भार्या होकर भोग करे।।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।। २ ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सहस्र फल, लिये भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र धरे। सन्तन०।। ३ ।।
बार शनिश्चर कुमकुम वरणों जब लुंकड़ को हुकम करे।
खड्ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिये, रक्त बीज को भस्म करे।।
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दले। सन्तन० ।।४।।
आदि अवतार आपहो वीरा, अपने जन को कष्ट हरे।
कुपित होयकर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।।
जब तुम देखो दया रूप होय, पलमें सकट दूर करे। सन्तन०।। ५ ।।
सौम्य स्वभाव धर्‌यौ, मोरि माता, जनकी अरज कबूल करे।
सिंह पीठ पर चढ़ो भवानी, तीन भुवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधु वर भेंट धरे। सन्तन०।। ६ ।।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शिव शङ्कर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चमर कुवेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मात भवानी, अटल भुवनमें राज्य करे। सन्तन०।।७।।

८२. दशहरा (विजया-दशमी)

यह त्यौहार क्वारसुदी दशमीकोमनाया जाता है। इस दिन क्षत्रिय अपने हथियारों का पूजन करते हैं। वैश्य अपने बहीखातों का पूजन करते हैं इससे २०-२१ दिन पहिले से ही रामलीला प्रारम्भ होजाती है। इसदिन किसी बड़े मैदान में लंकापति रावण तथा कुम्भकरश, आदि के पुतले जलाकर आतिशबाजी छोड़ते हैं। इसप्रकार भगवान राम की याद को दुहराते हैं। इसदिन अपराजिता देवीकी पूजा करते हैं।

इसदिन घरोंमें भी गेरू से दशहरा रखकर जल, रोली, चावल से पूजा करें। फूलमाला और दक्षिणा चढ़ायें। देवी

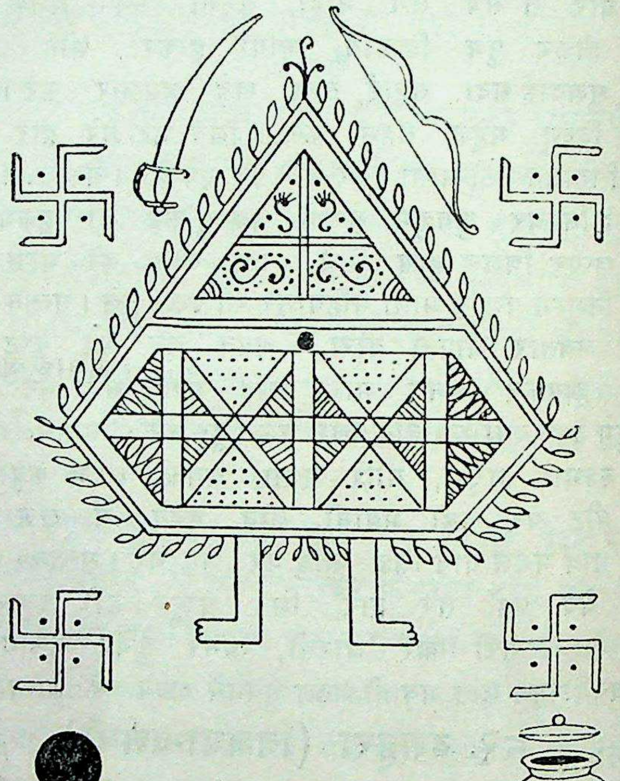

दशहरा इस प्रकार बनाओ

पूजनमें केला, १। सेर चावल, मूली, गुवारफली चढ़ावें और दीपक, धूप से आरती करें। दशहरा के ऊपर जो दो गोबर की हाँड़ी रखें उनमें से एक में तो एक रुपया रखें और दूसरी में फूल, रोली, चावल रखकर दोनों हाँड़ियों को ढक दें।

फिर परिक्रमा देकर दंडवत करें। थोड़ी देर बाद फिर जिस हाँड़ीमें रुपया रखा था उसे निकालकर अलमारीमें रख लेवें।

इस दिन सुन्दर पकवान बनावें। ब्राह्मणों को भोजन करावें। इसदिन जो भी नये कार्य किये जाते हैं उन सबमें विजय होती है। कहा जाता है इस दिन भगवान राम ने लंकापति रावण को मार कर विजय प्राप्त की थी। इससे इसका नाम विजया–दशमी पड़ा।

८३. पापांकुशा एकादशी

यह एकादशी क्वार सुदी एकादशी को मनाई जाती है। इसदिन भगवान विष्णु की समस्त सामिग्री से पूजा करनी चाहिये। इस दिन ब्राह्मणों को भोजन करावें। भोजन के बाद भूमि,गौ,अन्न,उपानह, छत्र आदि दान देकर विदा करें और आशीर्वाद लेवें। धनी आदमी,तालाब,बग़ीचा,धर्मशाला और प्याऊ बनवाते हैं। दिन में हरि का कीर्तन करें और रात्रिको भगवान की मूर्ति के पास शयन करें।

इस प्रकार जो ब्रत रखते हैं, भगवान उनके पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। यह एकादशी पापों को अंकुश के समान छेद देती है। इसीलिये इस एकादशी को पापांकुशा एकादशी नाम से पुकारते हैं।

पापांकुशा एकादशी की कहानी

एक समय विन्ध्याचल पर्वतपर एक महाक्रूर क्रोधन नाम का व्याध रहता था। उसने अपने जीवन पर्यन्त हमेशा जीव हिंसा, चोरी, लूट, मद्यपान, झूठ, कलह आदि घोर पातक

किये । जब उसका अन्त समय आया तब एक दिन पहिले यमराज बोला-दूतो ! क्रोधन नामके व्याधको कल यहाँ पर लाना है। यह बात दूतों ने क्रोधन व्याध को जाकर बता दी । यह सुनकर क्रोधन घबड़ाया हुआ महात्मा अंगिरा के यहाँ पहुँचा । अंगिरा ऋषि उसकी बात सुनकर बोले-कल क्वार सुदी एकादशी है, यह पापों को नाश करने वाली है। तू कल सच्ची भक्तिसे व्रत रख और भगवान विष्णु की पूजा यथा-विधिकर इससे तेरे सभी पाप नष्ट हो जायेंगे, उसने ऐसा ही किया । इसव्रत के प्रभाव से भगवान विष्णु के पार्षद उस व्याध को सुन्दर विमान पर बैठाकर देवलोक को ले गये । यमदूत हाथ मलते ही रह गये ।

८४. पद्मनाभ द्वादशी

यह व्रत क्वारसुदी द्वादशीको किया जाता है । इसदिन भगवान पद्मनाभ की पूजा करनी चाहिये । इसदिन भगवान जागनेके लिये अंगड़ाई लेते हैं और कमल पर बैठे हुये ब्रह्मा "ॐ कार" की ध्वनि करते हैं। सबसे पहिले भगवान की मूर्ति को स्नान करावें और वस्त्र पहिनाकर भोग लगावें। आचमन कराकर फूल, दीप, धूप, चन्दन आदि से आरती उतारें। ब्राह्मणों को भोजन करावें और वस्त्र स्वर्ण आदि दान देकर विदा करें। जो इस प्रकार व्रत करते हैं वे भगवान के श्वेत-दीप के प्राप्ति के अधिकारी होते हैं और मनवांछित फल प्राप्त करते हैं।

८५. वाराह चतुर्दशी व्रत

यह व्रत क्वार सुदी चौदस को किया जाता है। इसदिन भगवान वारह की पूजा करनी चाहिये। व्रत रखने वाले पहिले वाराह भगवान को स्नान करावें और भोग लगावें। आचमन कराकर आरती उतारें, ब्राह्मणों को भोजन कराकर और दान देकर विदा करें।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं उनकी भगवान वाराह भूत-प्रेतोंसे रक्षा करते हैं और अन्तमें वे दिव्यलोकको जातेहैं।

८६. शरद (कोजागरी, इदली) पूर्णिमा

यह पूर्णिमा क्वारके सुदीपक्षमें आती है। शरद पूर्णिमा से ही स्नान और व्रत प्रारम्भ हो जाते हैं। मातायें अपनी सन्तान की मंगल कामना के लिये व्रत रखती हैं और देवी, देवताओंको पूजती हैं। अनिष्ट निवारणके लिये टोना-टोटका करती हैं। अधिकतर टेसू और झाँझी शरद पूर्णिमा के दिन ही सिराये जाते हैं। शरद पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा, पृथ्वी के बहुत पास आजाता है। इसीलिये अमृत प्राप्त करने की इच्छा से शरद पूर्णिमा की रात्रि को खीर, घी और चीनी मिलाकर जमानेके लिये रखदेते हैं। इसदिन जमाये गये घी-खांड तथा खीर बहुत स्वादिष्ट लगते हैं तथा स्वास्थ्यके लिये बहुत लाभकारी हैं इसदिन चन्द्रमा की रोशनी में सुईमें धागा पिरोते हैं। इससे आँखों की रोशनी बढ़ती है। शरद पून्यों को रात्रि में घी, खीर रखकर दूसरे दिन खानी चाहिये।

इसदिन व्रत करके कहानी सुनें। एक पट्टे के ऊपर लोटा

में जल भरकर रख लें तथा एक गिलास में गेहूँ रख लें। दोनों पर रोली से स्वस्तिक (सतिया) काढ़कर चावल और दक्षिणा चढ़ावें और टीका लगालें। तेरह दाने गेहूँ के लेकर कहानी सुने। फिर गेहुँके गिलासका वायना काढ़कर ब्राह्मणी को देदें। लोटा के जल से रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य दे दें।

इसदिन भगवान-कृष्ण ने गोपियों के साथ-में रात्रि को महारास किया था। इसलिये इस पूर्णिमा का बृज में बहुत महत्व है। इस परम्परा को वृजके निवासी अब भी मानते हैं। आजके दिन ब्रज में जगह-जगह पर १५-१६ मंडलियाँ एक साथ महारास करती हैं।

इसदिनशंकरजीके पुत्र कार्तिकेयजीको भी पूजाकी जाती है। कुछ जगह पर भाईकी रक्षाके लिये उनकी बहिनेंव्रत रखतीहैं।

शरद पून्यों की कहानी

एक साहूकार था। उसके दो पुत्री थीं, जिनमें से एक

तो शरद पून्योंका पूरा व्रत रखती थी। दूसरी आधा ही व्रत रखती थी। जो आधा ब्रत रखती थी उसके जो सन्तान होती थी मरजाती थी और जो पूराब्रत रखती थी उसकी संतान जीवित रहती थीं। जो आधा व्रत रखती थी उसने पण्डितों से इसका कारण पूछा। तब पण्डितों ने बताया कि तू शरदपूनों का आधा व्रत रखती है। इसलिये तेरी सन्तान जीवित नहीं रहती है। जब उसने यह सुना तो वह पूराब्रत रखनेलगी परन्तु उसके लड़का होते होते ही मर गया। जब उसका लड़का मर गया तो उसने वह पीड़ापर सुला दिया और अपनी दूसरी बहिन के पास गई और उसे बुला लाई। जब वह आई तो उसने वही पीड़ा डाल दिया जिस पर वह मरा हुआ लड़का पड़ा था। लड़का उसके घांघरे के छूते ही जीवित हो गया। तब बड़ी बहिन बोली कि अगर मैं बैठ जाती तो यह मर जाता। तब उसकी बहिन बोली-बहिन! यह तो मरा हुआ था परन्तु यह तुम्हारे शरद पूनोंके व्रत के प्रभाव से जीवित होगया। उसकी यह बात सुनकर बड़ी बहिन बहुत खुश हुई। तभी से इस व्रत का महत्व बढ़ गया।

शरद पून्यों (पूर्णमासी) का उजमन

यदि कोई करवा पूनोंको ब्रत रखे तो वह १३ पूनों होने के बाद उजमन करे। उजमन में एक चाँदी की घण्टी में मेवा भरकर रोली, चावल से पूजकर और एक रुपया चढ़ाकर उस सबको सासुजी को पांय लगकर दे देवे। यदि कोई चुनड़ पून्योंके दिन ब्रत रखे तो इसी भाँति एक पून्यों करने के बाद

सासुजीको चुनड़ी दे देवे। यदि कोई चूड़ा पून्यों के दिन व्रत रखे तो वह तेरह पून्यों करने के बाद एक चूड़ा तो सासुजो को दे देवे और तेरह चूड़े ब्राह्मणियों को दे देवें।

कार्तिक मास के व्रत और त्यौहार

कार्तिक का महीना स्नान व्रत त्यौहार आदि के लिये प्रसिद्ध है। जितने धार्मिक कार्य कार्तिक मास में होते हैं उतने अन्य किसी मास में नहीं। कार्तिक प्रतिपदा से लेकर कार्तिक की पूर्णिमा तक महीना भर कुछ न कुछ लोकानुष्ठान होते ही रहते हैं। शरद ऋतु के प्रारम्भ होने के कारण उल्लास मय वातावरण इसी महीने से बनता है।

८७. कार्तिक स्नान एवं व्रत और पूजा

कार्तिक लगतेही पूर्णमासी से लेकर कार्तिक उतरनेकी पूर्णमासी तक रोजाना गंगाजी या यमुनाजी में स्नान करें। इसके बाद राधा-दामोदर, पथवारी, तुलसीजी, बड़-पीपल आदि की समस्त सामिग्री से पूजा करें। मन्दिर में जाकर भगवान की पूजा करे, परिक्रमा दे। शाम के समय तुलसीजी के और भगवान के गीत गावे तथा दीपक जलावे। अपनी समस्त इन्द्रियों को बस में रखे। इस मास में खूब दान पुण्य करना चाहिये। इससे सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

८८. तारा भोजन

कार्तिक लगते ही पूर्णमासी से लेकर एक माह तक नित्य प्रति व्रतकरे। रोजाना रात्रिको तारोंको अर्घ्यदेकर फिर स्वयं

भोजन करे। व्रतके आखिरीदिन उजमन करे। उजमनमें पाँच सीदे और पाँच सुराई ब्राह्मणों को दे तथा एक साड़ी व एक ब्लाउजपर रुपया रखकर अपनी सासुजीको पाँय लगकर देवे।

८९. छोटी साँकली

छोटी साँकली कार्तिक लगते ही पूर्णमासी से करे। उस दिन बिलकुल भी न खावे। फिर दो दिन भोजन करे इसके बाद एकदिन फिर भोजन न करे। इसके बीचमें यदि रविवार या एकादशी पड़जावे तो दो दिन तक बिलकुल न भोजन करे। इसप्रकार एकमाह तक यह क्रम चलता रहे। व्रत पूरे होने के दिन हवन तथा उजमन करे। तेतीस ब्राह्मणों को भोजन करावे और एक ब्राह्मण तथा ब्राह्मणी (पति-पत्नी) को भोजन करावे। फिर एक साड़ी और एक रुपया अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे।

९०. बड़ी साँकली

बड़ी साँकली पूर्णमासीसे करे। इसमें एकदिन भोजन बिलकुल न करे। फिर दूसरे दिन भोजन करे, फिर तीसरे दिन भोजन न करे। यदि बीचमें एकादशी या रविवार पड़जाय तो दो दिन तक भोजन न करे। इसप्रकार एक माह तक यह क्रम चलता रहे। उजमन आदि छोटी साँकलीकी तरहही करे।

९१. चन्द्रायण व्रत

यह व्रत कार्तिक लगते ही पूर्णमासीसे लेकर कार्तिक उतरते पूर्णमासी तक करे। रोजाना गंगा या यमुना स्नान कर भगवान विष्णु और तुलसीजीकी पूजा करे। अपने घरमें किसी

स्थानपर एक घी की अखंड दीपक पूरे महीने तक जलावे। दीपकके पासही नदीकी मिट्टीमें जौ या गेहूँ उगादे और एक तुलसीजी का गमला तथा भगवानकी मूर्ति रखकर नित्यप्रति उन सबकी पूजाकरे तथा ब्रत रखे। ब्रतके पहिले दिन शामको एकगिलास दूध या रस या एकछटाँक पिसेहुए बादाम खालेवे। दूसरेदिन इसकी दुगुनी मात्रा, तीसरे दिन तिगुनी, चौथे दिन चौगुनी मात्रा इसप्रकार क्रमश: पंद्रहवें दिन पंद्रहगुनी मात्रा भोजनमें ले लेवे। सोलहवें दिनसे फिर क्रमश: एक-एक मात्रा घटाता जाय अर्थात् सोलहवें दिन चौदह गुनी, सत्रहवें दिन तेरहगुनी। इसप्रकार महीनेके आखिरी दिन फिर वहीमात्रा रह जायगी जो मात्रा ब्रतके पहलेदिन भोजनमें ली थी। ब्रत के आखिरी दिन पूजा करनेके बाद ३६ ब्राह्मणियोंको भोजन करावे और सुहाग पिटारी देकर विदा कर देवे और साड़ी तथा एक रुपया अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे।

६२. तीरायत व्रत

कार्तिक उतरते ही नवमी, दशमी, एकादशी इन तीनों दिन ब्रत रखे। द्वादशी के दिन ३ ब्राह्मण और तीन ब्राह्मणियों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करले।

६३. करवा-चौथ

कार्तिक के कृष्णपक्ष की चौथ (चतुर्थी) को करवा-चौथ मनाई जाती है। सौभाग्यवती स्त्रियोंका यह बहुत ही महत्व पूर्ण ब्रत है। स्त्रियाँ इस ब्रत को पति के दीर्घजीवी होने के लिये करती हैं। इसदिन स्त्रियाँ चावलों को पीसकर दीवाल

पर "करवा-चौथ" रखती हैं जिसे "वर" कहते हैं। इस करवा-चौथ में पति के अनेकों रूप बनाये जाते हैं। तथा सुहाग की वस्तुएँ जैसे-चूड़ी,बिन्दी,बिछुआ, मेंहदी, महावर आदि बनाते हैं। इसके अलावा दूध देने वाली गाय, करुवा बेचने वाली कुम्हारी, महावर लगाने वाली नाईन, चूड़ी पहनाने वाली मनिहारिन, सातभाई और उनकी एक इकलौती बहिन, सूर्य, चन्द्रमा,गौरा,पार्वती आदि देवी देवताओं के भी चित्र बनाते हैं। स्त्रियों को इसदिन निर्जल ब्रत रखना चाहिये तथा रात्रि को जब चन्द्रमा निकल आवे तब उसे अर्घ्य देकर भोजन करना चाहिए। पीली मिट्टी की गौरा बनाकर उसकी पूजा करनी चाहिये।

करवा-चौथ का वायना और पूजन

इसदिन ब्रत रखें और एक पट्टे पर एक जल भरा हुआ लोटा रखें। वायना काढ़ने के लिये खाँड या मिट्टी का करुआ लें,करुए में गेहूँ और ढक्कन में चीनी भरलें। एक नगद रुपया रखें। रोली,चावल,गुड़ आदि से गणेशजीकी पूजा करें। रोलीसे करुए पर सतिया काढ़ें और १३ बिन्दी रखें। फिर १३ गेहूँकेदाने हाथमें लेकर कहानी सुनें। कहानी सुननेके बाद करुए पर हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवें। तेरह दाने गेहूँके और पानीका लोटा अलग रखलें। रात्रिको चन्द्रमाको अर्घ्य देवें। फिर भोजन कर लेवें। यदि बहिन या पुत्री कहीं बाहर रहते हों तो करुए में गेहूँ तथा ढक्कनमें चीनी भरकर और रुपया रखकर उसकेपास भेजदेवें।

बधायो [१]

कहाँ लगाय आऊँ तोइ, अरे नारियरे के विरवा॥
जे विरवा रामचन्द्र की सेजरिया
बहूअ सियाजी की गोद,अरे नारियरे के विरवा॥कहाँ....॥

बधायो [२]

धनि धनि हो कौशिल्या की कूँखि, जिन जाये रामचन्द्र से पूत॥
बधायो राजा दशरथ को, जिन दई ऐ अजुध्या में नीव॥
बधायो राजा दशरथ को, जिन मारे रावण के मान॥
बधायो राजा दशरथ को, जिन कीनो अजुध्या मैं राज॥

बधायो [३]

आजु दिन सोने को आयो महाराज॥
सोनेको सबुदिन रूपेकी रातें,सोनेको पलँग परेगो महाराज॥ आजु०॥
पहिले बधायो ससुर घर आयो सासुलिने लीयो भर गोद महाराज॥
आजु दिन सोने को आयो महाराज॥

करवा-चौथ की कहानी

एकसमय की बात है कि एक "करवा" नामकी पतिव्रता स्त्री अपने पतिके साथ नदी के किनारे के गाँव में रहती थी। एकदिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। स्नान करते समय वहाँ एक मगरने उसका पैर पकड़ लिया। वह मनुष्य करवा-करवा करके अपनी पत्नीको चिल्लाकर पुकारने लगा। उसकी आवाज को सुनकर उसकी पत्नी करवा भागी चली आई और आकर मगर को कच्चे धागेसे बाँध दिया। मगर को बाँधकर वह यमराज के यहाँ पहुँची और यमराज से कहने लगी-हे भगवन्! मगरने मेरे पतिका पैर पकड़लिया है। उस मगर को पैर पकड़ने के अपराधमें आप उसे अपने बल

से नरक में ले जाओ। यमराज बोले-अभी मगर की आयु शेष है। अतः मैं उसे नहीं मार सकता। इसपर करवा बोली-अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आपको श्राप देकर नष्ट कर दूँगी। यह सुनकर यमराज डरगये और उस पतिव्रता करवा के साथ आकर मगर को यमपुरी भेज दिया और करवा के पतिको दीर्घायु दी। उसीदिन से यह करवा चौथ मनाई जाती है और व्रत रखा जाता है। हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पतिकी रक्षाकी वैसे सबके पतियोंकी रक्षा करना।

गणेशजी (बिन्दायकजी) की कहानी

एक अन्धी बुढ़िया थी। जिसके एक लड़का व एक लड़के की बहू थी। घर बहुत गरीब था। वह बुढ़िया हमेशा गणेश जी की पूजा किया करती थी। गणेशजी उस बुढ़िया से कहते कि बुढ़िया माँ! तू जो चाहे सो माँगले। बुढ़िया कहती कि मुझसे तो माँगना नहीं आता। कैसे और क्या माँगू। तब गणेशजी कहते कि अपने बहू-बेटा से पूँछकर माँगले। तब बुढ़िया ने बेटा से पूँछा कि गणेशजी कहते हैं कि तू कुछ माँगले बता क्या मागूँ। बेटा ने कहा—धन माँगले। बहूसे पूँछा तो बहू ने कहा—नाती मांगलो। तब बुढ़िया ने सोचा कि ये तो अपने २ मतलब की चीज की कह रहे हैं। अतः उस बुढ़ियाने पड़ौसिनों से पूँछा तो पड़ौसिनों ने कहा कि बुढ़िया तू तो थोड़े दिन जीवेगी क्यों तो धन माँगे और क्यों नाती माँगे। तू तो आँख माँगले जिससे तेरी जिन्दगी आराम से कट जाय। उस बुढ़िया ने पड़ौसिनों की भी न

मानी और घरमें जाकर सोचा कि जिसमें बेटा बहू राजी हों वह भी माँगलूँ और अपने मतलब की चीज भी माँगलूँ। जब दूसरे दिन गणेशजी आये तो बोले-बुढ़िया जो चाहे सो माँगले। बुढ़िया बोली-यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे नौ-करोड़ की माया दें, निरोगी काया दें, अमर सुहाग दें, आँखोंकी रोशनी दें, नाती दें, पोता दें, और सब परिवार को सुख दें, और अन्तमेंमोक्षदें। तब्तो गणेशजी बोले-बुढ़िया माँ ! तूने तो हमें ठग लिया। खैर जो तूने माँगा है वह सब तुझे मिलेगा। यह कहकर गणेशजी अन्तर्ध्यान होगये। बुढ़िया मांको माँगे अनुसार सब कुछ मिलगया। हे गणेशजी महाराज ! जैसे तुमने उसबुढ़ियाको सबकुछ दिया वैसेसबको देना। हमकोभी देना।

करवा-चौथ का उजमन

उजमन करने के लिये एक थाली में तेरह जगह चार-चार पूड़ी और थोड़ा-थोड़ा सीरा रखले। उसके ऊपर एक साड़ी, ब्लाउज और रुपये जितना चाहे रखले। फिर उस थाली के चारों ओर रोली, चावल से हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर देदेवे। इसके बाद तेरह ब्राह्मणियों को भोजन करावे और उनको दक्षिणा देकर तथा उनके बिन्दी लगाकर उन ब्राह्मणियों को बिदा करे।

६४ होई आठें (अष्टमी) का व्रत

यह त्यौहार कार्तिक बदी आठें [अष्टमी] को मनाया जाता है। इसदिन बच्चों की माँ दिनभर व्रत रखती है। जिस 'वार'की दिवाली होतो है उसी 'वार' की अष्टमी होती

है। सायंकाल तारे निकलने के बाद दीवाल पर होई बना कर उसकी पूजा करे। ब्रत रखने वाली माताऐं कहानी सुनें। कहानी सुनने के समय एक पट्टे पर एक जल का लोटा

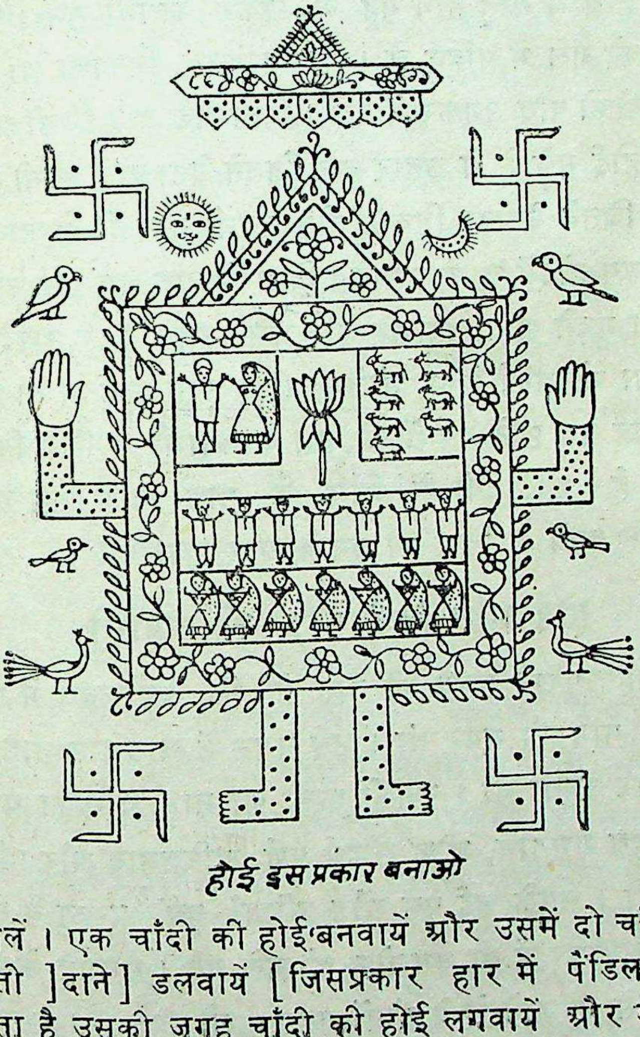

होई इस प्रकार बनाओ

रखलें। एक चाँदी की होई 'बनवायें और उसमें दो चाँदी के मोती]दाने] डलवायें [जिसप्रकार हार में पैंडिल लगा होता है उसकी जगह चाँदी की होई लगवायें और डोरे में

ही चाँदी के दाने डलवादें] फिर होई की रोली, चावल, दूध-भात से पूजा करें। जल के लोटा पर एक सतिया काढ़ कर एक कटोरी में सीरा और रुपये का वायना निकालकर तथा हाथ में सात दाने गेहूँ के लेकर कहानी सुनें। फिर होई को गले में पहिन लें। जो वायना निकाला था उसे सासुजीको पाँय लगकर दे देवें। दिवालीके बाद किसी अच्छे दिन होई गले में से उतार कर जितने बेटा होवें उतनी बार और जितने बेटोंका विवाह होवे उतनी बार दो-दो चाँदीके दाने उस होईमें डालता जावे। दिवाली बाद जब होई उतारे उसका गुड़से भोग लगाकर और जलके छींटे देकर रखदेवे। चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करे। इसदिन पेठा दान में दे। यह व्रत छोटे बच्चों की शुभ कामनाओं के लिये किया जाता है। कोई देवी के चित्र के साथ साथ सेही और सेही के बच्चे के चित्र भी बनावे और पूजा करे।

होई आठें (अष्टमी) की कहानी

बहुत पुराने समय की बात है कि भारतवर्ष में एक दतिया नाम का नगर था। उस नगर में चन्द्रभान नामका साहूकार रहता था। उसकी पत्नी का नाम चन्द्रिका था। वह बहुत गुणवान, शील सौंदर्य पूर्ण, चरित्रवान और पति-व्रता थी। उसके कई पुत्र और पुत्रियाँ हुईं परन्तु वे सब छोटी अवस्था में ही यमलोक को चले गये। सन्तान के इस प्रकार से मरजाने से वे दोनों बहुत दुःखी रहते थे। वे पति

पत्नी मन ही मन सोचा करते थे कि हमारे मरने के बाद इस वैभव का कौन अधिकारी होगा।

एक दिन दोनोंने निश्चय किया कि सब धन आदि को त्यागकर जंगल में वास किया जाय। तब दोनों दूसरे दिन सब घर बार भगवान के ऊपर छोड़कर जंगल के लिये चल दिये। जब चलते-चलते थक जाते तो रुक-रुक कर आगे बढ़ते। इस प्रकार चलते चलते वे बद्रिकाश्रम के समीप एक शीतल कुण्ड पर पहुँचे। वहां पहुँच कर वे दोनों अन्न जल छोड़कर मरने के लिये बैठ गये। इस प्रकार बैठे-बैठे उन्हें सात दिन बीत गये। सातवें दिन आकाश वाणी हुई कि तुम लोग अपने प्राण मत त्यागो। यह दुःख तुम्हें पूर्व जन्म के पाप के कारण ही हुआ। अतः अब तुम अपनी स्त्री से होई आठेंके दिन जो कार्तिक वदी आठेंको आती है, ब्रत रखवाना, इस ब्रतके प्रभाव से होई नाम की देवी प्रसन्न होगी और वह आपके पास आवेगी। तब तुम उससे अपने पुत्रों की दीर्घायु माँगना। ब्रत के दिन रात्रि को तुम राधा कुण्ड में स्नान करना तब चन्द्रभान की पत्नी चन्द्रिका ने बड़ी ही श्रद्धासे विधि-विधान के अनुसार ब्रत धारण किया, रात्रिको वे दोनों पति पत्नी राधाकुण्डमें स्नान करने गये जब साहूकार स्नान करके वापिस आया तो इसे होई नाम की देवी ने दर्शन दिये और साहूकार से वर माँगने को कहा-तब साहूकार ने वर मांगा कि मेरे बच्चे कम आयु में ही देवलोकको चले जाते हैं। अतः उनकी दीर्घायु होने का वरदान दो, होई

देवीने कहा-ऐसाही होगा। यह कहकर वह होई देवी अन्तःर्धान होगई। कुछ दिन बाद साहूकारके एक पुत्र हुआ जो बहुत विद्वान, बलशाली, प्रतापी तथा आयुष्मान हुआ।

होई का उजमन

यदि किसी स्त्री के बेटा हुआ हो या बेटे का विवाह हुआ हो तो होई का उजमन करे। एक थालीमें सात जगह चार-चार पूडी और थोड़ा २ सीरा रखे। इसके अलावा एक तीयल [साड़ी ब्लाउज] और रुपये रखे फिर थाली के चारों ओर हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे। तीयल तो सासुजी रखलें। सीरा पूरी का वायना बाँट देवे। यदि लड़की कहीं अन्य जगह हो तो उसके लिये वायना वहीं भेज दें।

९५. रमा या रम्भा एकादशी

यह ब्रत कार्तिकवदी एकादशी को किया जाता हैं। इस दिन भगवान केशव का समस्त सामिग्री से पूजन करें, भोग लगावें और आरती उतारें। आरती के बाद भोग को बाँट देवे। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराकर अपनी शक्ति के अनुसार दान दक्षिणा देवें और उन्हें विदा करें।

इस प्रकार जो ब्रत धारण करते हैं। उन्हें इस लोक और परलोक दोनों में सुख मिलता है। एकादशी की कृपा से स्वर्ग में रम्भा, रमा आदि अप्सरायें सेवा में रहती हैं।

रमा या रम्भा एकादशी की कहानी

एक समय भारतवर्षमें एक मुचुकुन्द नाम का दानी, धर्म-परायण और महाप्रतापी राजा हुआ था। उसको एकादशी

व्रत पर पूरा विश्वास था इसी कारण वह एकादशी व्रत धारण भी करता था। साथ ही साथ उसके राज्य में सभी नियम पूर्वक हर एकादशी का व्रत रखते थे। उसके एक चन्द्रभागा नाम की रूपवती, गुणवती, और धर्म-परायण पुत्री थी। बाप और बेटी दोनों ही भगवान केशव के पूर्ण भक्त थे उसकी पुत्री चन्द्रभागा की शादी राजा चन्द्रसेन के पुत्र सोभन के साथ हुई जो राजा मुचुकुन्द के ही पास रहता था। जब एकादशी आई तो सभी व्यक्तियों ने व्रत धारण किया। सोभन सुकुमार और कमजोर था परन्तु इसने भी व्रत धारण किया। सोभन व्रत की भूख को न सह सका। अतः एकादशी के दिन ही उसकी मृत्यु होगई। राजा-रानी और उनकी पुत्री बहुत दुःखी हुए।

सोभन को व्रत के प्रभाव से मंदराचल पर्वत पर स्थित देवनगर में निवास मिला। वहां उसकी सेवा में रंभादिक अप्सरायें थीं। एकदिन राजा मुचुकुन्द घूमता-घूमता मंदराचल पर्वत पहुँचा। तब उसने वहाँ अपने दामाद को देखा। जब वह घर आया तो उसने सारा हाल अपनी पुत्री को सुनाया। तब चन्द्रभागा ने अपने पिता से मंदराचल जाने की आज्ञा मांगी और वहाँ चली गई। वहां पर रमा रम्भा आदि अप्सरायें उन दोनों पति पत्नियों की सेवा करती थीं। इसप्रकार वे स्वर्ग के समान वहाँ पर सुख भोगने लगे।

९६. गोवत्स द्वादशी का व्रत

यह त्यौहार कार्तिक वदी द्वादशी को आता है। इसदिन गायों और बछड़ों की पूजा की जाती है।

व्रत रखने वाले इसदिन सुबह स्नान आदि करके गाय और बछड़ोंका पूजन करें। फिर उनको आटेके लोआ बनाकर खिलावें। इस दिन गायका दूध, गेहूँ की बनी वस्तुएें और भैंस, बकरी का दूध और कटे फल नहीं खावें। इसके बाद गोवत्स द्वादशी की कहानी सुनें। फिर ब्राह्मणों को फल दान में देवें और आशीर्वाद प्राप्त करें।

गोवत्स द्वादशी की कहानी

बहुत समय पहले की बात है। भारतवर्षमें एक सुवर्ण पुर नामक बहुत रमणीक नगर था। वहाँ देवदानी नामका राजा राज्य करता था। राजा बहुत धर्मात्मा,दानी और गौ-माताका सेवक था। उसके यहाँ एक गाय, बछड़ा और भैंस रहती थी। उस राजाके दो रानी थी। एकका नाम सीता और दूसरीका नाम गीता था। सीता भैंससेप्यार करतीथी और उसे अपनी सहेलीके समान प्यार करती थी। जबकि गीता गाय और बछड़ेसे प्रेम करती थी। वह गायको सहेली और बछड़े को अपने बच्चेके समान प्यार करती थी। एक दिन भैंस सीता से कहने लगी-हे रानी! गाय का बछड़ा होने से गीता रानी मुझसे द्वेष करती हैं। सीताने कहा-अगर ऐसी बात है तो मैं सब काम ठीक कर लूंगी। सीता ने उसीदिन गाय के बछड़े को काटकर गेहूँ की ढेरी में दबा दिया। इस बात का किसी को पता न चला। जब राजा खाना खाने गया तो उसके महलमें माँसकी वर्षा होने लगी। चारों ओर महल में मांस और रक्त दिखाई देने लगा। जो खाना रखा था वह पाखा-

ना बन गया । यह देखकर राजा बहुत चिन्ता में पड़ गया कि यह क्या हो रहा है । इसी समय आकाशवाणी हुई कि हे राजन् ! तेरी रानी सीता ने गाय के बछड़े को काटकर गेहूंकी ढेरी में दबा दिया है । इसी कारण यह सब हुआ है यह सुनकर राजा गुस्सा के मारे तिलमिला गया उसी समय दुबारा फिर आकाशवाणी हुई कि हे-राजन् ! कल गौवत्स द्वादशी है अतः भैंस को शहर से बाहर निकालकर तुम व्रत रखकर गाय और बछड़े को मन में विचार कर उनकी पूजा करना । गाय भैंस का दूध और कटे फल नहीं खाना । साथ ही गेहूँकी बनी कोई वस्तु भी न खाना । तब तेरा पाप दूर हो जायगा और बछड़ा भी जीवित हो जायगा । जब गाय सायँको आई तो वह भी बछड़ेके बिना बड़ी बेचैन हुई । दूसरे दिन राजा ने वैसा ही किया । पूजा करते समय जैसे ही बछड़ेको मनमें याद किया वैसे ही वह बछड़ा गेहूँ के ढेर से निकलकर बाहर आगया । यह देखकर राजा खुश हुआ और गोवत्स द्वादशी का व्रत रखने के लिये अपने पूरे राज्य में घोषणा करदी । हे गोवत्स द्वादशी माता ! जैसे तूने गाय के बछड़े को जीवित किया, वैसे सबके बच्चोंको जीवित रखना ।

९७. धन तेरस (धनवन्तरि जयन्ती)

यह त्यौहार दीवालीके आनेकी सूचनादेता है। यह कार्तिक माहके वदी पक्षकी तेरसको आता है । इसदिन से पहिले ही घरों को लीप-पोतकर तैयार कर लिया जाता है । इसदिन कहीं-कहीं दीप जलाने का भी माहात्म्य कहा गया है । उस

दिन अपने घर से कोई किसी को पैसा नहीं देता है। इस त्यौहार पर बाजार से नये वर्तन खरीदनेका भी बहुत महत्व है। इसी दिनसे घरोंमें लक्ष्मीका आवाहन किया जाता है।

इसीदिन धनवन्तरि वैद्य समुद्रमें से अमृतका कलशलेकर निकले थे। इसीलिये धनतेरसको धनवन्तरि जयन्ती कहते हैं।

धन-तेरस की कहानी

एकदिन विष्णु भगवान लक्ष्मीजी के साथ मृत्यु लोकमें घूम रहे थे। एक जगह भगवान कुछ सोचकर लक्ष्मीजी से बोले-मैं एक जगह जा रहा हूं,तुम यहीं पर बैठ जाओ लेकिन दक्षिण दिशा की ओर मत देखना। इतना कहकर भगवान विष्णु स्वयँ दक्षिण दिशाकी ओर ही चले गये। जब लक्ष्मी जीने देखा कि भगवान स्वयं तो दक्षिण दिशा की ओर गये हैं और मुझसे देखने को मना कर गये हैं। इसमें कोई न कोई भेद है। अतः इस भेद को जरूर देखना चाहिये। यह सोचकर लक्ष्मीजी दक्षिण दिशा की ओर देखने लगीं। उस समय उन्हें दक्षिण दिशामें पीली सरसोंका खेत दिखाई दिया। उसे देखकर लक्ष्मीजीकी आँखें ललचाई और उस खेत में जाकर अपना शृंगार किया। आगे और कुछ बढ़ी तो गन्ने का खेत देखा। गन्ना देखकर उस खेत में गन्ना तोड़कर चूसने लगीं। इतने में विष्णु भगवान् आये और लक्ष्मी को वहाँ देखकर बहुत क्रोधित हुए। दूसरे जब उनके हाथ में गन्ने देखे तो कहने लगे कि तुमने खेत में से गन्ने तोड़कर

बहुत बड़ा अपराध किया है। इसके बदले में तुमको इस गरीब किसान की १२ वर्ष तक सेवा करनी होगी।

यह सुनकर लक्ष्मीजी घबड़ागईं परन्तु जो बात भगवान् के मुखसे निकल गई वही उनको करनी थी। तब भगवान लक्ष्मीजी को छोड़कर क्षीर सागर में चले गये। लक्ष्मीजी भगवान की आज्ञा मानकर उस किसान के घर चली गईं और उस किसान की नौकरानी बनकर उसकी सेवा करने लगीं। जिसदिन से लक्ष्मी किसानके घरमें पहुँचीं, किसानका घर धन-धान्य से पूर्ण होगया। जब बारह वर्ष बीत गये तब लक्ष्मीजी जाने लगीं किन्तु किसान ने उन्हें जानेसे रोक लिया। जब विष्णु भगवान ने देखाकि लक्ष्मी जी नहीं आईं तो वह किसान के घर गये और लक्ष्मीजी से चलने के लिये कहने लगे,परन्तु किसान ने लक्ष्मीजी को नहीं जाने दिया। तब भगवान बिष्णु बोले-अच्छा,तुम अपने परिवार सहित गंगा स्नान के लिये जाओ और गंगाजी में इन ४ कौड़ियों को छोड़ देना। जब तक तुम वापिस नहीं आओगे। तब तक हम नहीं जावेंगे। किसानने ऐसाही किया। जब वह गंगाजीमें जैसे ही कौड़ी छोड़ने लगा वैसे ही गंगाजी में से चार हाथ निकले और चारों कौड़ियों को ले गये। जब किसान ने ऐसा देखा तो वह गंगाजी से कहने लगा-हे गंगा मैया! तेरे अन्दर से ये ४ हाथ किसके निकले। तब गंगाजी कहने लगीं-हे किसान! ये चारों हाथ मेरे ही थे। तू जो ये कौड़ियाँ मुझे भेंटके लिये लाया है किसने दी हैं? तब किसान

बोला-मेरे घर दो प्राणी आये हैं। उन्होंने ये ही कोड़ियां दी हैं। तब गंगाजी बोलीं-तेरे घर जो औरत रहती है वह लक्ष्मीजी हैं और जो आदमी आया है वह भगवान विष्णु हैं। तू लक्ष्मी को मत जाने देना नहीं तो तू दुबारा पहिले जैसा ही गरीब होजायगा। यह सुनकर वह गंगास्नान करके वापिस अपने घर आया। घर आकर भगवान से कहने लगा-मैं इनको घरसे नहीं जाने दूँगा। तब भगवान बोले-यह तो इनका दोष था अतः इनको मैंने दण्ड दिया। इनके दण्ड के १२ वर्ष पूरे हो गये इसलिये अब तो इन्हें जाना ही है। तब किसान बोला-मैं इन्हें नहीं जाने दूँगा। तब भगवान हँसकर कहने लगे-हे किसान ! लक्ष्मी बड़ी चञ्चल है ये आज नहीं तो कल तेरे घर से अवश्य चली जायगी। तुम तो क्या अच्छे-अच्छे लक्ष्मी को जाने से नहीं रोक पाये। इस पर किसान कहने लगा-परन्तु मैं नहीं जाने दूँगा।

इस बातको सुनकर लक्ष्मीजी बोलीं-हे किशान ! यदि तुम मुझे रोकना ही चाहते हो तो सुनो, कल तेरस है। अतः कल तुम घरको लीप-पोतकर साफ सुथरा रखना। रात्रिको घी के दीपक जलाकर रखना। तब मैं तुम्हारे घरमें आऊँगी। उस समय तुम मेरी पूजा करना परन्तु तुम्हें दिखाई नहीं दूँगी। किसानने कहा-अच्छा मैं ऐसाही करूँगा। इतना कहकर लक्ष्मी जी दशों दिशाओंमें फैलगईं और भगवान देखतेही रहगये।

दूसरे दिन किसान ने लक्ष्मीजी के बताये अनुसार ही कार्य किया। उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। इसके

बाद वह हरसाल पूजाकरता रहा। उसको देखकर और व्यक्ति भी पूजा करने लगे। हे लक्ष्मीजी! जैसे तुम उस गरीब किसान के आईं वैसे सबके आना। हमारे भी आना।

६८. रूप चतुर्दशी

यह चतुर्दशी कार्तिक मासके वदी पक्षमें चौदसको आती है। इसदिन भगवान कृष्ण की पूजा करनी चाहिए। भगवान कृष्ण रूप सौंदर्य को देते हैं। इसदिन व्रत भी रखा जाता है।

रूप चतुर्दशी की कहानी

एक समय भारतवर्ष में हिरण्यगर्भ नाम के नगर में एक योगिराज रहते थे। उन्होंने अपने मन को एकाग्र करके भगवान में लीन होना चाहा। अतः उन्होंने समाधि लगाई उनके शरीर में कीड़े पड़गये-बालों में छोटे-छोटे कीड़े लग गये। आँखों के रोओं और भौंहों पर जूँये जम गये। यह दशा उन योगिराज की होगई। इससे वह योगिराज बहुत दुःखी होने लगे। इतनेमें ही वहां नारदजी घूमते हुए, वीणा और खरताल बजाते हुए आगये। तब योगिराज बोले-हे भगवन्! मैं भगवान के चिन्तन में लीन होना चाहता था परन्तु मेरी यह दशा क्यों होगई? तब नारदजी बोले-हे योगिराज! तुम चिंतन करना जानते हो परन्तु देह-आचार का पालन नहीं जानते हो। इसलिये तुम्हारी यह दशा हुई है। तब योगिराज ने नारदजी से देह-आचार पूछा। तब नारदजी बोले-देह-आचार से अब कोई लाभ नहीं है। पहले तुम्हें जो मैं बताता हूं वह करना। फिर देह-आचार बता-

ऊँगा। नारदजी बोले-अब के कार्तिक के वदी पक्ष में चतुर्दशी आवेगी तो उसदिन तुम व्रत रखकर भगवान की पूजा करना। उस पूजा से तुम्हारा शरीर पहिले जैसा रूपवान हो जायगा। योगिराज ने ऐसा ही किया और उसका शरीर स्वर्ण के समान हो गया। उसी दिन से इसको रूप चतुर्दशी भी कहते हैं। हे भगवान! जैसा तुमने योगिराज को सुन्दर रूप दिया वैसा सबको देना, हमको भी देना।

९९. नर्क चतुर्दशी

यह चतुर्दशी कार्तिक वदी चौदस को आती है। इस दिन भगवान कृष्णकी पूजा करनी चाहिए। कहा जाता है इस दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। इसदिन निम्न मन्त्र पढ़कर भगवान पर फूल चढ़ाने चाहिये-

मंत्र—वसुदेव सुतं देव नरकासुर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दम् कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम्॥
दोहा–वसूदेव के पुत्र जो, नरकासुर के काल।
रखे देवकी पुत्र सम, सभी झुकावें भाल॥

इसप्रकार जो पूजा करते हैं, नरकको छोड़कर स्वर्गको जाते हैं।

नर्क चतुर्दशी को कहानी

बहुत समय पहलेकी बात है एक रन्तिदेव नाम का राजा हुआ था। वहपूर्व जन्ममें बहुत धर्मात्मा और दानी था। उस पुण्यके प्रताप से वह राजा हुआ। इस जन्म में भी उसने बहुत से पुण्य किये। जब उसका अन्त समय आया तो यमके दूत उसे लेने को आये। राजा ने पूछा- मैंने बहुत पुण्य किया है

इस पर भी मुझे यमदूत लेने आये हैं। यह देखकर वह राजा चिल्लाने लगा। यमदूत कहने लगे-हम तुम्हें छोड़ नहीं सकते परन्तु राजा तब भी उनके सामने गिड़गिड़ाया और नर्क जाने का कारण पूछने लगा। तब यमदूत बोले-हे राजन्! तुमने जो पुण्य दान आदि किये हैं उन्हें सारा ससार जानता है परन्तु तुमने जो पाप किया है उसे सिर्फ भगवान और धर्मराज ही जानते हैं। राजा बोला उस पापको मुझे भी बताओ जिससे उसका भी निवारण कर सकूँ। यमदूत बोले एक दिन तुम्हारे द्वार से एक ब्राह्मण भूखा चला गया था। इसलिये तुम्हें नर्क जाना पड़ेगा। नर्क जाने की बात सुनकर राजा बहुत गिड़गिड़ाया। तब यमदूत बोले—हे राजन्! तुम कोई भी वर माँग सकते हो परन्तु हम तुम्हें नर्क जाने से छोड़ नहीं सकते। राजा बहुत बुद्धिमान था। वह बोला मुझे मरने के बाद उसी वक्त मेरी आयु १ साल और बढ़ा दी जाय। यमदूत ने ऐसा ही हो, बिना सोचे कह दिया। इतना कहने के बाद जब दूतोंने सोचा तो वे अपने ऊपर पछताने लगे। वचन के अनुसार उन्होंने आयु एक साल और बढ़ा दी। इसके बाद यमदूत चले गये। राजाने ऋषियों को बुलाकर अपने पाप निवारण का उपाय पूछा। ऋषियों ने सोच विचारकर कहा-हे राजन्! तुम कार्तिक वदी चतुर्दशी को व्रत करना, भगवान कृष्ण की पूजा करना, ब्राह्मणों को भोजन कराना और दान देकर उनसे अपना अपराध कहकर क्षमा माँगना। तब तुम इस पाप से मुक्त हो जओगे।

जब कार्तिक वदी चतुर्दशी आई तब राजाने नियमपूर्वक व्रत रखकर भगवान कृष्ण की श्रद्धापूर्वक पूजा की। राजा की पूजा देखकर भगवान प्रसन्न हो गये। जब उसकी एक वर्ष की बढ़ाई हुई आयु बीती तब भगवान ने सुन्दर रथ भेजकर राजा को अपने लोक में बुला लिया और यमदूत देखते ही रह गये। हे कृष्ण! जैसे तुमने राजा का पाप दूर किया वैसे सबके पाप दूर करना।

१००. छोटी-दिवाली (छोटी दीपावली)

यह कार्तिक वदी चौदस के दिन मनाई जाती है। इस

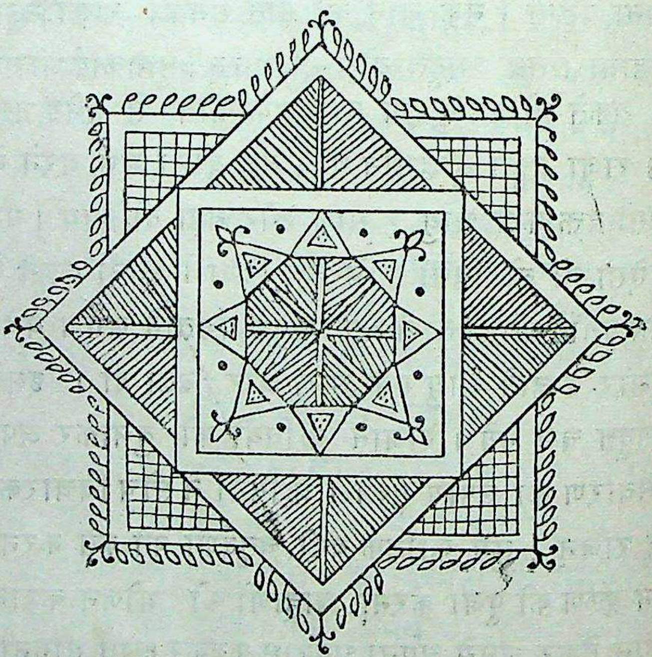

चौक इस प्रकार पूरिये

दिन सुबह उठकर आटा, तेल,हल्दी से उबटन करें फिर स्नान करें। भोजन करने से पहिले इस प्रकार पूजा करें। एक थाली में १ चौमुखा दीपक और १६ छोटे दीपक रखलें। उन में तेल और बत्ती डालकर जलालेवें। फिर रोली,खील,गुड़, धूप, अबीर, गुलाल, फूल आदि से पूजा करें। शामको पहले कारखाने की गद्दी की पूजा करें। फिर घर पर इसी भाँति पूजाकरें। पहले पुरुष फिर घरकी स्त्रियाँ पूजन करें। पूजनके पश्चात् सब दीपकों को घरमें अलग-अलग प्रत्येक स्थान पर रख दें। गणेश लक्ष्मी के आगे चौक पूरकर धूप-दीप करदें।

१०१. बड़ी-दिवाली (दीपावली)

कार्तिक मासकी अमावस्याके दिन दीपावली [दिवाली] मनाई जाती है। इसदिन भगवती महालक्ष्मी का उत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाता है। जिस तरह रक्षा बन्धन ब्राह्मणों का, दशहरा क्षत्रियों का, होली शूद्रों का त्यौहार है उसीप्रकार दिवाली वैश्यों का त्यौहार माना जाता है। परन्तु भारतवर्ष महान देश होनेके कारण चारों बड़े २ त्यौहारोंको सभी हिन्दू मनाते हैं। चाहे वे कोई भी वर्ण के क्यों न हों। इस दिन लक्ष्मीजीकोप्रसन्न करनेके लिये पहिलेसे ही घरोंको लीप पोतकर साफ सुथरा कर लिया जाता है। घरों को अच्छी तरहसे सजाकर घी के दीपोंकी रोशनीकी जाती है बच्चे उमंग में भरकर आतिशबाजी (सुर्री, पटाखे,) छोड़ते हैं।

पूजन-विधि

गणेश-लक्ष्मी पूजनके लिये पहले सफेदी से दीवाल पोत

लें। फिर गेरू या रंग से दीवाल पर ही बहुत सुन्दर गणेश जी और लक्ष्मीजीकी मूर्ति बनावें। इसके अलावा जिन देवी-देवताओं को और मानते हों उनकी पूजा करने को उनके

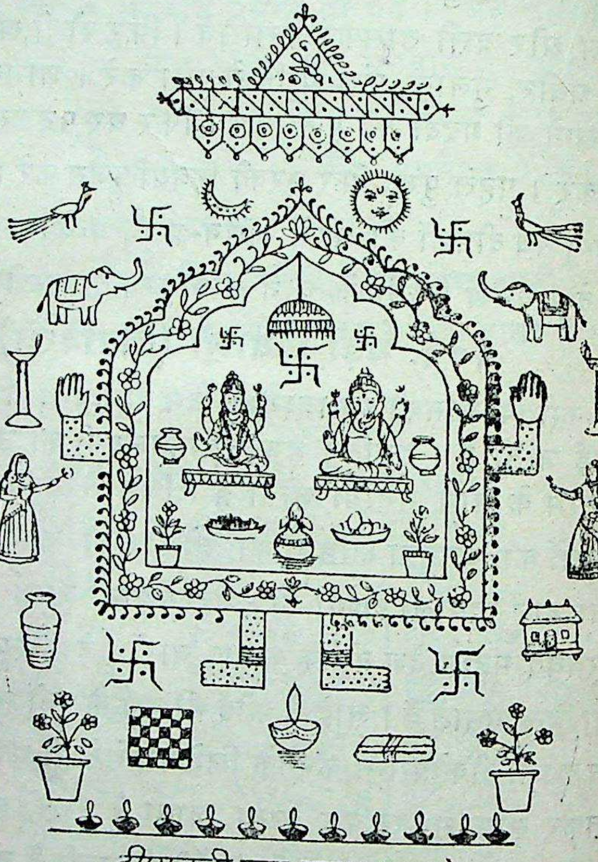

दीपावली इस प्रकार बनावे

मंदिरों को जावें। साथ में जल,रोली,चावल,खील, बताशे, अबीर,गुलाल,फूल, नारियल, मिठाई, दक्षिणा,धूप, दियासलाई आदि सामिग्री ले जावें और पूजा करें। फिर मंदिरों

से वापिस आने के बाद अपने घर के ठाकुरजी की पूजा करे। भैरोंजी पर तेल चढ़ावे। गणेश-लक्ष्मी की मिट्टीकी प्रतिमा बाजार से लावे। अपने व्यापार के स्थान (गद्दी) पर बहीखातों की पूजा करे और हवन करावे। (गद्दी) की पूजा और हवन आदि के लिये पंडितजी से पूछ कर सामग्री इकट्ठी कर लेवे। घर में जो सुन्दर २ भोजन मिठाई आदि बनी हों उनमें से थोड़ा २ देवताओं के नाम का निकालकर ब्राह्मणको दे देवे। इसके अलावा एक ब्राह्मणको भी भोजन करा देवे। इसदिन धन के देवता धनपति कुबेरजी, विघ्न विनाशक गणेशजी, राज्य सुख के दाता इन्द्रदेव, समस्त मनोरथों को पूरा करने वाले विष्णु भगवान तथा बुद्धि की दाता सरस्वतीजी की भी लक्ष्मीजी के साथ-साथ पूजा करे।

दिवाली के दिन दीपकों की पूजाका बहुत महत्व है। इस के लिये दो थालों में दीपकों को रखे। छः चौमुख दीपक दोनों थालों में सजाये। छब्बीस छोटे दीपकों में तेल बत्ती रखकर जला लेवे। फिर जल,रोली, खील, बताशे, चावल, फूल, गुड़, अबीर, गुलाल, धूप, आदि से उनको पूजे और टीका लगा लेवें। फिर गद्दी [व्यापार का स्थान] की गणेश लक्ष्मी की प्रतिमा रखकर पूजा करे। इसके बाद घर में आकर पूजा करे। पहले तो पुरुष पूजा करलें फिर स्त्रियां पूजा करें। घर के लिये तथा अपने कारखाने की पूजा के लिये अलग २ पूजा की सामग्री पंडितजी से पूछकर लावे। पूजा करने के बाद दीपकों को घर में स्थान-स्थान पर रख

देवे । एक चौमुखा और छः छोटे दीपक गणेश-लक्ष्मी के पास ही रख देवे । स्त्रियाँ लक्ष्मीजी का व्रत करें । इसदिन पंडितों से 'गोपाल सहस्रनाम' का पाठ करावे और हवन करावे। पूजा करनेके बाद गणेश लक्ष्मी को अपनी तिजूरी में रख देवे । इसके बाद जितनी श्रद्धा हो उतने रुपये बहुओं को देवे । घर के सभी छोटे माता-पिता तथा सभी बड़ों के पैर छुएं और आशीर्वाद लेवें ।

जहां दीवालपर गणेश-लक्ष्मी बनाये हों वहाँ उनके आगे १ पट्टे पर एक चौमुखा दीपक और छः छोटे दीपक तथा एक बड़े दीपकमें घी बत्ती डालकर रख देवे तथा रात्रि के बारह बजे पूजा करे । दूसरे पट्टे पर एक लाल कपड़ा बिछावें । उसपर चाँदी या मिट्टी के गणेश लक्ष्मी रखें। उनके आगे १०१ रुपये रखें । एक बर्तनमें १। सेर चावल-गुड़, ४ केला, दक्षिणा,मूली, हरी गुवारफली, ४ सुहाली, मिठाई आदि गणेश लक्ष्मी के पास रखें । फिर गणेश लक्ष्मी,दीपक, रुपये आदि सबकी पूजा करें । एक तेलके दीपक पर काजल पाड़ले । फिर उसे सभी स्त्री-पुरुष अपनी आँखों में लगावें ।

दिवाली पूजन की रात्रि को जब सब सोकर सुबह उठते हैं उससे पहिले स्त्रियाँ घर से बाहर सूप बजाकर गाती फिरती हैं। इस सूप पीटने का मतलब यह होता है कि जब घरमें लक्ष्मी का वास होगया तो दरिद्र को घरसे निकाल देना चाहिये । उसे निकालने के लिये ही सूप बजाती फिरती हैं । साथ ही दरिद्र से कहती जाती हैं—

दोहा—काने भेंड़े दरिद्र तू, घर से जा अब भाज।
तेरा यहाँ कुछ काम नहिं, वास लक्ष्मी आज॥
नहिं आगे डण्डा पड़ें, और पड़ेगी मार।
लक्ष्मीजी बसती जहाँ, गले न तेरी दार॥
फिर तू आवे जो यहाँ, होवे तेरी हार।
इज्जत तेरी नहिं करें, झाड़ू ते दें मार॥

फिर घरमें आकर स्त्रियाँ कहती हैं इस घरसे दरिद्र चला गया है। हे लक्ष्मीजी! आप निर्भय होकर यहाँ निवास करिये।

दोहा—दुष्ट दरिद्र भजि गयो, रह्यो न बाको वास।
निर्भय होकर तुम करो, सिंधु सुता यहँ वास॥

दिवाली मनाने के संम्बंध में कथायें

[१] कहा जाता है इसदिन भगवान ने राजा बलिको पाताल लोकका इन्द्र बनाया था। तब इन्द्रने बड़ी प्रसन्नता-पूर्वक दिवाली मनाई कि मेरा स्वर्ग का सिंहासन बच गया। [२] इसीदिन समुद्र मंथन के समय क्षीर-सागर से लक्ष्मीजी प्रकट हुई थीं और भगवानको अपना पति स्वीकार किया। [३] जब श्री रामचन्द्रजी लंका से वापिस आये तो इसी अमावस्याको उनका राजतिलक कियागया था। [४] इसीदिन राजाविक्रमादित्य ने अपने संवत् की रचना की थी। बड़े-बड़े विद्वानों को बुलाकर मुहूर्त निकलवाया था कि नया संवत् चैत्र सुदी प्रतिपदा से चलाया जाय। [५] इसीदिन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था।

लक्ष्मीजी की कहानी

एक साहूकार की बेटी थी वह रोजाना पीपल सींचने जाया करती थी। पीपल में से लक्ष्मीजी निकलतीं और

जल जाती थीं। एकदिन लक्ष्मीजी ने साहूकार की बेटी से कहा कि तू मेरी सहेली बन जा, तब साहूकारकी बेटीने कहा कि मैं अपने पिताजी से पूछ आऊँ, तब कल सहेली बन जाऊँगी। घर जाकर उसने अपने पिताजी से सारी बात कह सुनाई। तब पिताजी ने कहा कि वह तो लक्ष्मीजी हैं और हमें क्या चाहिए, तू सहेली बनजा। दूसरे दिन साहूकारकी बेटी पीपल सींचने गई और लक्ष्मीजी की सहेली बन गई। एकदिन लक्ष्मीजी ने साहूकार की बेटीको जीमने का न्यौता दिया। जब साहूकार की बेटी लक्ष्मीजी के यहाँ जीमने गई तो लक्ष्मीजी ने उसको ओढ़ने के लिये शाल-दुशाला दिया, सोने की चौकी पर बैठाकर सोने की थाली में अनेक प्रकार के भोजन कराये। जब साहूकार की बेटी खा-पीकर अपने घर के लिये लौटने लगी तब लक्ष्मीजी ने उसे पकड़ लिया और कहा--मैं तेरे घर जीमने आऊँगी। तब उसने कहा अच्छा आ जाना। घर आकर वह रूठकर बैठ गई। साहूकार ने पूछा कि लक्ष्मीजी तो भोजन करने आयेंगी और तू उदास होकर बैठी है तब साहूकारको बेटीने कहा-पिताजी! लक्ष्मीजीने तो मुझे इतना दिया और बहुत सुन्दर भोजन कराये, मैं उन्हें किस प्रकार खिलाऊँगी, हमारे घर में तो कुछ भी नहीं है। तब साहूकारने कहा जो अपने से बनेगा वही खातिर कर देंगे। परन्तु तू गोबर मिट्टी से चौका देकर सफाई करले। चौमुखा दीपक बनाले और लक्ष्मीजी का नाम लेकर बैठ जा। उसी समय एक चील किसी रानी का नौ

लखा हार उठाकर ले आई और उसे साहूकारकी बेटीके पास डाल गई। साहूकार की बेटी ने उस हारसे सोने की चौकी सोने का थाल, शाल-दुशाला और अनेक प्रकार के भोजन की तैयारी करी। फिर आगे-आगे गणेशजी और लक्ष्मीजी साहूकारकी बेटीके यहाँ आगये। साहूकारकी बेटीने लक्ष्मीजी से सोने की चौकी पर बैठने को कहा। लक्ष्मींजी ने बैठने को बहुत मना किया और कहा कि इसपर तो राजा रानी बैठते हैं तब साहूकार की बेटी ने कहा कि तुम्हें हमारे यहाँ तो बैठना ही पड़ेगा। तब लक्ष्मीजी उस चौकी पर बैठगई। फिर साहूकार को बेटी ने लक्ष्मीजी की बहुत खातिर की इससे लक्ष्मीजी बहुत प्रसन्न हुईं और साहूकारके बहुत धन दौलत होगई। हे लक्ष्मी माता! जैसे तुम साहूकार की बेटी की चौकी पर बैठीं और धन दिया वैसे सबको देना।

१०२. गोवर्धन पूजा और अन्नकूट

यह त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या के दूसरे दिन अथवा दिवालीके दूसरे दिन प्रतिपदा को होता है। इसदिन गोबरका गोवर्धन बनाना चाहिये और अन्न आदिके कटे हुए पदार्थोंके मिष्ठान्न बनाकर सायँ को भोग लगाकर परिक्रमा करके जल, दूध, रोली, चावल, खील, बताशे आदि से पूजा करनी चाहिये। परिक्रमा करने के बाद 'गोवर्धन बाबा की जय' के जयकारे लगाने चाहिए। इसदिन भिन्न-भिन्न प्रकारके अन्नोंको कूटकर और उनके पकवान बनाकर भोग

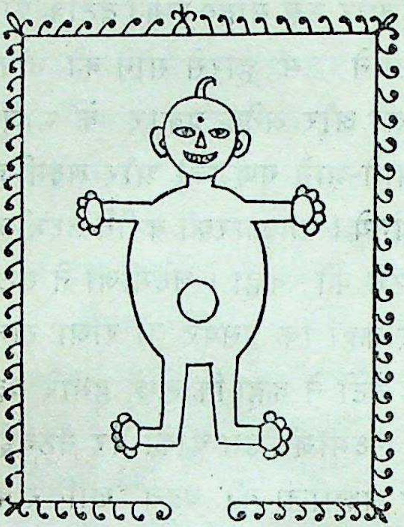

गोवर्द्धन इस प्रकार गोबर से बनावे

लगाया जाता है। इस लिये इस पर्व को 'अन्नकूट' भी कहते हैं। वैश्योंका इस दिन से नया वर्ष चालू हो जाता है। इस गोबर के गोवर्धनकी परिक्रमा करने से गोवर्धन पर्वत की परिक्रमाके बराबर फल प्राप्त होता है। इसके बारे में निम्न कथा प्रचलित है।

गोवर्धन और अन्नकूट की कहानी

एकदिन भगवान् कृष्ण ने देखा कि हमारे गाँव में तरह तरह के पकवान बनाये जा रहे हैं। उनका क्या होगा ? यह जानने के लिये उन्होंने नन्द बाबा से पूँछा-हे बाबा ! इतना अन्न कूटकर ये सब पकवान क्यों बनाये जारहे हैं? तब नन्द-बाबा बोले-हे कृष्ण ! कल इन्द्रकी पूजा होगी। इन्द्र मेघ-वर्षा कर हमें अन्न देते हैं। गायोंके लिये चारा देते हैं। तब भगवान कृष्ण कहने लगे-बाबा ! हमारे गाँवमें गोवर्धन पहाड़ साक्षात् देवता हैं। उनकी पूजा करो। वे हमारी पूजा को स्वीकार करेंगे और प्रकट होकर स्वयं भोजन करेंगे, इन्द्र कुछ भी नहीं है जिसकी आप लोग व्यर्थ में पूजा करते हैं।

कृष्ण की बात सबने मानी और गोप-गोपिकायें गोवर्धन

को पूजने के लिये गये। तब भगवान श्रीकृष्ण अपना चतुर्भुज रूप रखकर स्वयं गोवर्धन पर्वत पर बैठ गये और गोपों के भोगको खाने लगे। तभीसे गोवर्धन पर्वतका महत्व बढ़ गया और इन्द्रकी जगह सब लोग गोवर्धनकी ही पूजा करने लगे।

१०३. भैया दूज या यम-द्वितिया

यह त्यौहार कार्तिक सुदी दौज को मनाया जाता है। भाई-बहिन के प्रेम को बढ़ाने वाला यह सबसे बड़ा तथा महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस त्योहार के दिन भाई-बहिन को साथ साथ यमुना स्नान करना चाहिए। फिर भाई को बहिन के यहाँ तिलक करवाकर ही भोजन करना चाहिए। अगर भाई बहिनके यहाँ न जा सके तो बहिन ही भाईके यहाँ अपने यहाँसे भोजन का सामान ले जाकर भाई को भोजन करावे। जो इस तरह भोजन करते हैं वे भाई बहिन यमलोक से बचकर स्वर्गलोकको प्राप्त होते हैं। अगर किसी के बहिन न हो तो वह धर्मकी बहिन बनाकर उसके यहाँ भोजन करे। परन्तु इसदिन अपने घर पर भोजन न करे। इसदिन यमुनाजीने अपने भाई यमराज को अपने यहाँ भोजन कराया था। इसी लिये इसको 'यमद्वितिया' भी कहते हैं। इसदिन भाई-बहिन को श्रद्धानुसार स्वर्ण, वस्त्र, रुपये आदि भेंट स्वरूप देवें।

इसदिन मथुरामें विश्रान्त घाट पर बहुत बड़ा मेला लगता है। लाखों भाई-बहिन, नर-नारी यमुना स्नान करके यमलोक से मुक्त होने का लाभ पाते हैं। इसीलिये इसदिन भाई-बहिन मथुरा में आकर विश्रान्त घाट पर स्नान करके

दीपक जलावें, यमुना में फूल, भोग, दूध चढ़ावें। फिर भाई बहिन को सुन्दर वस्त्र, जेवर आदि देवे।

भैयादूज (यम-द्वितीया) की कहानी

बहुत दिन पहले की बात है कि भगवान सूर्य नारायण की एक पत्नी थी जिसका नाम संज्ञादेवी था। उसके एक लड़का तथा एक लड़की दो सन्तानें थीं। लड़के का नाम यमराज था और लड़की का नाम यमुना था। अपने पति सूर्य नारायण की तेज गर्मी के कारण संज्ञा उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगी। उस छाया से ताप्ती नदी और शनिश्चर का जन्म हुआ। इसके बाद संज्ञा से ही अश्विनीकुमार हुए जो आगे चलकर देवताओं के वैद्य हुए। जो संज्ञा छाया वनकर उत्तरी ध्रुवमें रहने लगी थी वह यमुना और यमराज से सौतेली माँ का सा व्यवहार करने लगी। इस वर्ताव को देखकर यमराज ने संयमनीपुरी छोड़कर यमलोक बसाया और पापियों को दण्ड देने का कार्य शुरू कर दिया। यमुना ने देखा कि भाई यमराज यहाँ से चले गये तो वह भी गौलोक में चली आई और कृष्ण के अवतार से पहिले ही मथुरा में विश्राम घाट पर आकर रहने लगीं।

जब बहुत दिन बीत गये तब एकदिन यमराज को अपनी बहिन यमुना की याद आई। अत: यमराज ने यमुनाको ढूँढ़ने के लिये अपने दूत भेजे। यमदूत ढूँढ़ते २ मथुरा आये परन्तु यमुना नहीं मिलीं। तब यमदूत डरते २ यमपुरी पहुँचे और यमुना का न मिलने का समाचार कह सुनाया। फिर यम-

राज अपनी यमपुरी से स्वयं गौलोक आये और यमुना को ढूँढ़ते२ यमुनाजीके विश्राम घाट पर पहुँचे। वहाँ जब यमुना ने सुना कि मेरे भाई आये हैं तो वह बाहर आईं और भाई को सत्कार सहित अपने महल में ले गईं और उन्हें भोजन आदि कराए। इससे प्रसन्न होकर यमराज ने यमुना से कहा-बहिन! जो चहो वह वर माँगो। तब यमुना बोली-मुझे कुछ नही चाहिए। तब यमराज कहने लगे-तुम्हें आज वर माँगना ही होगा। तब यमुना बोलीं-भैया! जो नर-नारी मेरे जल में स्नान करें वे यमपुरी न जायँ। यह सुनकर यमराज सोचने लगे, यदि मैं ऐसा कह दूँगा तो यमपुरी उजड़ जायगी। यमुना ने भाई का हालत देखकर कहा-अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते हो तो सुनो, जो भाई आज के दिन बहिन के यहाँ भोजन करे और बहिन के साथ इसी घाट (विश्रांत) पर मेरे जल में स्नान करे वह यमलोक को नही जावे। इस पर यमराज यमुनासे बोले-यह बात मुझे स्वीकार है। इसदिन जो भाई बहिन के घर भोजन नहीं करेंगे और तुम्हारे जल में स्नान नहीं करेंगे, उन्हें बाँधकर यमपुरी ले जाऊँगा और जो भाई-बहिन तुम्हारे पवित्र जलमें इस दिन स्नान करेंगे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

१०४. सूर्य.छठ (छठ-माई)

यह छठ कार्तिक सुदी छठ को आती है। इसदिन व्रत रखकर सूर्य नारायण की पूजा करनी चाहिये।

सबसे पहिले सूर्य नारायण को अर्घ्य देवें, फूल चढ़ावें, फिर

उनकी आरती उतारें और साष्टाँग प्रणाम करें। सूर्यभगवान की पूजा करने से धन और संतान की प्राप्ति होती है। तथा संतानके कष्ट दूर होजाते हैं। आँखों की बीमारी दूर होती है। अर्घ्य देते समय जल में सूर्य की किरणों को अवश्य देखें।

सूर्य-छठ की कहानी

बहुत समय पहिले की बात है कि विन्दुसर तीर्थमें एक महीपाल नाम का वैश्य रहता था। वह धर्म का कट्टर विरोधी था। देवताओंकी पूजा कभी नहीं करता था। पूजा की जगह उनका अपमान किया करता था। एकदिन उसने सूर्य भगवानको गाली देते हुए उनकी प्रतिमाके सामने मल मूत्र त्याग दिया। इसको देखकर भगवान सूर्य नारायण क्रोध से बोले—हे दुष्ट ! तू अभी अन्धा हो जा। इतना कहते ही वह महीपाल नाम का वैश्य अन्धा हो गया और कष्ट सहने लगा। इससे वह वैश्य बहुत दुखित हो रहने लगा। एक दिन उसने सोचा इससे तो अच्छा है भगवान मेरे प्राण ही ले लेवें। इतना कहकर वह गंगाजी में गिरकर प्राण त्यागने के लिए चल पड़ा। जब वह रास्ते में जा रहा था तभी उसे नारदजी मिले और कहने लगे-लालाजी ! इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हो ? तब वह वैश्य बोला-महाराज ! मैं अन्धा हूँ। अतः इस कष्ट से दुःखी होकर गंगा में गिरकर प्राण त्यागने जा रहा हूँ। तब नारदजी कहने लगे-रेमूर्ख ! तुझे यह कष्ट सूर्य भगवान के क्रोध से हुआ है। इसलिये तू कार्तिक सुदी की जो छठ आवे उसदिन व्रत रखकर सूर्य भगवान की

पूजा करना और आरती करना फिर दण्डवत करके क्षमा याचना करना। तब भगवान् तुझे क्षमा करके तेरे नेत्रों को पुन: ठीक कर देंगे। महीपाल ने ऐसा ही किया और उसकी आँखें फिर से ठीक हो गईं। हे सूर्य भगवान ! जैसे तुमने उस वैश्य के कष्ट दूर किए वैसे सबके कष्ट दूर करना।

१०५. गोपाष्टमी या कालाष्टमी

यह अष्टमी कार्तिक सुदी आठें (अष्टमी) को आती है। इस दिन गौओं (गायों) तथा बछड़ों का विधिपूर्वक पूजन करना चाहिये। जल, रोली, चावल, फूल, गुड़, दाल, जलेबी, घास, कपड़ा आदि चढ़ावें, आरती उतारें, परिक्रमा देवें। फिर भोजन कर लेवें।

इसदिन भगवान कृष्णको गायें चरानेके लिये वनमें भेजा गया था। तथा इसीदिन से भगवान जंगल में जाकर राक्षसों का संहार करने लगे थे। इसीकारण इसे कालाष्टमी कहते हैं।

१०६. आँवला नवमी या युगादि नवमी

यह नवमी कार्तिक सुदी नवमी को मनाई जाती है। कहते हैं इसीदिन से सतयुग प्रारंभ हुआ था। इसलिये यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तिथि है इसदिन आँवला के वृक्ष की पूजा होती है। हजारों नर-नारी आँवला की पूजा करते हैं और ब्राह्मणों को आँवला के वृक्ष के नीचे बैठाकर भोजन कराकर उन्हें दान आदि देते हैं। इसदिन आँवला भी दान में देना चाहिए।

आँवला या युगादि नवमी की कहानी

काशी नगरीमें एक वैश्य रहता था। वह बहुत धर्मात्मा

और दानी था, परन्तु उसके सन्तान न होने से वह पति-पत्नी बहुत दुःखी रहते थे। एकदिन की बात है कि एक औरत ने वैश्य की स्त्री से कहा अगर तू किसी के बच्चे की भैरव पर बलि चढ़ावे तो तेरे सन्तान पैदा हो जायगी। यह बात उस स्त्री ने अपने पति से कही। पति बोला-यह ठीक नहीं। यदि दूसरे के बच्चे को मार कर अगर भगवान भी प्राप्त होते हों तो भी मैं प्राप्त करने को तैयार नहीं हो सकता। सन्तान की तो बात दूर रही। इतनी बात पति की सुनकर पत्नी चुप होगई परन्तु अपनी सहेली की बात नहीं भूली। बात को सोचते-सोचते एकदिन उस वैश्य की स्त्रीने एक लड़की को भैरों बाबा के नाम पर कुएमें डाल दिया। लड़की की मृत्यु होगई। परन्तु सन्तान नहीं हुई। सन्तानके बदले उसके शरीर से पाप फूट-फूट कर निकलने लगा। उसके कोढ़ होगया। लड़की की मृत्यु उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। इस हालतको देखकर वैश्य ने इसका कारण पूँछा। तब उसकी औरत ने लड़की की बात कही। वैश्य बोला-तूने यह अच्छा नहीं किया क्योंकि ब्राह्मण वध, गोवध और बाल वध के अपराध से कोई भी व्यक्ति मुक्त नहीं हो सकता। अतः अब तुम गंगा के किनारे रहो और नित्य प्रति गंगा स्नान करो। इस बात को वैश्य की पत्नी मान गई। एकदिन गंगाजी उस वैश्य पत्नी के पास एक बूढ़ी स्त्री का रूप धारण करके आई और कहने लगी-हे बेटी! तू मथुरा में जाकर कार्तिक सुदी नवमी को व्रत रखना और आँवला

की पूजा करके मथुरा की परिक्रमा करना। यह व्रत तीन वर्ष में तीन बार करना। इससे तेरा मंगल होगा। इतना कहकर गंगाजी वहीं पर अन्तर्धान होगई। उस वैश्य पत्नीने यह बात अपने पति से कही। पतिने वैसा ही किया। मथुरा में जाकर व्रत रखा। आँवला की पूजाकी और मथुरा की पाँच कोस की परिक्रमा की। उसने यह व्रत तीन वर्ष तक लगातार किया। इस व्रतके प्रभावसे उस वैश्य पत्नीके कोढ़ ठीक होगया और एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ जो बहुत सुन्दर सुशील एवं गुणवान हुआ। हे भगवान! जैसे तुमने उस वैश्य पत्नी के मनोरथ पूरे किये वैसे सबके करना।

१०७ देवोत्थान (देवठान) एकादशी

दीपावली के पश्चात् कार्तिक शुक्ला एकादशीको देवठान [देवोत्थान] होता है। इस दिन सारे घर को लीप-पोतकर आँगनकोखड़िया मिट्टी और गेरूसे काढ़ते हैं। आँगन के मध्य में अथवा ओखली में एक गेरू से चित्र बनाकर पूड़ी पकवान, बेर, सिघाड़े, गन्ना और ऋतुफल उस स्थान पर रखकर डलियासे ढक देते हैं और एक दीपकभी जला देते हैं। रात्रिके समय पुरुष तथा घरके बालक साथ बैठकर देवताओं की पूजा करते हैं और उन्हें घण्टी या थाली बजा बजाकर उठाते हैं-

"उठो देवा बैठो देवा, आँगुरिया चटकाओ देवा"

यह एकादशी 'देव प्रबोधिनी एकादशी' भी कहलाती है। आषाढ़ शुक्ला एकादशीसे देवता शयन करते हैं और कार्तिक

शुक्ला एकादशी को उठते हैं। इसलिए देवठान या देवोत्थान कहा जाता है इस बीच में कोई शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं

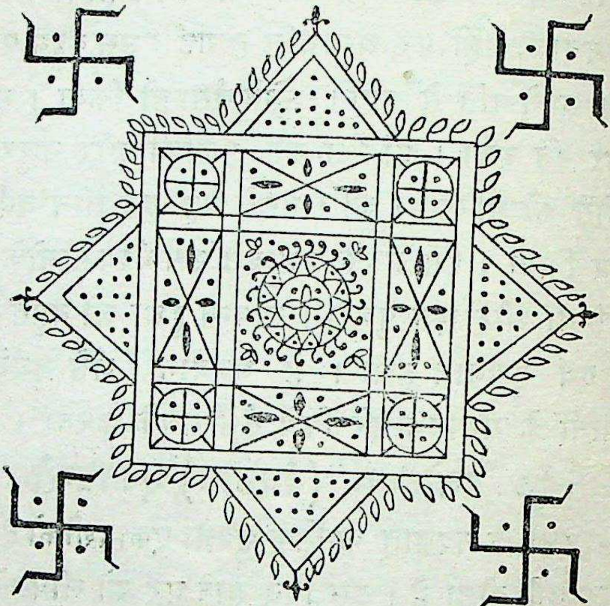

देवठान (एकादशी) इस प्रकार बनावें

किया जाता है। इस एकादशी से ही विवाह शादी आदि शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।

१०८. तुलसी विवाह

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियाँ तुलसी जी और शालग्राम का विवाह करती हैं, समस्त विवाह को विधि-विधान से खूब गाजे बाजे के साथ तुलसी जी के वृक्ष से शालग्राम के फेरे एक सुन्दर मण्डप के नीचे डाले जाते हैं। विवाह के गीत गाए जाते हैं और भजन भी—

"मगन भई तुलसी राम गुन गाइके। मगन भई तुलसी........
सब कोउ चालें डोली, पालकी रथ जुरवाइकै ।।
साधू चालें पाँ पाँ पैया, चैंटी सौं बचाय कै ।।
मगन भई तुलसी राम गुन गाइकै ।।

१०६. भीष्म-पंचक

यह व्रत कार्तिक शुक्ला एकादशी से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसे 'पञ्चभीका' भी कहते हैं कार्तिक स्नान करने वाले स्त्री-पुरुष पाँच दिन का निराहार [निर्जला] व्रत करते हैं। अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिये यह व्रत किया जाता है। कहानी सुनी जाती है और कुछ विशेष गीत गाये जाते हैं—

कौन जाति पनिहारी रे नैक ठाड़ी रहियो।
का तेरो नाऊँ कौन की बेटी रामा ।।
कौन के घर व्याही रे नैक ठाड़ी रहियो।
मथुरा जी से चली रे गुजरिया रामा ।।
धरि ईडुरी सिर गगरी से नैक ठाड़ी रहियो ।।

११०. वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत

यह व्रत कार्तिक सुदी चतुर्दशी को होता है। इस दिन व्रत रखकर भगवान वैकुण्ठ बिहारीकी पूजा करनी चाहिये। चतुर्दशी के दिन व्रत रखने वाले पहले स्वयं स्नान करें फिर भगवान की मूर्ति को स्नान करावें फिर भोग लगावें, भोग के बाद आचमन करावें, आचमन के बाद स्नान कराकर फूल, दीप, चन्दन, पुष्प आदि से आरती उतारें और भोगको बाँट देवें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करावें और

दक्षिणा देकर विदा करें। दिन में कीर्तन करें और रात्रि में भगवान की मूर्ति के समीप ही शयन करें।

इससे वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। मनुष्य सभी बन्धनों से मुक्त होजाता है। कहीं कहीं मन्दिरों में वैकुण्ठ द्वार बने हुए हैं जो सिर्फ इसी दिन खोले जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान की सवारी के साथ इस दरवाजे में जाने से मनुष्य स्वर्ग को जाता है।

वैकुण्ठ चतुर्दशी की कहानी

एक समयकी बात है कि भगवान वैकुण्टमें बैठे हुए थे। इतने में उनके पास नारद मुनि जी आये। नारद मुनि को देखकर भगवान ने उन्हें अपने पास बिठाया और आने का कारण पूछने लगे। नारदजी बोले-आपने अपना नाम कृपा-निधान रखा है परन्तु आपके लोकमें तो आपके भक्तजन ही आ पाते हैं। फिर आपकी उनके ऊपर क्या कृपा हुई? वे तो अपने जप तप के प्रताप से आपके धाम में आ ही जाते हैं। भगवान बोले-नारदजी! मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया। नारदजी कहने लगे आपने ऐसा भी कोई सुलभ मार्ग बनाया है जिससे कम सेवा करने वाले भी आपके धाम में आ सकें। तब भगवान बोले हे नारद जी! यदि आप ऐसा कहते हैं तो सुनो, कार्तिक सुदी चौदस के दिन जो कोई मनुष्य व्रत रखकर मेरी सच्चे दिलसे पूजा करेगा और स्वर्ग द्वार जो देव मंदिरों में बने हुए हैं। उनमें मेरी सवारी के साथ प्रवेश करेगा वह वैकुण्ठ को प्राप्त होगा। तभी भगवान ने

जय और विजय को बुलाकर कहा देखो, कार्तिक सुदी चतुर्दशी को स्वर्ग का दरवाजा खुला रहना चाहिये। इसदिन जो व्यक्ति नाम मात्रको भी मेरी पूजा करे उसे स्वर्ग में स्थान दो। इस बात को सुनकर नारदजी कहने लगे हे कृपानिधान ! अब आप दीनानाथ कहलाने के अधिकारी हो। यह कहकर नारदजी हरिगुण गाते वीणा बजाते चले गये।

१११. कार्तिक सुदी पूर्णिमा

कार्तिक स्नान का बड़ा महत्व है। इस महिने में ब्रह्म-मूहूर्त में स्नान किया जाता है। कार्तिक स्नान शरद पूर्णिमा से ही प्रारम्भ हो जाते हैं और बटेश्वरी पूनों अर्थात् कार्तिकी पूर्णिमा तक महीने भर स्नान होते हैं बड़ी सुबह स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ-नहरों, तालाबों, कुओं तथा नदियों जहाँ जैसी सुविधा है स्नान करने जाती हैं। स्नान करने के उपरातपूजा पाठ करती हैं और कहानी सुनती हैं। हर रविवार को व्रत रखा जाता है और राई-दामोदर [राध-दामोदर] की पूजाकी जाती है। पूजा करते समय स्त्रियाँ निम्न गीत गाती हैं—

राधा दामोदर बलिजइयो।
राधा बूझें बात किसन। हरि कैसे कार्तिक न्हैयों ॥

कार्तिकके इस अन्तिम दिन स्नान करने के बाद ब्राह्मणों को भोजन करावे, हवन करावें, और भगवान की पूजाकर दीपक जलावे। यदि श्रद्धा हो तो भगवान का छप्पन प्रकार का भोग लगावे। यह कार्तिक मास समस्त मनोरथों को पूरा करने वाला बहुत फलदायक है।

मार्गशीर्ष के व्रत और त्यौहार

यह महीना भारतीय संवतके अनुसार नवाँ महीना है। इसमें सर्दी बहुत जोर से पड़ने लगती है। कभी २ वर्षा भी हो जाती है। इसको "अगहन" भी कहते हैं।

११२. उत्पन्ना एकादशी व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष के बदी पक्ष में किया जाता है। इसे उत्पन्ना एकादशी कहते हैं। इसदिन भगवान श्रीकृष्णजी की पूजा करनी चाहिए। व्रतवाले दिनसे पहिले दशमी के दिन रात्रिको कुछ भी नहीं खाना चाहिये। एकादशी के दिन सूर्योदय से पहले स्नान करके भगवानकी जल, फूल, दीप, रोली, चावल, इत्र, चन्दन आदि से पूजा करें और आरती उतारें। यह ध्यान रहे कि इस व्रत में फलों का भोग लगाया जावे। फिर वेदपाठी विद्वान ब्राह्मणों को भोजन कराकर और दान देकर उन्हें विदा करे।

इसदिन वृक्षमें से दाँतुन तोड़ना, साबुन से नहाना, चुगली करना, इन्द्रियों को भोग विलास करना मना है। इस के अतिरिक्त इस दिन चोर, निंदक, दुराचारी, हिंसक, नास्तिक, देशद्रोही, गौ और ब्राह्मणों के द्रोही, इनसे बातें भी नहीं करे। अगर ऐसा भूल से हो भी जाय तो सूर्य नारायणके सामने खड़े होकर क्षमा माँग लेनी चाहिये। भगवान का निम्न प्रकार से भजन करे—

१—हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

२—हे कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
हे नाथ नारायण वासुदेवाय॥

जो पुरुष या स्त्री इस प्रकार व्रत रखते हैं वे इस लोक में सुख भोगकर विष्णु लोक को प्राप्त होते हैं।

उत्पन्ना एकादशी की कहानी

एक समयकी बात है भारतमें एक मुरदैत्य नामका राक्षस सतयुग में हुआ था। उसके पिताका नाम नाड़ीजंग दैत्य था। वहमुरदैत्य अपनी चन्द्रवती नामकी राजधानी में रहता था। उससे इन्द्र, देवता आदि सभी भयभीत रहते थे। यहाँ तक कि उसके डरसे सूर्य और चन्द्रमा भी अपना मार्ग बदल देते थे। इनकी जगह वह स्वयं सूर्य बनकर चमकता था। यहबात भगवान के कानों तक पहुँची। तब भगवान ने उसे मारने के लिये उपाय सोचा। अतः उस दैत्य से भगवान ने युद्ध प्रारंभ कर दिया। जब भगवान को लड़ते-लड़तें बहुत समय हो गया तो वह एक गुफा में घुस गये। वहाँ उनके पीछे २ मुरदैत्य भी गया। गुफा में जाकर उनसे लड़ने लगा। उस समय भगवान के शरीर से एक शक्ति निकली। उस शक्ति ने उस दैत्य को मार दिया। तब भगवान उस शक्ति से बोले-हे देवी! तू आज एकादशी मार्गशीर्ष बदी को पैदा हुई है। इसलिये तेरा नाम उत्पन्ना है आज से तू इसी एकादशी के दिन पूजी जाया करेगी और इस एकादशी का नाम भी उत्पन्ना एकादशी होगा।

जो प्राणी इसदिन व्रत रखकर पूजा किया करेंगे वे सभी

पापों से मुक्त होंगे और अन्त में मेरे लोक को प्राप्त होंगे। जो प्राणी इसदिन एक समय भोजन करेंगे वे धन धान्य से पूर्ण होकर सर्व सुख सम्पन्न होंगे।

११३. धन व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा [परवा] का होता है। इसदिन भगवान विष्णुका पूजन करना चाहिये। प्रातः ही व्रत रखनेवाले भगवानकी प्रतिमाको स्नान कराकर तथा समस्त सामग्रोसे पूजनकर भोग लगावें और आरतीउतारें। इसके बाद ब्राह्मणोंको भोजन कराकर और दान देकर विदा करें।

रात्रि में भगवान की मूर्ति के सामने वेद मंत्रोंसे आहुति देकर हवन करें और आरती करके उस मूर्ति को दो लाल वस्त्रों से ढक कर ब्राह्मण को दे दें।

जो इस तरह से व्रत रखता है वह मनुष्य धन-धान्य से सम्पन्न होकर स्वर्ग को प्राप्त होता है। हवन करनेसे अग्नि देव उसके सब पापों को नष्ट [भस्म] कर देते हैं।

११४. नन्दनी नवमी व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष के सुदी पक्ष की नवमी को किया जाता है। इसदिन माता जगदम्बा की पूजा करनी चाहिये। व्रत रखने वाले माता जगदम्बाको स्नान कराकर सजे हुए उच्च आसन पर बैठाकर उसके सामने हवनादि करें। माता जगदम्बाके हवन में खीर की आहुती देवें और भोग लगावें फिर जगदम्बा की आरती उतारें।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं और पूजा करते हैं

वे अश्वमेघ यज्ञ के बराबर फल प्राप्त करते हैं और अन्तमें ब्रह्मलोक को जाकर सब सुखों को प्राप्त करते हैं।

११५. मोक्षदा एकादशी व्रत

यह एकादशी मार्गशीर्ष सुदी एकादशी को आती है। इस दिन दामोदर भगवान की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प तथा सुगन्धित द्रव्यों से करें। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति दानदेवें और आशीर्वाद प्राप्त करके विदा करें

इस एकादशीके दिन दातुन चीड़ना, झूठ बोलना, चुगली करना परस्त्रीके साथ संभोग करना, आदि कार्य निषेध हैं। दिन भर ईश्वरका कीर्तन करें। रात्रिको भगवान दामोदरकी मूर्ति के समीप ही शयन करें। जो इसप्रकार व्रत रखते हैं वे अपनी दश पीढ़ियोंका उद्धार करते हुए स्वयं मोक्षको प्राप्त होते हैं।

मोक्षदा एकादशी की कहानी

एक समय की बात है चित्रपुरीमें एक राजा राज्य करता था। वह बहुत धर्मात्मा था। उसके पिता भी बहुत धर्मात्मा थे। एक दिन वह राजा अपने महल में सोया हुआ था कि उसी समय उसे एक स्वप्न हुआ। स्वप्न में राजा ने देखा कि उसके पिता नर्क में पड़े हुए दुःख भोग रहे हैं। राजा की सुबह जब आँख खुली तो उसने यह बात सबको बताई। जब वह दरबार में पहुँचा तो उसने अपने मंत्रियों से सलाह की। तब मंत्री बोले-हे राजन् ! इसके लिये आप पंडितों को बुलाकर उनकी मुक्ति का उपाय पूछिये, तब राजा ने अपने राज्यके सभी विद्वान पंडितोंको बुलाया और उन्हें अपना स्वप्न

सुनाया । स्वप्न को सुनकर पंडित बोले-हे राजन् ! मार्ग-शीर्ष के सुदी पक्ष में एक मोक्षदा नाम की एकादशी आती है । इस एकादशीको तुम व्रत करो और भगवान दामोदर की विधि पूर्वक षोडशोपचार से पूजा करो । दिनमें कीर्तन करो, और वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराकर उनसे आशीर्वाद लो । रात्रि में मूर्ति के समीप ही शयन करना । व्रतके दिन सुबह दाँतून मत करना किसी जीवको मत सताना झूँठ मत बोलना, अपनी इंद्रियों को वश में रखना । द्वादशी के दिन मूर्ति को आचार्य या विद्वान ब्राह्मण को दे देना । मूर्ति को दान देते समय तुम कहना कि मेरे एकादशी व्रत का फल मेरे पिताको प्राप्त हो तब हे राजन् ! तुम्हारे पिता नर्क से स्वर्ग में चले जायेंगे । राजा ने ऐसा ही किया । जब वह व्रत की रात्रि को मूर्ति के पास सोया हुआ था । तब उसने स्वप्न में देखा कि उसके पिता मोक्ष पाकर स्वर्ग में निवास कर रहे हैं और उसके लिये भी स्वर्ग में स्थान निश्चित कर दिया गया है । सुबह जब राजाकी आँख खुलीं तो उसने गरीबों को खूब दान दिया । हे प्रभु ! जैसे तुमने राजाके पितरोंको मोक्ष दिया वैसे सबके पितरों को देना ।

११६. गीता जयन्ती (दत्त जयन्ती)

यह जयन्ती मार्गशीर्ष सुदी की एकादशी को ही मनाई जाती है । इस दिन भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजीने महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ होने से पहले अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था । इस दिन श्री गीताजी का पूजन करें, आरती

करें और इसका पाठ भी करें, गीता सभी वेदोंका सार (तत्व) है। इसका प्रचार कृष्ण प्रेमियों में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में विस्तार से फैली हुई है और अपने सिद्धान्तों और ज्ञानके लिये बिख्यात और माननीय हैं। अगर हर प्राणी इसके एक एक श्लोक के अनुसार अपने जीवन को बनाले तो वह ईश्वर को बिना तप के प्राप्त कर सकता है।

इसदिन मुनि दत्तात्रेयजी का भी जन्म दिवस बताया जाता है इसलिए इसे दत्त जयन्ती भी कहते हैं।

११७. मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत और गंगा स्नान

यह व्रत मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को होता है। इस दिन भगवान नारायणकी पूजाकी जाती है। सबसे पहिले नियम पूर्वक पवित्र होकर स्नान करे और सफेद कपड़े पहिने। फिर आचमन करे। इसके बाद व्रत रखनेवाले 'ॐनमो नारायणय' कहकर आवाहन करें तथा आसन और गन्ध पुष्प आदि भगवान के अर्पण करें। फिर भगवान के गुणगान करें। भगवान के सामने चौकोर वेदी बनावें जिसकी लम्बाई व चौड़ाई एक एक हाथ हो। हवन करने के लिये अग्नि स्थापित करें और उसमें तिल, घी, बूरा आदि की आहुती दें। हवन की समाप्ति के बाद फिर भगवान का पूजन करें और अपना व्रत उनके अर्पण करें और कहें—

पोर्णमास्यं निराहारः स्थिता देव तवाँज्ञया।
मोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्ष परेऽहिन शरणंः भव॥

अर्थात् हे देव पुण्डरीकाक्ष! मैं पूर्णिमाको निराहारव्रत

रखकर दूसरे दिन आपकी आज्ञा से भोजन करूँगा आप मुझे अपनी शरण देवें।

इस प्रकार भगवानको व्रत समर्पित करके सायंको चंद्रमा निकलने पर दोनों घुटने पृथ्वी पर टेककर सफेद, फूल, अक्षत, चन्दन जल सहित अर्घ्य देवें अर्घ्य देते समय चन्द्रमा से कहे-

"भगवन ! रोहिणीपते ! आपका जन्म अत्रि कुल में हुआ और आप क्षीर सागर में प्रकट हुये हैं। मेरे दिये हुये अर्घ्य को स्वीकार करें।"

इसके बाद चन्द्रमा को अर्घ्य देकर उनकी ओर मुँह करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करे–

"हे भगवन् ! आप श्वेत किरणों से सुशोभित होते हैं। आपको नमस्कार है, आप द्विजोंके राजा हैं आपको नमस्कार है, आप रोहिणी के पति हैं आपको नमस्कार है, आप लक्ष्मी के भाई हैं आपको नमस्कार है।"

इस प्रकार रात्रिको नारायण भगवान की मूर्ति के पास ही शयन करें। दूसरे दिन सुबह ब्राह्मणों को भोजन करायें और दान देकर विदा करे।

जो इस प्रकार व्रत धारण करते हैं। वे पुत्र पौत्रादि के साथ सुख भोगकर सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और अपनी १० पीढ़ियों के साथ वैकुण्ठ को जाते हैं।

पौष मास के व्रत और त्यौहार

यह माह भारतीय महीनेका दशवाँ महीना है इस महीने में बहुत सर्दी पड़ने लगती है।

११८. मल-मास

जब धनकी संक्राति लगती है तभी मल मास शुरू होता है और मकर की संक्राति लगते ही मल मास समाप्त हो जाता है। यह मल मास १ माह का होता है। इसमें कोईभी शुभ काम नहीं करे। मल मास को शुरू हुए जब पन्द्रह दिन हो जावें तब एक दिन तेल के बड़े-पकौड़ी चील, कौआ को खिलादे। मल के बाद में ही कोई शुभ काम करे।

११९. सफला एकादशी व्रत

यह व्रत पौष बदी एकादशी को होता है। इसदिन भगवान अच्युत की पूजा करे।

व्रत रखने वाले व्रत रखकर पहले स्वयं स्नान करें। स्नान के बाद भगवानको स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहिनाकर उन का भोग लगावें और आरती उतारें। आरतीके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दान देवें। आशीर्वाद प्राप्त करके विदा करें। रात्रि में जागरण करें और कीर्तन करें। जो इस प्रकार व्रत रखते हैं वे सभी बुरे कर्मों से बचे रहते हैं वे इस लोक में सब भोगों को भोगकर अन्त में वैष्णव पदको प्राप्त होते हैं। इस व्रत के प्रभाव से हर काम में सफलता प्राप्त होती है। इसीलिये इसे सफला एकादशी कहते हैं।

सफला एकादशी की कहानी

बहुत पुरानी बात है चम्पावती नगरीमें एक राजा महिष्मान राज्य करते थे उनके एक लुम्पक पुत्र था। जब वह पुत्र बड़ा हुआ तो वह बड़ा दुष्ट बुद्धी, दुराचारी और पापा-

त्मा हुआ। उसके डर से चारों ओर पृथ्वीपर हाहाकार होने लगा इससे राजा ने दुःखी होकर लुम्पकको देश निकाला दे दिया। तब लुम्पक जंगल में चला गया और वहाँ जानवरों को मार २ कर खाने लगा। इस तरह वह बहुत सालों तक अपना जीवन निर्वाह करता रहा। उस वन में एक पीपल का बहुत बड़ा वृक्ष था उस वृक्ष पर देवताओं का वास था जब पौषका महीना आया तो लुम्पकको सर्दी ने दबा लिया। और वह बहुत बीमार होगया। दशमी के दिन उसकी यह हालत होगई कि वह चल फिर भी नहीं सकता था। अतः रात्रिको भूखा ही सो गया। दूसरे दिन वह जंगल में गया परन्तु बीमार होने के कारण वह कुछ शिकार नहीं कर पाया तब उसने वृक्ष के कुछ फल तोड़े और पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा और भगवान से कहने लगा-हे भगवान्! बहुत सा खाने वाला मैं प्राणी इन दो चार फलों से कैसे गुजारा करूँ? इससे तो इनको तुमही खालो। इन फलों के खाने से तो मैं भूखा ही रहूँ तो अच्छा है इस प्रकार वह दिन रात भगवान का नाम लेता रहा। चाहे कोई किसी तरह से भी नाम ले, चाहे, दोष दें, चाहे श्रद्धा से आखिर नाम तो ईश्वर का ही है। उसदिन वह भूखा ही सो गया। इस तरह अज्ञानता में उसका उसदिन (एकादशी) का व्रत निराहार होगया और भगवान उस पर प्रसन्न होगये। दूसरे दिन सुबह भगवान ने एक सुन्दर सजा हुआ घोड़ा भेजा। जब घोड़ा उसके पास आगया तब आकाश वाणी हुई कि हे

राजकुमार ! तेरे एकादशीके ब्रतसे मैं प्रसन्न हूँ अतः तुम इस घोड़े पर चढ़कर अपने घर जाओ, तुम्हें, तुम्हारे पिता का राज्य मिल जायगा। यह सुनकर लुम्पक घर गया और उसे राजा बना दिया। हे एकादशी माता ! जैसे तुमने लुम्पक को राज्य दिया, वैसे सबको देना।

१२०. ब्रह्मगौरी पूजन तथा व्रत

यह व्रत पौष सुदी तीज को किया जाता है। इस दिन माता गौरीकी समस्त सामग्रीसे पूजा करे। जो स्त्री इस दिन गौरी की पूजा करती है वह उनके प्रताप से उनके लोक में जाती है। वहाँ जाकर समस्त आनन्द भोगती है।

१२१. पुत्रदा एकादशी ब्रत

यह ब्रत पौष सुदी एकादशी को होता है। इसदिन चक्र-धारी भगवान विष्णुकी पूजा करे। भगवान को अच्छे आसन पर बैठावे, फिर उनके चरण धोवे, आचमन करावे, भोग लगावे, अच्छे-अच्छे वस्त्रों से सजावे, फिर धूप, दीप, फूल, चन्दन आदि से पूजा करे और आरती उतारे। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करावे और अपनी श्रद्धा के अनुसार दान देकर आशीर्वाद प्राप्त करे और उन्हें विदा करे। दिन में कीर्तन करे और रात्रि को भगवान की मूर्ति के समीप ही सोवे, दिन में केवल फलाहार करे।

इस प्रकार जो ब्रत रखते हैं उनको मोक्ष प्राप्त होता है और जो निःसन्तान होते हैं उन्हें संतान की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी की कहानी

एक समय की बात है कि भद्रावती नगरी में सुकेतुमान राजा राज्य करते थे। उनकी स्त्री का नाम शैव्या था। वे दोनों बहुत धर्मातमा और दानी थे। इनके राज्य में सभी सुखी थे परन्तु राजा-रानी दोनों निःसन्तान होने के कारण बहुत दुःखी थे, इस दुःख से वे दोनों राज्य को मन्त्रियों को सौंपकर वन को चल दिये। वन में जाकर उन्होंने अपने प्राण त्यागने चाहे। लेकिन उन्हें तुरन्त ही याद आया कि वे आत्म-हत्या कर रहे हैं, आत्म-हत्या के बराबर कोई पाप नहीं है। यह सोचते-सोचते वे दोनों आगे गये। वहाँ उन्होंने देखा कि यहां मुनियों का आश्रम है और एक तालाब भी बना हुआ है। राजा और रानी वहाँ पहुँचे, और जाकर मुनियों को प्रणाम किया और वहीं बैठ गये। मुनियों ने देखा कि वे दुःखी हैं। तब उन्होंने अपने योग-बल से राजा के दुःख का कारण जान लिया और कहने लगे-हे राजन् ! आज तुम स्नान करो, और भोजन करो, कल पुत्रदा नामकी एकादशी है। अतः तुम कल व्रत रखना और भगवान विष्णु की पूजा करना, इससे तुम्हें एक योग्य पुत्र प्राप्त होगा जो दशों दिशाओं में कीर्ति फैलायेगा। राजा ने वैसा ही किया व्रत के एक साल बाद उनके एक बहुत सुन्दर, गुणवान पुत्र उत्पन्न हुआ। यह देखकर राजा-रानी बहुत प्रसन्न हुए।

१२२. पौष पूर्णिमा मास

यह स्नान पौष की पूर्णिमा से शुरू होता है। इसदिन से

ही माघ मास के पवित्र स्नान का शुभारम्भ होता है। इस दिन सूर्य निकलने से पहिले शुद्ध जल [नदी, तालाब, कुआ, बावड़ी] में स्नान करना चाहिये और भगवान मधुसूदन की पूजा करनी चाहिये। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देवे। इससे भगवान मधुसूदन प्रसन्न होते हैं और अन्त में स्वर्ग में स्थान देते हैं। जो इस स्नानको करते हैं वे देव-विमानों में बैठकर बिहार करने के अधिकारी होते हैं। यह माघ मास का स्नान पुण्यवाले पुरुष को ही प्राप्त होता है।

* माघ मास के व्रत और त्यौहार *

माघमास भारतीय हिसाबसे ग्यारहवाँ महीना है। इसमें कुछ सर्दी कम होजाती है। इस महीनेमें गंगा या यमुना-स्नान का वहुत महत्व है,इसमें निम्न व्रत और त्यौहार होते हैं।

१२३. संक्रान्ति (मकर-संक्रान्ति)

जब पौष या माघ मासमें सूर्य मकर राशिपर आवें, तब उसदिन तथा उस समयको संक्रान्ति प्रवेशकाल और संक्रान्ति कहते हैं। अँग्रेजी तारीख के हिसाब से यह हमेशा १४ जनवरी को मनाई जाती है। इसदिन गंगा या यमुना में स्नान करें। ब्राह्मण तथा भिखारियों को यथा-श्रद्धा दान देवें।

संक्रान्ति के १-२ दिन पहले वायना काढ़ने के लिए सफेद तिल, काले तिल,चून और मूँग की दाल के लड्डू वनावे। काले तिल के लड्डूओं पर दक्षिणा रखकर संक्रान्ति के दिन ब्राह्मणों को दे देवे। संक्राँति के एकदिन पहले अपने हाथों में मेंहदी रचावे और संक्रांति के दिन गंगा-स्नान करे। वायना

काढ़ने के लिए जितने चाहें उतने सफेद तिल के और दाल के लड्डू लेवे और उनपर रुपये रखकर तथा हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवे।

गरीबों और ब्राह्मणों के लिये खिचड़ी (चावल और दाल मिलाकर) दान करे। इसके अलावा श्रद्धानुसार जो भी बस्तु चाहे चौदह-चौदह लेकर उन पर हाथ फेर लेवे। इन चौदह वस्तुओं को चाहे तो ब्राह्मणों को दे देवे या चाहे तो अपने रिश्तेदारों नँनद, जेठानी, दौरानी, आदि को भेज देवे। जैसा भी उचित समझे। जितनी चीजोंका वायना निकालना होवे उतनी चीजें और रुपये लड़कियोंको वायना काढ़ने के लिए उनकी ससुराल भेज देवे। संक्रान्ति के ३६० नेग होते हैं। इन्हें किसी वृद्ध स्त्री से पूछकर करलेवे। जिस लड़की की शादी इसी साल हुई होवे उस लड़की को उसी साल १ घाट-पाट सींचना, २ कोठी मुठ्ठी, ३ चिड़िया मुठ्ठी का नियम करावे। दूसरे वर्ष उस लड़की से उजमन करावे और उसकी ससुराल लड्डू रुपये भेज देवें। लड़कीके विवाह की साल संक्रान्ति के दिन लड़की की ससुराल सब तरह के लड्डू साड़ी सोने की चूड़ी आदि भेजकर उस लड़की से उजमन करावे। लड़की सब सामान का वायना काढ़कर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवे। वायने में रुपये भी रक्खें। संक्रांति के दिन विवाहित लड़की "बये" करे। बये का सामान पीहर वाले लड़की की ससुराल भेजें। कुछ मुख्य मुख्य नेग (बये) इस प्रकार हैं—

घाट-पाट—घाट-पाट सींचने का नियम बड़ी संक्रान्ति से लेवे। यदि रोज सींच सके तो रोज नहीं तो महीने में जो एक संक्रांति आवे उसदिन इकत्तीस जगह पूरे एक महीने का सींच लेवे। अपने घर के आगे थोड़ा सा गोबर रखे। उस पर जल के छींटे देवे। गोबर पर रोली की सात बिन्दी लगावे और चावल चढ़ावे। जल गोबर की कुड़ी के आगे सींचे। इसप्रकार बारह महीने तक पूजा करे। फिर दूसरी संक्रांति पर एक साड़ी या ओढ़ना और एक चाँदी के गिलास में मेवा भरकर तथा उस पर रुपया रखकर और हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवे।

चिड़िया मुट्ठी—चिड़िया मुट्ठी देनेका नियम बड़ी संक्रांति से ही लेवे। बारह महीने तक एक मुट्ठी चावलों को रोजाना चिड़ियों को देवे। यदि रोज नहीं दे सके तो ३१ मुट्ठी चावलों की महीने में आने वाली संक्रांति को चिड़ियों को दे देवे। बारह महीने पूरे होने के बाद बड़ी (मकर) संक्रांतिके दिन उजमन करके एक चाँदी की चिड़िया चावल और रुपये इन पर हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पाँय लगकर दे देवे।

कोठी मुट्ठी-कोठी मुट्ठी का नियम भी मकर (बड़ी) संक्रांति से ऊपर लिखे अनुसार ही लेवे। एक बर्तनमें चावल भर लेवे। उसमें से रोजाना चावलों की मुट्ठी थालों में भर ले। फिर उस थाली के चावलों को नित्य प्रति [या ३१ थाली चावल महीने की संक्रान्ति के दिन] ब्राह्मणों को

देवे। फिर मकर संक्राँति के दिन उजमन करे। उजमन में १ बड़े वर्तन [टोपिया या टेंनिया] में चावल और रुपये डालकर तथा हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पायँ लग कर दे देवे।

भगवान के पट खुलवावें—किसी मन्दिर में एक पर्दा भगवान के लिये देवे। फिर पुजारी से पर्दा हटाकर एक थालीमें मिठाई और रुपये रखकर भगवानकेआगे समर्पितकरदे

सोते हुए ससुर को जगावें—संक्रान्ति के दिन लड़की के पीहर वाले लड़की की ससुराल ससुरजी के सोनें के लिये बिस्तर [रजाई, गद्दा, तकिया, चादर आदि] भेजें। फिर उन विस्तरों पर ससुरजी सो जावें। इसके बाद बहू एक नारियल से ससुरजी के पलंग के चारों पाये बजाकर उठावें। जब श्वसुरजी उठकर बैठ जावें तब उनके आगे लड्डू और रुपये रखदेवे तथा सासुजी को पायँ लगकर रुपये दे देवे, फिर ससुरजी बहूओं को रुपये देवें। यदि पीहर से ही स्त्रियाँ आवें तो वे अपने साथ ही लड्डू और रुपये ले आवें और दामाद का तिलक कर उसे रुपये देवें। लड़की की सास को भी रुपये देवें।

थाल परोसें—दादसरेजी, ससुरेजी, तायसरेजी, पीतसरेजी नानसरेजी, मामसरेजी, [ममिया ससुर] में से किसी के भी आगे या सबके आगे वह एक थाल में मिठाइयाँ परोस कर रख दे। एक थालीमें रुपये [जितने चाहे] रख दे। इसके बाद सब लोग बहूके लिए जितने चाहें उतने रुपये देवें।

सासुजी को तीयल (कपड़े) पहिनावें—मकर संक्रांतिके दिन अपनी सासुजी को कपड़े [साड़ी, ब्लाउज आदि] पहिनावें और रुपये देकर सासुजी के पायँ लगे।

रूठी हुई सासुजी मनावें—संक्रातिके दिन सासुजी रूठकर [गुस्सा होकर] अपने कमरे को छोड़कर दूसरे कमरे में बैठ जावें। तब बहू रानी जाकर सास को मनावें, कपड़े पहनाकर रुपये देवें और पायँ लगे। फिर सासुजी से कहे कि सासुजी अपने कमरे में चलो। तब सासुजी अपने कमरे में आकर बहू को आशीर्वाद देवें।

सासुजी को सीढ़ी चढ़ावें—इस संक्रान्ति के दिन बहू सासुजी को सीढ़ी चढ़ावे। पहिली सीढ़ी पर गिन्नी या जो श्रद्धा हो रखे, फिर अगली सीढ़ियों पर रुपया श्रद्धानुसार रखती जावे। सासुजी उन्हें उठाती जावें। आखिरी सीढ़ी पर फिर उतने ही रुपये या गिन्नी रखें जो पहली सीढी पर चढ़ाते समय रक्खे थे। फिर सासुजी को नीचे उतारे। जो रकम सीढ़ी सासुजी को चढ़ाते समय रखी थी, उतारते समय उसकी आधी रकम सीढ़ियों पर रखे। चढ़ते उतरते समय की सब रकम को सासुजी अपने पास रखलें। फिर बहू सासुजी के पायँ लगे।

सासुजी को मिट्टी देवे—मिट्टी पर रुपये या गिन्नी रख कर बहू अपनी सासुजी को देवे। मिट्टी देखर सासुजी अपनी तिजूरी खोलकर बहूओं से कहे कि इसमें से गहने रुपये ले लो।

जेठ के लिये भेंट और जेठानी के लिये ऊपला देवे—

एक थालमें मिठाई और रुपये रखकर जेठके आगे रखदें, फिर जेठानी के लिये एक घेवर पर रुपये रखकर देवे और पायँ लगे। इसके बाद जेठानी बहूओंको रुपये या गिन्नी देवें।

देवर के लिये घेबर और दौरानी के लिये चूड़ी देवे—

घेवरपर रुपये रखकर अपने देवर को देवे और दौरानी के लिये साड़ी तथा सोने की चूड़ी देवे।

देवर को जेब भरे—देवर की जेवमें सव प्रकार की मेवा भरे और पहनने के लिये कपड़े (कोट, कमीज आदि श्रद्धानुसार) देवे।

आवल-चावल खूँटी चीर-अपनी नँनदोंको भोजन करावे, रसोई में चावल बनावें। फिर खूँटी पर चूड़ी और साड़ी टाँग देवे। जितनी नँनद हों उनसे भाभी कहें कि अपने आवल चावल खूँटी चीर दिखाओ। तब नँनद खूँटीपर अपने वस्त्र दिखा दें। यह कहकर उन्हें अपने भाई को दिखा देवें और उन्हें ले लेवें। फिर भाभी नँनदके पायँ लगकर रुपया देवें

ननदोईकाझोला भरे—ननदोईकेघर जाकर गीत [गारी] गावें। फिर ननदोई को पाँच कपड़ा [कमीज, धोती, रूमाल, बनयान तथा दुपट्टा] देवें। दुपट्टा ननदोई को उढ़ाकर उसमें मेवा, मिठाई और रुपये डाल देवें और तिलक करके रुपये तथा नारियल देवें। इसके बाद ननदोई के आगे थाली में मिठाई और मेवा रख देवे। फिर नँनद के पायँ लगकर उसे रुपये देवे।

जेठ के लिये जलेबी देवे–चार जलेबी और उसपर चाँदी की कटोरी में दही भरकर और रुपये या गिन्नी रखकर जेठ के लिये दे देवे। इसके अलावा चार जलेबी और दही जेठ के बच्चों के लिये दे देवे।

छींके भोजन–एक छींके पर मिठाई, मेवा, और रुपये रखदेवे। फिर उस छींके से ससुर या जेठ सामान ले लेवें। और बहू को आशीर्वाद देकर रुपये देवें।

जेब भरें [गोजियों भरें] कुवाँरी नँनद, जेठ की लड़की, देवर या भानजीकी जेबमें मेवा और रुपया भरें। छोटी होवे तो जाँगिया [नेकर] और यदि बड़ी होवें तो साड़ी दे देवे।

अपने पति का नेग करें–एक नारियलमें गिन्नी या रुपये भरकर अपने पति को देवें। उस नारियल के ऊपर चार जलेबी, पान और रुपये भी रख देवे।

पति को मलाई खिलावें–एक चाँदीकी कटोरी में मलाई या रबड़ी भरकर अपने पतिको खिलावें। फिर उसे दुशाला या पाँच कपड़े [कमीज, कोट, आदि] देवे और पायँ छुए।

पति के पैर धोयें–एक चाँदी के बर्तन में पति के पैर धोवे। पैर धोने के बाद उसे मोजे और जूते पहना दे। फिर पैर छुऐ और रुपये देवे।

सास की पीठ मलें–सासुजी की पीठ मलकर उन्हें ब्लाउज देवे और उनके आगे मिठाई, मेवा तथा रुपये रखकर पायँ लगे।

दोगड़ लावें–जिसके लड़का होवे वह संक्रांति के दिन

अपने पीहर (माँ के) से दोगड़ लावे। एक मिट्टीके घड़ा में पानी भरे। फिर उसके ऊपर एक चांदीके लोटामें जल भरके रक्खे और उसमें रुपया डाले। फिर घड़े पर रोलीसे सतिया काढ़कर पूजा करे। घड़े को किसी नौकर या ब्राह्मणी के ऊपर रखवाकर सासरे के लिए चल दे। रास्ते में मेवा और रुपये पैसे डालती जावे। हाथ में एक चाँदी की घण्टी ले लेवे। पीहर से पीछे २ स्त्रियाँ गीत गाती चलें। ससुराल पहुँचकर घड़ा एक स्थान पर रखवाकर घड़ा लाने वाले को रुपये देकर बिदा करे। यदि लड़की की माँ भी साथ जावे तो वह लड़की की ससुराल पहुँचकर दामाद के तिलक करके उसे रुपये और नारियल देवें।

दूध पिलावें—अपने ससुर या जेठ के लिये चाँदी के गिलास में दूध पिलावे। फिर उनके सामने एक थाली में मेवा, मिठाई और रुपये रख देवे। दूध पिलाकर गिलास उन्हीं को दे देवे।

धोती निचोड़ें-अपने ससुर या जेठ की इस दिन भीगी धोती निचोड़ देवे। फिर उन्हें नई धोती देकर उनके सामने मिठाई रख देवे।

विशेष-इनके अलावा अनेकों नेग हैं। यह करने वाले की श्रद्धा के ऊपर है। जो भी इनके नेग करे उसी से सम्बन्धित वस्तु उनको दे देवे जैसे सासुजी के बिन्दी लगावे तो उन्हें सोने की बिन्दी दे देवे आदि।

ब्राह्मणों के नेग-(१)एक थालीमें एक घेवर,एक रुपया

और एक पानी का गिलास रखकर भगवान के पट खुलवाए, भजन गावे और दही तथा रुपये मंदिर की भेंट करे। (२) गेहूं, साड़ी, रुपये आदि हाथ फेरकर ब्राह्मणी को देवे। (३) ३६० जगह राय-चवेनी देवे। एक-एक सेर मिठाई और रुपये ब्राह्मणों को देवे। (४) ब्राह्मणी के सिर में तेल डाल कर उसे तेल की शीशी, कंघा, शीशा, सिंदूर और माँग का टीका देवे। (५) ब्राह्मणी के हाथ में मेंहदी लगाकर उसे अँगूठी देवे। (६) ब्राह्मणी के पैर धोकर उसे बिछिया पहनावे। (७) ब्राह्मणी को नहलाकर उसे लोटा, बाल्टी और साड़ी देवे। पाँय छूकर दक्षिणा भी देवे। (८) चौदह संदूकों में अलग-अलग पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के कपड़े रखे। सुहाग की वस्तुयें, गहने, गीता, माला तथा दक्षिणा भी उनमें रखे। फिर उनको चौदह ब्राह्मणों को दे देवे। (९) ब्राह्मणी को बारहों महीने भोजन कराकर उसे साड़ी और दक्षिणा देवे। (१०) चौदह वर्तनों में गेहूँ भरकर ब्राह्मणों को देवे। (११) चौदह सुहाग पिटारी और दक्षिणा ब्राह्मणियों को देवे। (१२) चौदह ब्राह्मणों को भोजन करावे और दक्षिणा देवे। इसके अलावा अनेकों नेग हैं। जिन्हें स्वयं या किसी से पूछकर कर लेवे।

संक्रान्ति के दिन लड़कियों के सासरे भेजे—प्रत्येक साल की संक्रान्ति के दिन अपनी लड़कियों और बहिनों की ससुराल मिठाई, तिलके लड्डू, मूँग की दालके लड्डू, मेवा तथा रुपये आदि भेजे। यदि लड्डू आदि सामान न भेजे सके तो

उसके बदले रुपये भेज देवे। सगुनके थोड़े लड्डू अवश्य देवे।

१२४. सकट (संकट मोचन, गणेश, माँही) चौथ

यह चौथ माह वदी चौथ को आती है। इसदिन गणेशजी और चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिए। इस दिन सुबह उठकर पहले स्नान करे, सिर धोवे, फिर हाथों में मेंहदी लगावे और सफेद तिल तथा गुड़ का तिल-कुट्टा बनावे। इसके बाद एक पट्टे पर जलका लोटा, रोली, चावल, और एक कटोरी में तिलकुट्टा और तिल रखे। जलके लोटा पर रोली से एक सतिया काढ़कर उस पर तेरह बिन्दी लगावे। फिर हाथ में थोड़ा तिलकुट्टा लेकर कहानी सुने। कहानी सुनने के बाद एक कटोरी में तिलकुट्टा और रुपये रखकर वायना निकाल ले और फिर उसे सासुजी को पाँय लगकर दे देवे। इसके अलावा जल का लोटा और कहानी सुनने के समय हाथ में लिया हुआ तिलकुट्टा एक जगह रख देवे। शाम को चन्द्रमा निकलने पर उसी लोटे से अर्घ्य देकर भोजन कर लेवे। गणेशजी का भी तिलकुट्टा [तिल के लड्डुओं] का ही भोग लगावे। अपनी बहिन और लड़की की ससुराल एक कटोरी में तिलकुट्टा [तिल के लड्डू] और रुपये भेज देवे। इसव्रतके रखने से सौभाग्य, धन,पुत्रकी प्राप्ति होती है।

चौथ का व्रत और उजमन

यदि किसीके इसीवर्ष लड़का उत्पन्न हुआ हो या लड़के का विवाह हुआ होवे तो वह सकट [माँही] चौथ का उजमन करे। उजमन में सवासेर सफेद तिल और सवा

सेर गुड़ मिलाकर तिलकुट्टा बनावे। उस तिलकुट्टाके १३ लड्डू बना लेवे और उन पर एक साड़ी और रुपये रखे तथा हाथ फेरकर सासुजी को देवे और पाँय लगे। फिर माँही चौथ (गणेश चौथ) की कहानी सुने।

यदि केवल चौथ का ही उजमन करना होवे तो एक थालीमें तेरह जगह ४-४ पूरी और सीरा रखे। उसके ऊपर १ साड़ी और रुपये रखकर सासुजी के पाँय लगे और उस सामान को दे देवे। इसके बाद तेरह ब्राह्मणियों को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा देकर विदा करे। इस तरह यह उजमन किसीभी महीनेके शुरूकी चौथको किया जासकता है।

सकट (संकट मोचन, माँही, गणेश) चौथ की कहानी

एक समय देवताओं पर बहुत भारी कष्ट आ पड़ा। अतः वे कष्ट से दुखी होकर भगवान शंकरजी के पास गये। उस समय शंकरजी के पास उनके पुत्र कार्तिकेय और गणेशजी बैठे थे। तब शंकरजी पुत्रों से बोले-हे पुत्रो! तुम में से कौन देवताओं के कष्ट दूर कर सकता है? तब कार्तिकेयजी कहने लगे-मैं देवताओं का सेनापति हूं इसलिये मैं इनके कष्ट को शीघ्र दूर करदूँगा। अतः आप मुझे सबसे बड़ा देवता घोषित कर दीजिए। शङ्करजी उनकी बात सुन कर फिर गणेशजी से बोले-बेटा तुम्हारी क्या इच्छा है? तब गणेशजी बोले-यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं बिना सेना पति बने ही संकट दूर कर सकता हूँ। चाहे आप बड़ा देवता किसी को भी बनावें। मुझे इस बात का कोई लालच नहीं।

यह सुनकर शंकरजी हँसे और दोनों पुत्रों से बोले-जाओ, जो सबसे पहिले पृथ्वी की परिक्रमा करके आवेगा वही सबसे बड़ा और बहादुर देवता माना जायाग। शंकरजी की यह आज्ञा सुनकर कार्तिकेयजी अपने वाहना मोर पर बैठ कर पृथ्वी की परिक्रमा देने के लिये चल दिए। गणेशजी ने अपना वाहन चूहा सँभाला और उस पर बैठ कर अपने पिता शंकरजी तथा माता पार्वतीजी की तीन परिक्रमा लगा लीं और बैठ गये। रास्ते में कार्तिकेयजी को अपने से आगे चूहे के पैरों के चिन्ह दिखाई देने लगे।

जब वह परिक्रमा करके शंकरजी के पास पहुँचे तो बोले-मैं तो परिक्रमा करके वापिस भी आ गया परन्तु गणेश तो यहीं बैठा है। तब शंकरजी गणेशजीसे बोले-क्यों बेटे! तुह्मारे भाई यह ठीक कहते हैं? तब गणेशजी बोले-हो सकता है ठीक कहते हों। परन्तु मैंने पृथ्वी की तीन परिक्रमायें की हैं। इसपर शंकरजी बोले-वह किस प्रकार कीं? तब गणेश जी बोले-पिता और माता में पृथ्वी के सभी तीर्थ मौजूद हैं इसलिए मैंने आपकी तीन परिक्रमायें की हैं। गणेशजी की बात सुनकर सभी देवता और कार्तिकेयजी चकित हो गये। तभी शंकरजी बोले-जाओ, आज से तुम्हारी पूजा सबसे पहिले होगी और जाकर तुम देवताओं के संकटको दूर करो। तब गणेशजी ने देवताओं के कष्ट को अपनी बुद्धी से उसी दिन समाप्त कर दिया। तब शंकरजी गणेशजी से प्रसन्न होकर बोले-बेटे! आज मैं अपने चन्द्रमा को तुम्हें दे रहा

हूँ। जो चौथ के दिन तुम्हारे माथे पर ताज बनकर चमका करेगा। जो इस दिन तुम्हारी पूजा करेगा और चन्द्रमा को अर्घ्य देगा। उसे धन, सुख, सुहाग, पुत्र आदि सभी वस्तुऐं प्राप्त होंगी और वह सभी दुखों से मुक्त हो जावेगा। यह सुनकर देवता लोग खुशी-खुशी अपने घर चले गये। हे गणेशजी ! जैसे आपने देवताओं के संकट दूर किए वैसे सबके संकट दूर करना और सबको धन, सुहाग पुत्रादि देना।

१२५. शीतला छठ

यह छठ माहबदी छठको आती है। इसदिन कुत्ते को दूध और रोली से टीका करके उसको ठंडे-ठंडे पकवान खिलावें। व्रत रखने वाली स्त्रियां न तो गर्म पानी से स्नान करें और न गर्म वस्तुऐं ही खावें तथा न किसी अन्य व्यक्ति को गर्म्र बस्तुएँ खानेको देवें। यह व्रत अधिकतर बंगालमें किया जाता है। इस व्रत के विधिपूर्वक करने से आयु बढ़ती है।

शीतला छठ की कहानी

एक गांवमें एक साहूकार और साहूकारनी रहते थे। उनके ७ पुत्र और ७ ही पुत्री थीं। उनने अपने सभी ७ पुत्रों और ७ पुत्रियों के विवाह कर दिये। बेटों के विवाह हो जाने से साहूकारनी को काम से छुट्टी मिल गई। एक दिन उसने ठंड के कारण गरम पानी करवाकर स्नान कर लिया और खाना भी गरम ही खा लिया। ऐसा करनेसे उसके पुत्र और उनको बहुयें तथा बच्चे सबकी एक साथ मृत्यु होगई। यह देखकर साहूकारनी ने हाहाकार करना प्रारम्भ कर दिया,

परन्तु सब बेकार। जब रात्रिको वह सोई हुई थी तो उसे एक बुढ़िया ने आकर जगाया और कहा-तैंने कल (शीतला छठ) को गरम पानी से स्नान किया और गरम भोजन किया इससे मुझे कष्ट हुआ क्योंकि शीतला माता हूँ। यदि कल तू सुबह ब्रत रखकर कुत्ते के दही रोली से टीका लगावे और उसे ठंडे पकवान खिलावे तो तेरे घर के सब जीवित हो जायँगे। साहूकारनी ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और उसके घर के सब जीवित होगये। इसीलिये इसदिन को शीतला-छठ कहते हैं। हे शीतला माता! जैसे! तूने साहूकारनी के बेटे और बहुओं की आयु बढ़ाई वैसे सबकी बढ़ाना।

१२६. षट्-तिला एकादशी व्रत

यह ब्रत माह वदी एकादशीको आता है। इसदिन भगवान वैकुण्ठ की पूजा की जाती है। पहिले ब्रत रखने वाले ब्रत रखकर तिल का उवटन करें, स्नानके बाद भगवानकी मूर्ति को पंचमृत में तिल डालकर स्नान करावें, तिलों की वनी वस्तुओं का भोग लगावें और स्वयं भी तिलों से बनी वस्तुऐं ही खावें तथा ब्राह्मणों को भी तिल से बनी वस्तुऐं खिलावें और उन्हें दान दक्षिणा देकर विदा करें। इस एकादशी को तिल देने का महत्व अधिक होता है। दिनमें भगवान का कीर्तन करें और रात्रिको मन्दिर या मूर्ति के समीप ही सो जायें। इसदिन छः प्रकार से तिल प्रयोग किये जाते हैं इसलिये इसे षट् (छः) तिला एकादशी कहते हैं।

इस दिन हाथ पैर धोकर गोबर में तिल और कपास

मिलाकर कण्डे (ऊपले) बनावे। उन कण्डों से १०८ बार हवन करे। फिर तिल दान करे।

जो इस प्रकार ब्रत धारण करते हैं वे इसलोकमें मनोवांछित भोगों को भोगकर अन्त में विष्णुलोक को प्राप्त होते हैं।

षट्-तिला एक दशी की कहानी

एक समय की बात है कि काशी नगरी में एक मनुष्य रहता था। वह बहुत गरीब था। यहाँ तक कि वह कभी कभी अपने बच्चों के साथ भूखा ही सो जाता था। जंगल से लकड़ी काट कर अपना गुजारा करता। परन्तु कभी-कभी जब लकड़ी नहीं बिकती थी तो बच्चों सहित भूखा रह जाता था। एकदिन वह गरीब जब जंगल से लकड़ी काटकर शहर की ओर आ रहा था। तो उसकी लकड़ियों को एक सेठ ने खरीद लिया। जब वह लकड़ी लेकर सेठ के घर पहुँचा तो उसने सेठ के घर देखा कि वहाँ किसी बात की तैयारियाँ हो रही हैं। तब लकड़हारे ने पूछा कि यह किसकी तैयारी हो रही है ? तब सेठजी बोले-कल षट्तिला एकादशी है उसके ब्रत की तैयारियाँ हो रही हैं। इस बात को सुनकर लकड़हारा बोला-इस ब्रत से क्या लाभ है ? तब सेठजी ने कहा-इससे धन-दौलत बढ़ती है। मन की इच्छा पूरी हो जाती हैं। इसको सुनकर लकड़हारा बोला-इसकी विधि मुझे भी बताओ। लकड़हारा की बात सुनकर सेठजी ने उसे विधि बतादी, लकड़हारे ने अपने घर जाकर यह बात अपनी स्त्री को बताई। इस पर स्त्री बोली-आप

भी इन पैसों से एकादशी के लिये सामान खरीद लाइये और एकादशी-व्रत हम भी धारण करेंगे। उसने वैसा ही किया और दूसरे दिन व्रत रखा और विधि-विधान से भगवानकी पूजा की और तिलों का दान दिया, दिन में कीर्तन किया और रात्रिमें भगवान की मूर्ति के ही समीप, बच्चों सहित, इन्द्रियों को अपने वश में करके सो गया। उसके एक वर्ष बाद वह गरीब आदमी काशी नगरी का सबसे बड़ा सेठ हो गया। हे एकादशी माता! जैसे तुमने उस लकड़हारे को धन दौलत दी वैसे सबको देना।

१२७. मौनी-मावस तथा मौन व्रत

यह अमावस्या माघ मासको शुरूकी पन्द्रहको आती है। इसे मौनी मावस या मौनी अमावस्या भी कहते हैं। इस दिन प्राणियों को पूरे दिन मौन (चुप) रहना चाहिये। अर्थात् मुँह से जरा भी शब्दोच्चारण नहीं करना चाहिये। यह व्रत एक दिन या एक महीना या छः मास या एकसाल तक या इससे भी अधिक अपनी क्षमता के अनुसार रखाजाता है। इस मौन व्रत को धारण करने में मुनि-पद की प्राप्ति होती है अर्थात् अगले जन्म में मुनि कहलाने के अधिकारी हो जाते हैं। अन्त समयमें ब्रह्मलोककी भी प्राप्ति होती है। इस दिन युग प्रवर्तक (सृष्टिके रचयिता) मनुजी का जन्म दिवस है। इसीलिए इसदिन उनकी याद में मौन धारण करना चाहिये। इससे ऊपर लिखे लाभ तो हैं ही, साथ ही कम बोलनेका अभ्यास भी होजाता है। अधिक बोलने का दोष

दूर हो जाता है। इसके बारेमें कबीरदास ने कहा भी है—

दोहा—अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥

इस दिन काले तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर उसमें दक्षिणा रखकर तथा एक लाल कपड़ा में बाँधकर ब्राह्मणों को दान स्वरूप दे देवे। काले तिल से शरीर का उबटन करें और गंगाजी या यमुना जी में स्नान करें।

१२८. बसन्त पंचमी

यह त्योहार माघ सुदी पंचमी को आता है। इस दिन सरस्वती देवीका जन्म हुआ था। इसलिये इसको सरस्वती दिवस भी कहते हैं। इसदिन सरस्वती देवी की पूजा करे, और जल, रोली, मोली,चावल,पीले फूल,अबीर,गुलाल,फल, दक्षिणा चढ़ावे,आरती करे, रेवड़ी का भोग लगावे, बसन्ती (पीले) कपड़े पहिने, बसन्त पंचमी के दिन मीठे केसरिया चावल **बनावे**। भगवान की मूर्तिको भी केसरिया वस्त्र पहिनावे। इसदिन अपने पतिको स्वयं खाना परोसकर खिलावे। इससे पति के कष्ट दूर होते हैं और उसकी आयु बढ़ती है।

बसन्त पंचमी का टीका

यदि किसीके लड़के की शादी तय हो गई हो तो लड़के के माता-पिता अपने लड़के की होने वाली बहू के लिए सुन्दर पीले कपड़ों से सजे हुए गुड़िया, गुड्डा, बेर, रेबड़ी, केला, मेवा तथा मिठाई आदि भेजते हैं। लड़की वाला लड़के वालेके यहाँ सगुनके खोये के पीले पेड़े भेजता है। इस

दिन क्वारी लड़कियों के लिए पीले कपड़े (फिराक) आदि पहनाने चाहिए। अपने रिश्तेदारों के यहाँ भी सामान भेजना चाहिए । इस प्रकार इस त्यौहार को परस्पर एक दूसरेके यहाँ सामान भेजकर बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।

बसन्त पंचमी की कहानी

भगवान विष्णु की आज्ञा के अनुसार ब्रह्माजी ने इस सृष्टिकी रचना करडाली । उस रचनाको देखनेके लिए एक दिन ब्रह्माजी संसार की ओर चलपड़े । जब वे संसारमें आये तो उन्होंने चारों तरफ देखा कि सब जगह सूना ही सूना है, न कोई बोलता है न कहता है, न कोई सुनता है । चारों तरफ मूकता ही मूकता छाई हुई है । जब ब्रह्माजी ने यह

देखा तो वह सोचविचार में पड़ गये। तब उन्होंने अपने कमण्डलु में से जल लेकर छिड़का। उस जल की बूँदों के प्रभाव से वृक्षों से एक देवी प्रकट हुई जिसके हाथ में वीणा लगी हुई थी। उससे ब्रह्माजी बोले-तुम अपनी वीणा से सारे संसार की मूकता दूर करदो तब देवीने वीणा बजाकर सबको वाणी प्रदान की, तभी से उस देवी को सरस्वती कहते हैं। इसके

हाथ में वीणा होने से इसको "वीणा-वादिनी या "वीणा-धारिणी" भी कहा जाता है। इसी कारण से इस दिवस को सरस्वती दिवस के रूप में घरों तथा गुरुकुलों में मनाया जाता है और सरस्वती की पूजा की जाती है। सरस्वतीजी विद्या, आयु तथा बुद्धि के देने वाली हैं।

१२९. सूर्य सप्तमी या पुरश्चरण-सप्तमी व्रत

यह व्रत माघसुदी सातें या सप्तमी को होता है। इसदिन भगवान सूर्य देव को गंगाजल से अर्घ्य देवें, रोली, लाल चंदन चावल, लाल पुष्प, भोग, फल जनेऊ, धूप, दक्षिणा चढ़ावे और दीपक तथा कपूर से आरती उतारे। सूर्य देव की परिक्रमा देवे। व्रती पुरुष या नारी सुबह ही शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करने के बाद भगवान सूर्यदेव से कहे--

"हे सूर्य देव ! मैं आज पुरश्चरण सप्तमी का उपवास करूँगा [करूँगी] अतः अब में आपकी शरण हूं, मेरी सहायता करो।" फिर तीसरे काल अर्थात् बारह बजे के बाद से तीन बजे तक के बीच में स्नान करके धुला हुआ वस्त्र पहिनकर पवित्र होवे और सूर्यदेव की प्रतिमा को स्नान कराकर लाल वस्त्र पहिनाकर, लाल रंग के फूल भक्ति पूर्वक अर्पण करे। कपूर की धूप निवेदन करे। गुड़ भात का भोग लगावे। उस भोग को भी भगवान के आगे लाल वस्त्र से ढककर लावे। भोगके बाद आचमन कराकर घीके दीपक से आरती उतारे। उसके बाद शंख में लाल चंदन मिला हुआ जल और फल लेकर उगते हुए सूर्यदेव को अर्घ्य देवे और कहे—

"हे दिनेश! मैंने आज तक जानकर या अनजाने कुछ भी पाप किये हों, उनको क्षमा करें तथा मेरा अर्घ्य ग्रहण करें।" इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें दान देकर बिदा करे। इसके बाद स्वयं भोजन कर लेवे। इस व्रत के करने से समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

१३०. भीष्माष्टमी व्रत

यह व्रत माघ सुदी आठें (अष्टमी) को आता है। इस दिन कौरव और पांडवोंके बाबा भीष्म पितामहकी इच्छा-मृत्यु हुई थी। इस दिन सूर्य देव उत्तरायण में रहते हैं। भीष्म पितामह के तर्पणके लिये इस दिन व्रत रखकर सूर्य-देव को अर्घ्य देना चाहिये। जो इस प्रकार व्रत रखते हैं वे श्री कृष्ण के लोक को प्राप्त होते हैं।

१३१. जया एकादशी व्रत

यह एकादशी माघ सुदी एकादशी को आती है। इस दिन भगवान केशव की जल, रोल चावल, इत्र, पुष्पों से पूजा करे। आरती उतारे फिर भोग लगावे। भोग को बाँटकर बचे हुए को स्वयं खा लेवे। ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें दान देकर विदा करे। रात्रि को भगबान के चरणों में ही शयन करे।

जो इसप्रकार ब्रतधारण करते हैं। उन्हें भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदि की योनियों से मुक्ति मिल जाती है। अनेक जन्मों के दोष तथा ब्राह्मणों के पाप भी नष्ट हो जाते हैं और अन्त में इस लोक के भोगों को भोगकर स्वर्ग को जाते हैं।

जया एकादशी की कहानी

एक दिन इंद्रकी सभामें एक गन्धर्व गायन कर रहा था परन्तु उसका मन अपनी नव-यौवन पत्नी में फँसा हुआ था। इस कारण उस गन्धर्व का गायन में मन नहीं लग रहा था। इसलिए गायन और वादन दोनों बेसुरे चल रहे थे। यह देखकर इंद्र बहुत क्रोधित हुआ और बोला-रे दुष्ट गन्धर्व ! तू जिसकी याद कर रहा है वह राक्षसी हो जायगी। यह बात सुनकर वह बहुत घबड़ाया और इंद्र से क्षमा माँगने लगा परन्तु इंद्रने कुछ नहीं सुना और अपनी सभासे उठ-कर चला गया। जब गन्धर्व घर आया तो उसकी पत्नी राक्षसीके वेषमें मिली। तब गन्धर्व ने बहुत से उपाय किये परन्तु कुछ नहीं हुआ। इसी तरह उसे बहुत दिन बीत गये। एक दिन नारदजी आये और गन्धर्व से उनके दु:खी होने का कारण पूछने लगे। तब गन्धर्वने उनको सब बात बतादी। यह सुनकर नारदजी बोले-हे गन्धर्व ! माघ मास की शुक्ल पक्ष की जया एकादशी आवेगी। तू उस दिन भगवान की पूजा करना और व्रत रखना तथा भगवान के सामने खड़े होकर कहना-हे भगवन् ! मेरे व्रत का फल मेरी पत्नीको मिले। तो वह ठीक हो सकती है। गन्धर्वने ऐसा ही किया। तब द्वादशी के दिन उसने देखा कि उसकी पत्नी एक सुन्दरी के रूप में उसके सामने आगई। उसी दिन से इस व्रत का महत्व बढ़ गया। हे एकादशी माता ! जैसे तुमने उस गन्धर्व पत्नी का उद्धार किया वैसे सबका करना, हमारा भी करना।

१३२. माघ मास में दान-पुण्य

माघ के महीने में काले तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर गरीब ब्राह्मणों को दान करे, काले तिलसे हवन करे तथा काले तिलसे हीं अपने पितरों को जल देवे। गंगास्नान करे, किसी पंडितसे 'माघ महात्म्य' सुने। सफेद तिल और खोआ के लड्डू बनाकर भगवान का भोग लगावे। फिर उस भोग को बाँट कर बचे हुए को स्वयं खा लेवे। इस महीने में जितना हो सके दान-पुण्य करे।

१३३. माघ पूनों (पूर्णिमा)

यह माघ मास की पूर्णिमासीको आती है। यह दिन माघ स्नान का अन्तिम दिन होता है। इस दिन स्नान करने से नर्ककी यातनायें नहीं भुगतनी पड़तीं और मनुष्य भवसागर से पार होकर विष्णु लोक को जाता है।

फाल्गुन मास के व्रत और त्यौहार

यह मास भारतीय हिसाब से वर्ष का अन्तिम अर्थात् बारहवाँ महीना है। साल समाप्त होने में चैत्र के १५दिन [कृष्ण पक्ष] शेष रहते हैं जिसका वर्णन भी इसीमास में ही आ जाता है। इस महीने में सर्दी कम हो जाती है। गेहूँ और मटर आदि पकने लग जाते हैं। मौसम वहुत सुहावना हो जाता है। न गर्मी हो होती है और न सर्दी ही। यह महीना भारतीयों के लिये बहुत हो मस्त एवं उल्लासमय है।

१३५. जानकी नवमी व्रत

यह व्रत फाल्गुन बदी नवमीको आता है। इसदिन सीताजी

की समस्त सामग्री से पूजाकर सुहाग की वस्तुओं से उन्हें सजावें। कहा जाता है इसदिन सीताजी का जन्म हुआ था। इसीके उपलक्षमें यह नवमोजानकी-नवमी या सीता नवमीके नामसे मनाई जाती है। जो इस ब्रतको धारण करते हैं उनको अटल-सुहाग की प्राप्ति होती है तथा पृथ्वी पर समस्त सुखोंको भोगकर अन्त में वैकुण्ठ लोक की प्राप्ति होती है।

१३५. विजया एकादशी ब्रत

यह ब्रत फाल्गुनवदी एकादशीको किया जाता है। इस दिन भगवान श्रीनारायण को समस्त सामग्री से पूजा करे।

एकादशीके एकदिन पहले अर्थात् दशमीके दिन किसी भी वस्तुका बना एक घड़ा जल से भर लेवें। उसके ऊपर पंच-पल्लव रखकर स्थापित करें। उस घड़ेके नीचे सतनजा (सात प्रकार के अन्न) और ऊपर जौ रखकर घड़े के ऊपर भगवान नारायण की प्रतिमा रखे। एकादशी के दिन स्नानादि से निवृत हो धूप, नैवेद्य, नारियल आदि से भगवानकी पूजा करे। दिन-रात कीर्तन करे। द्वादशी के दिन नदी या सरोवर में स्नान करने के पश्चात् उस घड़े को किसो ब्राह्मण को देदेवे।

इस प्रकार जो व्रत करते हैं इनको प्रत्येक काम में सफलता (विजय) प्राप्त होती है।

विजया एकादशी की कहानी

त्रेतायुग में जब मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीको चौदहवर्षका बनवास मिला तो वह भाई लक्ष्मण तथा पत्नी सोता जी सहित पंचवटी पर रहने लगे। वहाँ पर रावणीक

बहिन सूर्पणखाको कुरूप कर देने के कारण रावण ने रामचन्द्रजी से बदला लेने की सोची। अतः उसने मारीच को सोने का मृग बनाकर रामचन्द्रजी को पंचवटी से दूर हटाया तथा लक्ष्मणजीको धोखा दिया। जिससे वह भी रामचन्द्रजी को ढूँढ़ने के लिये चले गये। पीछे से रावण जानकीजी को हरकर लंका ले गया। इधर जब रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी के साथ पंचवटी आवे तो वे जनक कुमारी सीता को न पाकर बहुत व्याकुल हुए। तब पवनसुत हनुमानजी ने सीताजीका पता लगाया। पता लगने पर रामचन्द्रजीने सुग्रीवकी सहायता से बन्दर भालुओं की सेना तैयार कर लंका पर चढ़ाई करने की योजना तैयार की और लंका के लिये प्रस्थानकर दिया किन्तु मार्ग में समुद्र होने के कारण सेना सहित समुद्र पार जाने में बाधा-उपस्थित होगई। यह देखकर लक्ष्मणजी ने रामजीसे कहा-हे आदि पुरुष! नजदीक में ही बकदालभ्य नामका मुनिना आश्रम है। अतः आप उनसे समुद्र पार करने को कोई सुलभ उपाय पूछिये। लक्ष्मणजी के परामर्शको मानकर रामचन्द्रजी मुनिके आश्रममें गये और प्रणाम कर समुद्र मार्ग पार करने का उपाय पूछने लगे। तब मुनि ने रामजी से कहा फाल्गुन मास के कृष्ण पक्षकी विजया एकादशी को बिधि विधानसे व्रत करो। इससे तुम अवश्य ही सेनासहित समुद्र के पार हो आओगे और विजय भी प्राप्त करोगे। तब रामचन्द्रजीने बताये अनुसार विधि विधानसे व्रत किया जिसके प्रभाव से उन्होंने समुद्र पार कर लंका पर चढ़ाई की और रावण को मारकर राक्षसों पर विजय प्राप्त की।

१३६. शिवरात्रि व्रत

यह शिवरात्रि फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी या तेरस को आती है। कहा जाता है भगवान शिवजी इस दिन सम्पूर्ण शिवलिंगों में प्रवेश करते हैं। इसलिये इसको शिवरात्रि कहते हैं। इसदिन भगवान शिवजी और माता पार्वतीजी को पूजा करनी चाहिए।

शिवरात्रि के दिन सभी प्राणी व्रत करें, ब्राह्मणों को भोजन करावें, शिव-पार्वती की पूजा करें। गंगाजल, रोली, मोली, चावल, पान, सुपाड़ी लोंग इलायची, दूध, घी चीनी, शहद, फल-फूल, कमल गट्टा, बेलपत्र, प्रसाद, दक्षिणा, भाँग तथा धतूरा चढ़ावें। फिर धूप दीप से आरती उतारें, "शिव सहस्रनाम" या "शिव चालीसा" का पाठ करें पूजा के पश्चात् शिवजी

पर भाँग [घुटी हुई भंग] चढ़ावें फिर बची हुई को स्वयं पी लेवें, तथा अन्य सज्जनोंको भी पिलावें। दिनभर व्रत रखने के बाद शामको भोजन कर लेवे। रात्रिको जागरण करें और शिवजीके भजन गावें। इसदिन चारपाई पर बैठना निषेध है।

जो इसप्रकार व्रत रखते हैं वे सब पापोंसे मुक्त होजाते

हैं और अपने मनोवाँछित फलों को प्राप्त करते हैं। अन्त समय में भगवान शिव के रुद्रलोक को प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार गंगाजी के समान कोई पवित्र नहीं हैं उसी प्रकार शिवरात्रि व्रत के समान भी कोई व्रत नहीं है।

जेयर चढ़ावें

इससाल जिसके लड़का हुआ हो वह अथवा जिस लड़के का विवाह हुआ हो उसकी बहू शिवजी पर जेयर चढ़ावे। एक घड़े में पानी भरकर स्वयं अथवा किसी ब्राह्मणके सिर पर जल का घड़ा रखवाकर और सब ऊपर लिखा हुआ पूजा का सामान लेकर शिवजी के मंदिरको जावे। पीछे २ अन्य स्त्रियाँ गीतगाती जावें। मन्दिरमें जाकर उस घड़ेके जलसे शिवजी को स्नान करावे, फिर सब सामग्री से पूजाकरे, इसके बाद घर आकर गीत गावें तथा साथजाने वाली स्त्रियोंको मिठाई और दक्षिणा देकर विदाकरे। इससे शिवजी प्रसन्न होकर उस स्त्रीको सौभाग्यवती तथा पुत्रवती होनेका बरदान देते हैं।

शिवरात्रि की कहानी

एक समयकी बात है कि भगवान शंकरजीके पास उनके अनेकों भक्त बैठे हुये थे परन्तु भगवान शङ्कर अपने भक्तों से इतने तङ्ग थे कि वह स्वयं कुछ कर भी नहीं सकते थे। उन्होंने भक्तों से कहा देखो, अब मेरे पास कभी मत आना जिसको जो वर माँगना हो वह माँग लेवे। उनमें से एक भक्त बोला-हे भगवन्! कृपया आप यह बताइये कि हमें आप के दर्शन मृत्यु लोक में कौन से दिन प्राप्त हो सकेंगे। तब

शिवजी कहने लगे देखो, फाल्गुन वदी तेरस के दिन संसार में जितने भी शिव-लिंग हैं मैं उन सबमें प्रवेश करूँगा। तुम उसी-दिन मेरे दर्शन करना। जो इसदिन मेरी पूजा तथा व्रत करेगा और बेलपत्र चढ़ावेगा। वह रुद्र लोकको प्राप्त होगा। यह बात किसी तरहसे दीनपुरके रहने वाले, एक म्लेक्ष ने सुनी। तब उसने शिवरात्रि के दिन व्रत रखनेकी योजना बनाई परन्तु उसदिन वह जंगलमें जाकर रास्ता भूल गया। अतः उसदिन वह न कुछ खा सका और न कुछ कर सका। इतने में रात होगई और डरसे वह एक बेलके पेड़पर चढ़गया। उस वृक्ष के नीचे ही बहुत पुरानी शिवलिंग थी। वृक्ष पर चढ़ने से उस शिवलिंग पर कुछ बेलके पत्ते गिर गये। इधर वृक्ष के ऊपर बैठा-बैठा वह म्लेक्ष सोचने लगा कि मैंने आज शङ्करजी का व्रत रखने का निश्चय किया था परन्तु व्रत तो रख लिया लेकिन पूजा नहीं हुई। उसे यह नहीं पता था कि शिव-लिंग, उसी वृक्षके नीचे है। उसके हृदयमें शङ्करजीका नाम आते ही शङ्करजी ने सोचा यह मेरानाम लेकर ही मेरे लिंगपर बेलपत्र चढ़ारहा है। ऐसा सोचकर वह उस म्लेक्षपर प्रसन्न हो गये और उसे म्लेक्षयोनिसे मुक्तकर रुद्र लोक में बुला लिया।

शङ्करजी (भोले बाबा) की कहानी

एकबार एक चोर शिवजी के मन्दिर में गया। मन्दिर बिलकुल सूना था। उस मन्दिरमें एक पीतल का बड़ा घंटा लटका हुआ था। चोरने उस घंटेको चुरानेकी सोची अतः उसने उस घंटेतक पहुँचना चाहा। परन्तु उस घंटे तक पहुँचने का

कोई साधन नहीं था। अतः वह भट से शिवलिंग पर चढ़ गया। ज्योंही वह शिवलिंग पर चढ़ा कि शिवजी प्रकट हो गये और बोले-वर माँग,वर माँग! इस पर वह चोर शिवजी से कहने लगा-हे भगवन्! मैं तो मन्दिर में चोरी करनेके लिए आया था। तब शंकरजी बोले-मैंने तो यह सोचा कि रावण तो अपने शिर चढ़ाकर मेरी पूजा करता था परन्तु तूने अपना शरीर ही मुझ पर चढ़ा दिया। इसलिये मैं प्रसन्न हुआ हूं। परन्तु मेरा प्रकट होना व्यर्थ नहीं जाता। अतः तुम अन्त समयमें रुद्र-लोक को प्राप्त होगे और मेरे गण बनोगे। यह कहकर शिवजी अन्तर्धान होगये। ऐसे हैं भोले बाबा। हे भोले बाबा! जैसे तुम उस म्लेछ'और चोर पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न होना।

बम्-बम् भोला

शिवरात्रि के दूसरे दिन बम्-बम् भोला मनाया जाता है इसदिन शिवजी के गण स्थान स्थान पर सींगी बजाते तथा खप्पर लेकर घूमते हैं। भगवान शिवजीकी प्रसन्नताके लिए उनके खप्परों में कच्चा भोजन (चावल, कढ़ी, मूँग, रोटी, मीठा आदि) भर देते हैं और उनके टीका करके दक्षिणा देकर विदाकर देते हैं। इसके बाद स्वयं भोजन करना चाहिए

१३७. आसमाता की पूजा

आसमाता का व्रत फाल्गुन सुदी प्रतिपदा [परिवा] से लेकर आठें [अष्टमी] तक किसी भी एक दिन [शुभ दिन देखकर] कर लेवे। व्रत के दिन एक पट्टे पर एक जलका लोटा रखे। लोटे पर रोली से एक सतिया बनावे

और चावल चढ़ावे। सात दाने गेहूँ के हाथ में लेकर आसमाताको कहानी सुने। फिर सीरा, पूरी तथा रुपयेका वायना निकाल कर अपनी सासुजीको पायँ लगकर दे देवे। इसके बाद स्वयं भोजन कर लेवे।

आसमाता का उजमन

यदि किसीके लड़का हुआ होवे या लड़केका विवाह हुआ होवे तो आसमाता का उजमन करे। सात जगह चार-चार पूड़ी औरा सीरा (हलुआ) रखकर उसके ऊपर एक तीयल (साड़ी,ब्लाउज) तथा रुपये रखकर और उसके चारों ओर हाथ फिराकर उसे अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे।

आसमाता की कहानी

एक आसलिया बाबलिया नामका आदमी था। वह जूआ खेलनेका बहुत शौकीन था। जुआमें चाहे वह हारता चाहे वह जीतता लेकिन वह ब्राह्मणों को भोजन अवश्य करवाता था। यह देखकर एकदिन उसकी भाभी उससे बोली-कि यह तो जूआमें हारे या जीते ब्राह्मणोंको भोजन अवश्य कराता है। ऐसे कैसे काम चलेगा। यह सुनकर आसलिया बाबलिया घर छोड़कर निकल गया। घर से निकलने के बाद वह एक शहरमें पहुँचा और आसमाता की आशा करके एक स्थान पर बैठ गया। आसलिया बाबलियाके उस शहर में पहुँचने को यह खबर सबमें फैलगई कि एक बहुत ऊँचा जूआ खेलने वाला आदमी आया है। यह समाचार जब राजाने सुना तो उसने आसलिया बाबलियाको जूआ खेलनेके लिये बुलाया।

जूआमें राजा अपना सब राज-पाट हारगया और बावलिया उस शहरका राजा बनकर राज्य करने लगा। इधर आसलिया बावलियाके घर पर खानेके लिए अन्न भी न रहा। अतः उसके सब घरके माता, बहिन, भाभी आदि उसे ढूँढ़ने के लिए निकल पड़े और ढूँढ़ते २ उसी शहरमें पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने सुना कि एक जुआरीने जूआमें राजाको जीत लिया है और वहीं राजपाट कर रहा है। वे सब यह सुनकर नये राजाके पास पहुँचे और कहने लगे आसलिया बावलिया नामका हमारा लड़का भी जूआ खेलता था। इसलिये हमने उसे घरसे निकाल दिया। तभी वह नया राजा बोल उठा कि माता! मैं ही तुम्हारा लड़का हूँ। तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और मेरी करनी मेरे साथ। यह सुनकर उनकी माँ बोली कि एकबार अपने घर चलो। मैं आस माताका उजमन करूँगी। तब उन लोगोंने अपने घर जाकर आसमाता का उजमन किया और वह सुखसे राज्य करने लगा। हे आसमाता! जैसे तुमने आसलिया बासलिया को राजपाट दिया वैसे सबको देना। हमको भी देना।

१३८. होली का बड़कुल्ला (गूलरी आदि बनाना)

होली के १५ दिन पहले कोई शुभ दिन देखकर गायके गोबरके सात बड़कुल्ला (गूलरी) बनावे। इसके बाद अपनी जितनी इच्छा होवे उतने और बड़कुल्ला (गूलरी) तथा नारियल, पान, प्याबड़ी आदि सब तरह के खिलौना बना लेवे। फिर फाल्गुन सुदी एकादशी के दिन गोबर की ५ढाल,

१ तलवार, १ मन्द्रमा, १ सूरज, १ नारियल, १ आधी रोटी सावी रोटी, १ होलिका माता, एक होलिकी तथा एक पान बनावे। यदि आपके कोई बेटा हुए का अथवा बेटे के विवाह हुए का कोई उजमन होता हो तो १३ गोबरकी सुपाड़ी भी बना लेवे। ढाल, तलवार आदि बनाने के बाद बडकुल्ला (गूलरी) नहीं बनावे। यदि किसी के कोई रस्म होती हो तो वह ढाल तथा होलिका माई को रोली, मेंहदी, और आटे से सजा लेवे (चीते) तथा होलिका माता की आँख बनाने के लिए उसमें कौड़ी लगा देवें।

होलीके दिन जब भद्रा नहीं होवे तब नारियलकी रस्सी में एक सबसे बड़ी बड़कुल्ला (गूलरी) की माला पिरोवे। इस माला में सब तरह के खिलौने, होलिका माता, ढाल, तलवार आदि सब चीजें पिरो देवे। फिर उससे कुछ छोटी मालायें एक पीतर के, एक हनुमानजी के, एक घर के, एक शीतला माता के, और आपके घरमें जितने पुरुष एवं लड़के होवें उन सबके नामकी तथा अन्य देवताओं के नामकी एक एक मालायें बनावे। ये सब मालायें ८-८ बड़कुलला (गूलरी) १-१ पान, २-२ प्यावड़ी, १-१ नारियल की बनावे। यदि उजमनकी सुपाड़ी भी बनाई होवें तो उन तेरह सुपाड़ियोंकी भी एक माला बना लेवे, यदि मन होवे तो होलीके ५ दिन पहले से ही होलीके गीत गाना शुरू करदें। नहीं तो होली पूजन के समय गीत अवश्य गावें।

१३६. आनन्दा नवमी

यह नवमी फालगुनसुदी नवमीको आती है इसदिन आनन्द

कन्द भगवान की समस्त सामिग्रीसे पूजा की जाती है और उनके गुणों का गान किया जाता है। इसदिन कीर्तन करना चाहिये और भगवानका भोगभी लगाना चाहिए जो इसदिन भगवानका कीर्तन और पूजन करते हैं वे इसलोक और परलोकमें दोनों में आनन्द ही आनन्द प्राप्त करते हैं।

१४०. आमले की एकादशी व्रत

यह व्रत फाल्गुन-सुदी एकादशीको किया जाता है। इस दिन व्रत रखकर आँवले के वृक्ष की पूजा करनी चाहिए आँवले के वृक्ष में भगवान नारायण का निवास रहता है।

सबसे पहिले व्रत रखने वाले शुद्ध जल से स्नान करके आँवलेके वृक्षको स्नान करावें फिर आँवलेके वृक्षका धूप, दीप चंदन, रोली, चावल, पुष्प आदिसे पूजन करें तथा इस वृक्ष के नीचे ब्राह्मणोंको बैठाकर भोजन करायें। इसदिन आँवला खाना और आँवलेका दानदेना बहुत ही उत्तम बताया गयाहै।

जो इस प्रकार व्रत रखते हैं वे भगवान नारायण के परम भक्त होते हैं और भगवान नारायण उनकी समस्त संकटों से रक्षा स्वयं करते हैं।

आमल की एकादशी की कहानी

बहुत समय पहले की बात है कि भारतवर्ष में एक चित्रसेना नामके राजा राज्य करते थे। उनके राज्यमें एकादशी व्रतका बहुत प्रचार था। उनकी समस्त प्रजा एकादशी व्रत को किया करती थी। एक दिन वह राजा जंगल में शिकार खेलनेको गये। शिकार खेलते-खेलते वे बहुत दूर निकल गये जब वे जंगल में थे तब उन्हें कुछ जंगली लोगों [म्लेक्षों]

ने आकर घेर लिया और उनके ऊपर अपने शस्त्रोंसे प्रहार करने लगे परन्तु राजाको यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उनको कोई शस्त्र कष्ट नहीं पहुँचा रहे थे। जब म्लेक्ष अधिक आगये तो राजा उन्हें देखकर मूर्छित हो पृथ्वीपर गिरगये। उस समय उनके शरीर से एक शक्ति निकली और वह राक्षसों को मारकर अदृश्य हो गई। जब राजा की मूर्छा समाप्त हुई तो उसने देखाकि सब म्लेक्ष मरे पड़े हैं। म्लेक्षों को मरा हुआ देखकर राजा उनके बारे में सोचने लगा कि इनको किसने मारा है ? तभी आकाशवाणी हुई कि हे राजन् ! यह सब तुम्हारे आँवला एकादशी के प्रभावसे मर गये हैं। यह सुनकर राजा बहुत खुश हुआ और अपने देश में उसने आँवला की एकादशीके व्रत का महत्व सबको कह सुनाया। उसके राज्यसे म्लेक्षों का नाश होगया और सब प्रजा सुखसे रहने लगी। हे एकादशी माता ! जैसे तूने राजा का संकट दूर किया वैसे सबके संकट दूर करना।

१४१. श्यामजीकी जात

फाल्गुन सुदी द्वादशीको श्यामजी की जात लगाई जाती है। एक जगह थोडी सी मिट्टी बिछाकर उसके ऊपर एक घी का दीपक रख देवे। दीपक के नीचे थोड़े से चावल भी रखे। फिर दीपकके आगे अग्नि राख देवे। अग्नि में घी डालें। चूरमा, रोली, चावल,जल, फूल तथा नारियल आदि चढ़ाकर पूजा करे। फिर रोली का टीका काढ़कर, दोनो हाथ जोड़े और दण्डवत करे। इसदिन ब्राह्मणों को भोजन

करावे और स्वयं चूरमा का परशाद खावे। परशाद दूसरे दिन के लिये नहीं रखे। उसी दिन खा लेवे।

१४२. दूढ़ का नेग

यदि किसीके इसी वर्ष लड़का हुआ होवे तो फाल्गुन सुदी एकादशी के दिन उजमन करे। उजमन का सामान पीहर से मँगावे। आप ओढ़ना या चद्दर ओढ़ लेवे और चूड़ी पहिन लेवे। लड़के को सफेद कपड़े पहिनावे। फिर एक थाली में सवा किलो मिठाई और सवा किलो बतासे को तेरह जगह रखलेवे। फिर उसकी रोली चावल से पूजा कर जलके छींटे देवे और उस पर रुपये रखकर सासुजीको पायँ लगकर देदेवे।

१४३. होली पूजन

यह त्यौहा रफाल्गुनकी पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार है। इसदिन सभी स्त्री-पुरुष एवं बच्चे होली का पूजन करते हैं। पूजन करने के बाद होलिकाको जलाया जाता है। इसदिन व्रत भी करना चाहिये।

होलीके दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर पहले हनुमानजी, भैरोंजी आदि देवताओंकी पूजा करे। फिर उन पर जल, रोली, मोली, चावल, फूल, प्रसाद, गुलाल, चन्दन नारियल आदि चढ़ावें। दीपकसे आरती करके दण्डवत करे। फिर सबके रोलीसे तिलक लगादे और जिन देवताओंको आप मानते हों उनकी भी पूजा करे। फिर थोड़े से तेल को सब बच्चोंका हाथ लगाकर किसी चौराहे पर भैंरीजी के सामने एक ईंट पर चढ़ादेवे। यदि कोई लड़का हुए का या लड़के

के विवाह होने का उजमन कराना होवे तो वह होली के दिन उजमन करे। उजमन में एक थालीमें १३ जगह ४-४ पूरी और सीरा रखे उन पर अपनी श्रद्धानुसार रुपये और कपड़े [साड़ी आदि] तथा १३ गोबर की सुपाड़ी की माला रखें। फिर उन पर हाथ फेरकर अपनी सासुजी को पायँ लग कर दे देवें। सुपाड़ी की माला अपने घर में ही टाँग देवे।

इस दिन अच्छे २ भोजन मिठाई नमकीन आदि पकवान बनावे। फिर थोड़ा २ सभी सामान एक थाली में देवताओं के नाम का निकालकर ब्राह्मणी को देदेवे। भगवान का भोग लगाकर स्वयं भोजन कर लेवे।

होली की पूजा-विधि एवं सामग्री

पहले जमीन पर थोड़े गोबर और जल से चौका लगा लेवे। चौका लगाने के बाद एक सोधी लकडी [डंडा] के चारों तरफ गूलरी [बडकुल्ला] की माला लगा देवे। उन मालाओं के आस-पास गोबरकी की ढाल, तलवार, खिलौना आदि रख देवे। जो पूजन का समय नियत को उस समय जल, मोली रोली, चावल, फूल, गुलाल, गुड़, आदिसे पूजन करने के बाद ढाल, तलवार अपने घर में रख लेवे। चार जेल माला [गूलरी की माला] अपने घर में तीतरजी, हनुमानजी, शीतलामाता तथा घर के नामको उठाकर अलग रखदेवे। यदि आपके यहाँ घरमें होली न जलती हो तो सब और यदि होली घर में ही जलाते हों तो एक माला, ऊख, पूजा की समस्त सामग्री, कच्चे सूत की कुकड़ी, जल का लोटा, नारि-

यल, बूँट, [कच्चे चनाकी डाली] पापड़ आदि सब सामान गाँव या शहर की होली जिस स्थान पर जलती हो वहाँ ले जावें। वहाँ जाकर ठंडी होली का पूजन करे। जेल, माला

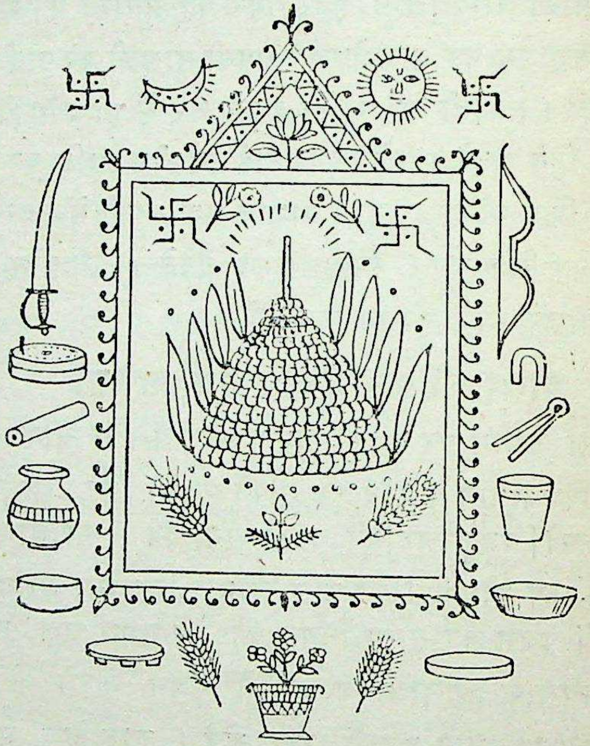

होली इस प्रकार बनावें

नारियल आदि चढ़ा देवें। परिक्रमा देवें। पापड़ बूँट आदि होली जलने पर भून लेवे और सबों में बाँटकर खालेवे। ऊख घर वापिस लेआवे यदि घरपर होली जलाते हों तो गांव या शहर वाली होलीमेंसे ही अग्नि लाकर घरकी होली जलावें।

फिर घर आकर पुरुष अपने घरकी होली पूजन करनेके बाद जलावें। घरकी होलीमें अग्नि लगाते ही उस डंडा या लकड़ी को बाहर निकाल लेवें। इस डंडे को भक्त प्रहलाद मानते हैं। स्त्रियां होली जलते ही एक लोटे से सात बार जल का अर्घ्य लेकर रोली चाबल चढ़ावें। फिर होली के गीत तथा बधाये गावें। पुरुष घरकी होली में बूंट और जौ की वाल पापड़ आदि भूनकर तथा उन्हें बांटकर खालेवें। होली पूजन के बाद बच्चे तथा पुरुष रोली से तिलक [टीका] लगावे। छोटे अपने सभी बड़ों के पायँ छूकर आशीर्वाद लेवें।

यह ध्यान रहे कि जिस लड़का का विबाह जिस साल हुआ हो वह उससाल अपनी श्वसुराल की जलती हुई होली को न देखे। यदि हो सके तो अपनी माय के चली जावे।

होली के गीत

मेरो बारौ सौ कन्हैया नादान, ब्रज में धरेरि मुकट खेले होरी,
लाला कै मन केसर घोरी है, और कै मन उड़त गुलाल, । ब्रज में० ।
लाला नौ मन केसर घोरी है, और दस मन उड़त गुलाल, । ब्रज० ।
लाला काहे की तेरी वाँसुरी, और काहे को मुरचंग, । ब्रज० ।
लाला हरे बांस की बाँसुरी, और रुपे का मुरचंग । ब्रज० ।
लाला कौन की भीजै चुंदरी, और कौन कौ भीजै सुओ पेच, । ब्रज० ।
लाला राधिका की भीजै चूँदरी, और कृष्णकौ भीजै सुओ पेच, ब्रज० ।
लाला काहेर सूखै चुंदरी, और काहेर सूखै सूओ पेच । ब्रज० ।
लाला बरसाने सूखैं चूँदरी, और नन्दगाँव सूखे सूओ पेच. । ब्रज० ।

:: २ ::

जा साँवरिया के संग, रङ्गमैं कैसे होली खेलूँ री।
कोरे कोरे कलश भराये, जामें घोरौ है ये रङ्ग ॥

भर पिचकारी सन्मुख मारी, चोली हैं गई तंग। रंग०।
ढोलक बजै मजीरा बाजे और बजैं मृदंग,
कान्हाजी की बंशी बाजे, राधाजी के संग। रंग०।
लहँगा त्यारो, घूम घुमारो, चोली है पचरंग,
खसम तुम्हारे बड़े निखट्टू, चलौ हमारे संग। रंग०।।
सालऊ भीजै, दुसालऊ भीजै और भीजै पचरंग,
साँवरिया कौ का बिगड़ैगौ कारी कामर संग,
रंग में कैसे होली खेलूँरी, जा साँवरिया के संग।

होलिका पर्व की कहानी

एक समय की बात है कि भारतवर्ष में एक हिरण्यकशिपु नामका राक्षस राज्य करता था। उसके एक पुत्र था जिसका नाम प्रहलाद था। प्रहलाद भगवान का परम भक्त था। परन्तु उसका पिता भगवान को अपना शत्रु मानता था। वह अपने राज्यमें ईश्वरका नाम लेने तक को मना करता था परन्तु वह अपने पुत्र प्रहलाद को ईश्वर भजन से न रोक सका। इसपर हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को पहाड़ से भी गिराया, सर्पों की कोठरी में बन्द कराया। हाथी के सामने डलवाया परन्तु उस भक्त का कुछ भी न हुआ। अन्त में हिरण्यकशिपु बोला कि मेरी बहिन होलिका को बुलाओ और उससे कहो कि प्रहलाद को अग्नि में लेकर बैठ जाय जिससे प्रहलाद तो जलकर मर जायगा और होलिका का अग्नि कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि होलिका को यह वरदान था कि उसे अग्नि नहीं जला सकती। अतः होलिका को बुलाया गया। उसने अपने भाईकी बात मानी और अग्नि के बीच होलिका प्रहलाद को लेकर

बैठगई प्रहलाद भगवान को याद करता रहा। भगवान की कृपासे अग्नि प्रहलाद के लिये बर्फ के समान शीतल होगई और उस अग्निने होलिकाको भस्म कर दिया। उसीदिन से यह होलिका जलाई जाती है। हे! भगवान! जैसे तुमने भक्त प्रहलादकी रक्षाकी वैसी सबकी करना हमारी भी करना।

०—०

चैत्र मास (कृष्ण पक्ष) के व्रत और त्यौहार

११४. धूलैंड़ी या छारेणी (धूलिका पर्व)

यह त्यौहार होली के तुरन्त बाद चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (पड़िवा) को मनाया जाता है। इसदिन जौ के भुने हुए दाने देनेके बाद ही होली की राखका पूजन किया जाता है। यह दिन, बहुत ही मस्ती एवं हर्षोल्लासके साथ मनाया जाता है। रसिया, गाने, मूर्ख सम्मेलन आदि के बहुत ही आकर्षक प्रोग्राम किये जाते हैं। सुबह से हीं रंग गुलाल, चंदन, पानी आदि की बौछारें प्रारम्भ हो जाती हैं। टोलियाँ की टोलियाँ अपने रिस्तेदारों, मित्रों आदि से मिलती फिरती हैं। गुलाल और रंग लगे चेहरे पहिचानने में नहीं आते। चारों तरफ जिसे देखो वही मस्ती में झूमता हुआ नजर पड़ता है। भंग, ठंडाई आदि घर-घर घोटी जाती हैं और अपने इष्ट मित्रों को बुला बुलाकर पिलाते हैं। इसदिन सभी बैरभाव को छोड़कर मित्र बन जाते हैं। ब्रज में होली के दृश्य अत्यन्त ही शोभनीय होते हैं।

मथुरा, वृन्दावन, बरसाना, गोकुल आदि की होली देखने

योग्य है । दोपहर बाद सभी स्नानादि से निवृत्त होकर किसी सार्वजनिक स्थानपर एकत्रहोकर एक दूसरे से गले मिलते हैं ।

१४५. साँपदा (दसिया) का डोरा

साँपदा का डोरा होली के दूसरे दिन अर्थात् चैत्रके कृष्ण पक्षकी प्रतिपदा के दिन ही लिया जाता है तथा यह वैशाख वदी में किसी भी अच्छे दिन खोल दिया जाता है । कच्चे सूत का सोलह तार का डोरा जिसे होली को दिखाकर रख लेते हैं उसमें सोलह गाँठ लगा लेवे । फिर उसे हल्दी की गाँठ में रँग लेवें । एक पट्टे पर जलका लोटा रखकर उस पर रोलीसे सतिया बनावे और चावल चढ़ावे। फिर सोलह दाने जौ के हाथ में लेकर साँपदा माता की कहानी सुने । कहानी सुनने के बाद उस डोरेको गलेमें पहिन लेवे । फिर वैशाख के महीने में उस डोरे को खोले । डोरा खोलने के दिन साँपदा माता का व्रत करे, कहानी सुने फिर डोरा खोले । डोरा लेने के दिन जो दाने हाथ में लेकर कहानी सुनी थी उन दोनोंको और डोरे को हाथ में लेकर सूर्य भगवान को अर्घ्य देवे ।। फिर स्वयं भोजन कर लेवे ।

सांपदा का उजमन

यदि किसींके लड़का हुआ होवे या लड़केका विवाह हुआ हो तो साँपदा माता का उजमन करे । सोलह जगह ४-४ पूरी, सीरा, एक तीयल [साडी आदि] और रुपये रखे । उन सबपरहाथ फेरकर अपनी सासुजीको पायँलगकर देदेवे। १६ ब्राह्मणियों को भोजन करावे एवं दक्षिणा देकर विदा करे ।

साँपदा (दसिया) की कहानी

एक नल राजा था। उसके दमयन्ती नामकी रानी थी। नल के राज्य में अनेकों गाँव और शहर लगे हुए थे। एक दिन एक बुढ़िया राजा के महल के नीचे साँपदा माता का डोरा बाँट रही थी जिसे लेने के लिये बहुत भीड़ लगी हुई थी रानीने भीड़ देखकर दासीसे कहा कि यह किस बात की इतनी भीड़ हो रही है। दासी ने पता लगाकर रानी को बताया कि एक बुढ़िया कच्चे सोलह सूत का, सोलह गाँठ का, हल्दी से रंगा हुआ साँपदा माता का डोरा बाँट रहीहै। इसकी जो पूजा करके १६ जौ के दाने हाथ में लेकर तथा साँपदा माता की कहानी सुनकर अपने गलेमें पहिनता है उसके खूब धन-दौलत बढ़ती है। यह सुनकर रानी ने भी उस बुढ़िया से साँपदा माताका डोरा मँगा लिया और पूजा करके तथा कहानी सुनकर अपने गले में पहिन लिया। राजा ने जब रानी के गले में हीरा जवाहिरातों के हार के साथ उस डोरे को बँधा हुआ देखा तो उसने रानी से पूछा कि यह किस बात का डोरा तुमने पहिना है।

रानीने यह कहा यह साँपदा माताका डोरा है। इससे धन लक्ष्मी बढ़ते हैं। यह सुनकर राजा ने कहा हमारे यहाँ किस बात की कमी है। खजाने हीरे मोतियों से भरे पड़े हैं। यह कहकर राजा ने रानी के गले से उस डोरे को उतार कर फेंक दिया। उसी दिन सांपदा माता ने स्वप्न में राजा से कहा-हे राजन्! यह डोरा फेंककर तूने अच्छा नहीं किया।

अब तेरा धन मिट्टी कोयला होजायगा। दूसरे दिन राजा ने जब देखा तो उसका सब धन राख होगया। यह देखकर राजा-रानी बहुत दुःखी हुए। यहाँ तक उनको खाने तक को न रहा। तब राजा को आज्ञानुसार रानी अपनी सहेलियों से मिलने गई, सहेलियोंने रानी से बातें तो कीं परन्तु खाने की किसी ने न पूँछी। यह बात रानी ने महल में आकर राजा से कही। तब राजा ने रानी से कहा कि कहीं अन्य शहर में चला जाय और यहाँ की देखभाल के लिए एक ब्राह्मण की लड़की को छोड़ दें। यह विचार कर वे महलों में ब्राह्मण की लड़की को छोड़कर दूसरे शहर के लिये चल दिये। रास्ते में राजा-रानी एक तालाब के पास रुके। तब राजा ने रानी को एक तीतर लाकर दिया और कहा-इसे पकालो मैं अभी आता हूँ। रानी ने तीतर पकाया जब वे उसे खाने को तैयार हुए तो पका हुआ तीतर उड़ गया तब वे दोनों और आगे बढ़े और अपनी बहिन के यहाँ पहुँचे। बहिन ने उनको पुराने घर में ठहरवा दिया और हीरा जवाहिरातों से एक घड़ा भरकर उनका सत्कार करने के लिये पहुँची। उसने राजा रानी के सामने जैसे ही घड़ा खोला कि उसमें रखे सभी हीरा जवाहिरात राख होगये। यह देखकर राजा ने बहिन से कहा कि इस घड़े को तू यहीं पर जमीन में गाढ़ दे। फिर वे अपने साथी बादशाहके यहां पहुँचे। बादशाहने उनको अपने पुराने महल में ठहरा दिया। उस महलमें एक नौलखाहार खूंटी पर टँगा हुआ था जैसे

ही राजा-रानी उस महलमें पहुँचे कि दीवाल पर एक मोर बना हुआ है वह मोर उस हार को निगल गया। यह देख कर राजा रानी ने सोचा कि यहाँ से भी चलना चाहिए। नहीं तो चोरी का इल्जाम लग जावेगा। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई तो उसने कहा-राजा चोर तो नहीं है लेकिन गरीब अवश्य है। शायद लेगया होगा। फिर राजा-रानी एक माली के यहाँ नौकरी करने के लिए पहुँचे। माली के यहाँ वे जैसे ही पहुँचे कि उनका १२ साल से उजड़ा हुआ बाग फिरसे हरा भरा होगया। यह देखकर माली ने उनसे कहा कि तुम दोनों मेरे यहाँ काम करो। उस पर रानी ने कहा मैं चार काम नहीं करूँगी (१) दीपक नहीं जलाऊँगी। (२) चारपाई नहीं बिछाऊँगी। (३) झाड़ू नहीं दूँगी। (४) बर्तन साफ नहीं करूँगी। इस पर माली ने कहा-अच्छा तुम यह काम मत करना। तुम तो केवल फूलों की माला बनाना और सब्जी बाजार में बेच आना। राजा बाग की रखवाली करता रहेगा। एक दिन रानी माली की सब्जी बाजार में बेचने को गई और अन्य स्त्रियों से बोली कि सब्जी लेलो तब स्त्रियाँ बोलीं कि तू अभी रुक जा पहले साँपदा माता की कहानी सुनलें। तब वह रानी बोली कि पहले मैं भी साँपदा माता की कहानी सुनती थी। एकदिन राजाने साँपदा को डोरा फेंक दिया तभी से साँपदा माता हमसे नाराज है। नाराज हुए बारह बर्ष हो गये। अगर साँपदा हमारे भी आवे तो मैं आपकी साँपदाका

डोरा लेलूँगीं। तब साँपदा ने राजाको स्वप्न दिया कि रानी कल मेरा डोरा लेलेवे। फिर मैं तेरे यहाँ आऊँगी और तू पुनः धनवान होजायगा। दूसरेदिन रानीने साँपदा माताका डोरा लेलिया और अपने शहरकी ओर चलदिया। साँपदा माताने राजाको और मालीको खूब धन दिया। फिर राजा बादशाह के पुराने महल में पहुँचा और वहाँ जाकर देखाकि हार उसी खूँटी पर टँगा हुआ है। तब वह बादशाह से बोला कि यह लो अपना हार। जिससे मेरे सिरसे कलंक छूटे।

इसकेबाद फिर वे राजा-रानी अपनी बहिनके घर पहुँचे और उस गढ़े हुएघड़े को जमीनसे निकाला तो देखा कि उसमें हीरे जवाहिरात भरेहुए हैं। उस घड़ेको अपनी बहिनको देकर बोलेकि अब फिर हमारे दिन अच्छे आगये हैं। इसके बाद वे तालाब के पास पहुँचे तो जो पका हुआ तीतर पहले उड़ गया वह वहीं पड़ा हुआ था। इसके बाद वे अपने महलपहुँचे तो देखाकि जो धन राख हो गया था वह फिरसे पहले जैसा होगया। ब्राह्मण की लड़की भी वही थी। यह देखकर राजा रानी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उस ब्राह्मण की लड़की को अपनी लड़की मान बड़ी धूम-धाम के साथ उसका विवाह किया। उसे खूब दान-दहेज देकर विदा किया फिर रानी ने सांपदा माता का उजमन किया। हे सांपदा माता! जैसे तूने राजाको धन दिया वैसे सबको धन दौलत देना।

१४६. गणगौर पूजन

होली पूजन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियाँ

८ पिंडियाँ होलीकी राखकी और ८ पिंडियाँ गोबरकी बनावें। फिर एक डलिया में थोड़ी सी दूब (घास) रखकर उसके ऊपर सोलहों पिंडियाँ रख लेवे और दिन में नित्य प्रति गणगौर के गीत गाकर उन पिंडियों की पूजा करें। जितने दिन गणगौर पूजें उतने दिन रोजाना एक काजल की और एक रोलीकी बिन्दी दीवाल पर रखें। पिंडियों को गणगौर को जल, रोली, चावल, फूल और दूब से पूजें। रोजाना गीत गावें। जब तक वासेड़ा नहीं होवे। तब तक तो केवल पिंडियो की ही पूजा करे। बासेड़े के दिन गणगौर बनावे और उस दिन से रोजाना गणगौर का भोग लगावे, जल, पिलावे, रात्रि को आरती करे फिर गीत गावे। गणगौर आने तक पिंडियों की भी पूजा करे।

गणगौर की कहानी

एक राजा था और एक मालो था। राजाका चनाका खेत था और माली का दूब (घास) का खेत था। एकदिन माली ने देखा कि राजा के खेतका चना तो बढ़ता जा रहा है और उसके खेतकी दूब घटती जा रही है। अतः इसका कारण जानने के लिये वह माली अपने खेत में बैठ गया। थोड़ी देर बाद देखा कि कुछ लड़कियां उसके खेत में दूब काटकर ले जा रही हैं तो माली ने उन लड़कियों को पकड़ लिया और उन्हें फटकारने लगा। तब वे लड़कियां माली से बोली कि हम गणगौर पूजने के लिये यह दूब ले जाती हैं सोलह दिन बाद हम तुम्हें सीरे लपसी से भर२ कर कुण्डारा

लाकर देवेंगी । तब माली ने उसको छोड़ दिया । सोलहदिन जब पूरे हो गये तब वे लड़कियाँ सीरा लपसी से कुण्डारे भरकर मालीको दे आई । उसी दिन कहीं बाहर से माली का लड़का आया और मालिन से बोलाकि-मां ! मुझे भूखलगी है । इस पर मालिन बोली बेटा ! आज हमारे घर लड़कियाँ आई । वे सीरे लपसी से भरे कुण्हारे देगई हैं । वे आलमारी में रखे हैं। तू उन्हें खाले। बेटा आलमारी खोलने लगा लेकिन आलमारी नहीं खुली । तब माँ ने जैसे ही उस पर रोली वगैरह के छींटे दिये कि वह अलमारी खुलगई । देखे तो सब चीजों का भंडारा भरा पड़ा है । धन दौलत अनगिनती भरी पड़ी है ! हे भगवन ! जैसे तुमने उस मालीको सब कुछ दिया वैसे सबको देना । हमको भी देना ।

१४७. सूरज रोट का व्रत

गणगौर पूजने वाली लड़कियाँ सूरज रोठका व्रत करें । गेहूँ के आटे की दो रोटियाँ बनावें । एक रोटी अपने खाने को और दूसरी रोटीके बीचमें एकछेद(छिद्र)कर लेवें । उस छेदमें से देखकर सूर्य भगवान को अर्घ्य देवें । कहानी सुनने के समय अपने पास १ जल का कलश, एक जल का लोटा, रोली व चावल रख लेवें । लोटे पर रोली से सतियाँ काढ़ देवे फिर ८ दाने गेहूँ के हाथ में लेकर कहानी सुने । कच्चे आठ सूत के डोरा में आठ गाँठ लगाकर कहानी सुननेके पश्चात् उसे हाथमें लेकर तथा रोटी के छिद्र में से सूर्य भगवान को देखकर, उस लोटे से अर्घ्य देवे । इसके बाद

उस रोटी को गाय को खिला देवे। जो जल कलश में भर कर रखा था उसी जलसे बिना नमककी रसोई बनावे और उसी जलको पीवे। सूर्य छिपने से पहले ही भोजन कर लेवे। सूर्य छिपनेके बाद पानीभी नहीं पीवे। एक समय ही भोजन करे। यदि लड़की का इसी साल विवाह हुआ होवे तो वह सूरज का उजमन करे। ८ जगह ४-४ पूरी सीरा सूपमें और उस पर साड़ी रखकर अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे। आठ लड़कियों को जिन्होंने व्रत किया हो उन्हें भी भोजन करावे। यदि ब्राह्मण की लड़की होवे तो उन्हें दक्षिणा भी दे देवे। इस व्रतके करनेसे कुटुम्ब और धनकी प्राप्ती होतीहै।

सूरज रोट की कहानी

एक माँ थी और उसके एक बेटी थी। माँ बेटी दोनों सूरज भगवान का व्रत किया करती थीं। एक दिन माँ अपनी बेटीसे बोली मैं बाहर जा रही हूँ तू मेरी भी दो रोटी बना लेना। यह कहकर वह तो चली गई। बेटी ने अपनी माँ के व्रत के लिये दो रोटियाँ बना लीं। तभी एक भिखारी भिक्षा माँगने के लिये आया तो बेटी ने माँ की रोटियों में से उस भिखारी को थोड़ी सी रोटी दे दी। माँ जब बाहर से लौटकर घर वापिस आई तो उसने अपनी बेटी से रोटियाँ माँगी। बेटी ने जैसे ही यह शब्द कहे कि 'एक भिखारी भिक्षा माँगने आया था' यह सुनते ही उसकी माँ बकने लगी और पागल हो गई। तब अन्य लोगों ने उस पागल माँ को एक अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया। उस बेटी के पीहर

में और कोई प्राणी नहीं था। तब उसने सूरज भगवान से कहा कि मेरा पीहर बसा दो। मेरे पीहर(माँय के)कोई भी प्राणी नहीं है। इस पर सूरज भगवान ने कहा कि १। पहर में तेरा पीहर बस जावेगा और तुझे माँ, बाप, भाई,भतीजे, धन-दौलत सब कुछ मिल जावेगा। सवापहर बीतते ही बेटी को सब कुछ मिल गया। जंगल में शहर बस गया। तब बेटी ने सूरज भगवान से कहा कि मेरी बूढ़ी माँ पागल हो गई है उसे ठीक कर दो। भगवान ने उसे भी ठीक कर दिया और उसे बहुत धन दौलत तथा भाई भतीजे दिये। हे सूरज भगवान! जैसे तुमने उस बुढ़िया की बेटी को सब कुछ दिया वैसे सबको देना। यह कहकर सब लोग दंडवत करलें।

१४८. बासोड़ा (बासेड़ा)

यह त्यौहार होली के ७-८ दिन बाद अर्थात् चैत्र के कृष्ण पक्ष में जो पहला सोमबार या वृहस्पतिवार आवे उस दिन मनावे। इसदिन शीतला माताकी पूजा की जाती है। बासेड़ा के एकदिन पहले गुड़, चीनीका मीठा भात, रोटी-पूरी, सब्जी लपसी आदि बना लेवे, मोंठ बाजरा भिगो देवे तथा रसोई की दीवाल धोकर हाथ सहित पाँचों उँगली घी में डुबोकर एक छापा लगादेवे। रोली, चावल चढ़ावे और शीतलामाता के गीत गावे। बासेड़ा के दिनभी पूजा करनेके बाद गीत गावे।

बासोड़े के दिन सुबह एक थाली में, भात, रोटी-पूरी, दही, चीनी, जल का गिलास, रोली, चावल, मोली, मूँग की दाल छिलका वाली हल्दी, धूप बत्ती, एक गूलरी (बड़-

कुल्ला) की एक माला जो होलीके दिनमालायें बचाई थीं उनमें से, मोंठ, बाजरा,आदि जो सामान रख लेवे । इस सामान पर घर के सब प्राणी हाथ लगाकर किसी घरके व्यक्ति के द्वारा शीतला माता पर भेज देवे। वह व्यक्ति इस सब सामान को शीतला माता की पूजा करके चढ़ा देवे । एक कलश पानी शीतला माता पर और एक कलश पानी चौराहे पर चढ़ा देवे । फिर मोंठ बाजरा का वायना निकाल कर और उस पर रुपये रखकर अपनी सासुजी को पायँ लगकर दे देवे। यदि किसी घर के सब व्यक्ति शीतला माता की पूजा करने जाते हों तो स्त्रियाँ शीतला माता के गीत गाती जावें।

कुण्डारा भरें

यदि किसी के यहाँ कुण्डारा भरता हो तो वे एक बड़ा कुँडारा और १० छोटे कुँडारे मँगा लेवे। एक कुँडारामें रबड़ी एक में भात, एक में रसगुल्ला, एक में बाजरा, एक में हल्दी पीसकर रख देवे और एक में इच्छानुसार पैसे रख लेवे फिर सब कुण्डारे बड़े कुण्डारे में रख लेवे उनकी हल्दी से पूजा कर लेवे । फिर सबके हल्दी से टीका काढ़ लेवे । इसके बाद एक जेल माला(गूलरीकी माला) सब कुँडारे और समस्त पूजा सामिग्री आदि शीतला माता पर लेजाकर चढा देवे । कुँडारा पूजन करने के बाद कहानी सुन लेवे । शीतला माता पर गीत गाती जावें और गीत गाती ही वापिस आवें। यदि किसी के लड़का हुआ होवे या लड़के का विवाह हुआ होवे तो वह उजमन करे। उजमन में जितने कुँडारे हमेशा पूजे

उतने ही और कुंडारे पूज लेवे । शीतला माता के गीतों में जहाँ भगवानका नाम हो वहाँ घरके व्यक्तियों के नाम लेलेवे ।

बासेड़ा की कहानी

एक गांव में एक बुढ़िया रहती थी । वह बासेड़ेके दिन शीतला माता की पूजा करती और ठंडी रोटी खाती थी । उसके गांवमें और कोईभी शीतला माताको नहीं पूजता था । एकदिन उस गाँव में आग लग गई जिसमें केवल बुढ़िया की झोंपड़ी को छोड़कर सबकी झोंपड़ियाँ जल गई। इससे और सब लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ । तब वह उस बुढ़ियाके पास आये और इसका कारण पूछने लगे। तब बुढ़िया बोली कि मैं तो बासेड़े के दिन ठंडी रोटी खाती थी और शीतला माताकी पूजा करती थी । तुम लोग यह काम नहीं करते थे। इससे तुम्हारी झोंपड़ियाँ तो जल गईं और मेरी झोंपड़ी बच गई। तभी से पूरे गाँव में बासेड़े के दिन शीतलामाताकी पूजा होने लगीं और सब ठंडी रोटी खाने लगे। हे शीतला माता ! जैसे तूने उस बुढ़ियाकी परीक्षा की वैसे सबकी रक्षा करना ।

बासोड़े के गीत

मेरी माता को चिनिये चौबारौ,
दूध पूत देनी को चिनिये चौबारौ, कौन ने मैया ईटें थपाई ।
और कौन ने घोरौ है गारौ, श्रीकृष्ण ने मैया ईटें थपाई ।
दाऊजीने घोरौ है गारौ, मेरी माता कौ चिनिये चौबारौ ।

:: २ ::

कोरी कोरी कुलिया मसानी दरबार,
पूजन री श्री कृष्ण की माँ ।

(गीत गाते समय यहां अपने घर के आदमियों के नाम लें)
कोरी कोरी कुलिया मसानी दरबार ।।

१४६. पाप मोचनी एकादशी

चैत्र मास के बदी पक्ष में एकादशी के दिन मनाई जाती है। इसदिन व्रत रखकर भगवान गोविन्द की प्रतिमाको शुद्ध एवं ऊँचे आसन पर बिठाकर श्रद्धा के साथ पूजे, अर्घ्य देवे, आचमन करावें दही और मिष्ठान का भोग लगावें, दुबारा से आचमन करानेके बाद शुद्ध जल से स्नान कराकर उनको वस्त्राभूषणों से सजावें, सुगन्धित धूप, दीप,चन्दन, आदि से आरती उतार लेवे। फिरब्राह्मणों को भोजन करावें और उन्हें दक्षिणा देकर विदा करें। उसके बाद भाई बाँधुओं के साथ वैठकर स्वयं फलाहार करलें।

इसदिन जूआ खेलना, दिनमें सोना, पान खाना, दाँतुन करना, दूसरे की बुराई करना, चुगली करना, चोरी करना जीवोंको सताना, झूँठ बोलना आदि कर्म करना निषेध है। इस व्रत के करने से समस्त पातक दूर हो जाते हैं।

पाप मोचनी एकादशी की कहानी

प्राचीन कालमें एक बहुत ही रमणीक चैत्ररथ नामका बन था। उस वन में गन्धर्व कन्यायें तथा देवताओं सहित इन्द्र क्रीड़ा किया करते थे। उसी वन में एक परम तपस्वी मेधावी नामक ऋषि ईश्वराधना में लीन रहते थे। एकबार मंजुघोषा नाम की अप्सरा ऋषि को तपस्या से विचलित करने के लिए मधुर स्वर से गाना गाने लगी। कामदेव

ऋषि की तपस्या को नष्ट करने के लिए हर प्रकार के उपाय करने लगा। ऋषि भी उस समय बहुत सुन्दर हृष्ट-पुष्ट एवं युवा थे। वह मंजुघोषा के गायन पर मुग्ध होगये। मंजुघोषा ने जब ऋषि को जो कामदेवके समान थे, कामातुर देखा तो वह उनसे आलिंगन करने लगी। आलिंगन करते २ जब काफी समय होगया तो मंजुघोषा ने ऋषि से जाने की अनुमति माँगी। इसपर ऋषिने कहा-हे प्रिये! अभी तो कुछभी समय नहीं हुआ है, अभी कुछ और रुको। तब वह अप्सरा वहीं रुक गई। इसप्रकार वर्षों बीत गये। एकदिन फिर मंजुघोषा ने वहाँ से जाने के लिए आग्रह किया। तब ऋषिने बिचारा कि वह किस चक्कर में फँस गये। वर्षों की तपस्या नष्ट हो गई। यह देखकर वह ऋषि उस मंजुघोषा पर बहुत क्रोधित हुए और उसे श्राप दिया कि तू पिशाचिनी हो जा। श्रापको सुनकर मंजुघोषा बहुत घबराई और उनसे मुक्ति का उपाय पूँछनेलगी। तब ऋषि बोले-देख, तू चैत्र मास के वदी पक्षमें आनेवाली एकादशीको विधि-विधानसे व्रत रखना इससे तेरी मुक्ति हो जायगी। यह कहकर वह मेधावीऋषि अपने पिता च्यवन ऋषि के पास गये। च्यवन ऋषि ने जब यह सुना तो वह बहुत दुखी हुए और अपने पुत्र मेधावी से कहा यह तूने अच्छा नहीं किया। अब तू चैत्र मास की पाप-मोचनी एकादशी को व्रती रहना। इससे तेरा पाप दूर हो जायगा। इस प्रकार इस व्रत के प्रभाव से मंजुघोषा ने अपनी पिशाचिनी की देही त्याग दी और मेधावी ऋषि

अपने किये हाप से मुक्त होगये। हे एकादशी माता ! जैसे तूने इनको पापों से छुटकारा दिया वैसे सबको देना।

१५०. नया संवत

यह हमेशा चैत्र सुदी प्रतिपदा (परिवा) को आता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार इस दिन नया साल प्रारम्भ होता है। इस दिन नये साल की खुशी में अपने २ घरोंमें अच्छे २ पकवान बनावे, ब्राह्मणों को भोजन करावे, अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों के यहाँ बधाई सन्देश भेजे।

१५१. गणगौर (गण-गौरी)

चैत्र मास के सुदी पक्ष की तीज को गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। कहीं२ यह त्यौहार कई दिन तक मनाते हैं।

गणगौर पूजन

घर की सब स्त्रियाँ गणगौर पूजें। यदि अपने घर की लड़कियाँ गणगौर पूजती हों तो उन्हीं को पूज लेवें नहीं तो किसी अन्यकी गणगौर मँगाकर सब लड़कियाँ तथा स्त्रियाँ उन्हें पूजलेवें। गणगौर को जमीन पर बैठाने के लिये पहले गोबर तथा पानीसे जमीन पर चौका लगा लेवे। फिर उस जगह थोड़ी सी दूब (घास) बिछाकर गणगौर बैठा देवें। इसके बाद उनपर जल के छींटें देवे, १६-१६ दूब चढ़ा देवे, रोलीसे उनके टीका लगा देवे। हाथों में मेंहदी तथा आँखों में काजल लगा देवे। फूल माला और दक्षिणा चढ़ावे। सीरे से भोजन करावे। गेहूँकी उनके आगे एक ढेरी (कुड़ी) लगा देवे। धूप तथा दीपक जला देवें। इसके अलावा गण-

गौर पूजने वाली सभी स्त्रियाँ दीवाल पर १६-१६ बिन्दी रोली, मेंहदी तथा काजलकी अलग २ लगा देवें। फिर एक कटोरी में सीरे और रुपये का वायना निकाल कर अपनी

गणगौर इस प्रकार बनावें

सासुजी को पायँ लगकर दे देवे। यदि आपकी कोई लड़की होवे तो उसे भी वायना निकालनेके लिये सीरा तथा रुपया भेज देवे। दूब से गणगौर के १६-१६ छींटे देवे गीत गावे तथा कहानी सुने। फिर अपने २ टीका लगा लेवे।

गणगौर का सिन्धारा

अपनी जितनी भी बहिन तथा लड़कियाँ होवें उन सब का सिधारा करे। उनके हाथो में मेंहदी रचाकर भोजन करावे। सबको रुपये तथा कपड़े श्रद्धानुसार देवे। यदि लड़की कहीं बाहर रहती हो तो उसको रुपये, कपड़े, मेंहदी तथा चूड़ी (चूड़ा) आदि सामान वहीं भेज देवे।

लड़की के विवाह को साल का उजमन

यदि किसी लड़की की यह साल विवाहकी हो तो पीहर वाले उससे गणगौरका उजमन करावें। पूजन तो ऊपरलिखी विधि के अनुसार सबकी तरह ही करा लेवे। उजमन में १६ जगह १६-१६ मीठे तथा फीके गुना (माठी) लेकर उन पर एक तीयल (साड़ी, ब्लाउज) और रुपये रख लेवे। फिर उन पर हाथ फेरकर अपनी सासुजी के लिए भेज देवे। इसके अलावा १६ गुना (माठी) अपने दामादके लिये बिना हाथफेरे किसी अलग वर्तनमें रखकर लड़कीके सासरे भेज देवे। १६ गुना गणगौरन पर चढ़ा देवे। १६ छोटे२ गुना अपनी लड़की को खानेके वास्ते बनावे जिन्हें वह लड़की खा लेवे। १६ गुना लड़की के भाई के खाने के लिये बनावे जिसमें से थोड़े गुना (माठी) तो भाई खा लेवे शेष गुना घर के अन्य व्यक्ति खा लेवें। फिर ६ क्वारी लड़कियों के साथ १६ दिन तक रोजाना गणगौर का पूजन करे।

गणगौर का उजमन

यह उजमन सभी स्त्रियाँ कर सकती हैं। पहले तो बताई

हुई विधि के अनुसार गणगौर की पूजा कर लेवे। फिर १६ जगह ४-४ पूरी और सीरा रखकर उनपर हाथ फेरकर अपनी सासुजीको पाँय लगकर दे देवे, इसके अलावा एक जगह १-१ चीज और अधिक मँगा लेवे और उन्हें एक पिटारी में रख लेवे। पिटारी में एक तीयल(साड़ी,ब्लाउज) रुपये और एक नथ भी रखलेवे और फिर सासुजी को पांय लगकर देदेवे। १६ सुहागिन ब्राह्मणियों को भोजन करावे, पहले उन ब्राह्मणियों को एक-एक जगह की सीरा-पूरी देवे और बाकी के भोजन रसोई में से करा देवे। फिर १६ जगह सुहाग की निम्न चीजें रखकर तथा उन पर हाथ फेरकर उन ब्राह्मणियों को भोजन करने के बाद दे देवे।

१६ डिब्बी मेंहदी, १६ दर्पण [शीशा], १६ नथ, १६ डिब्बी रोली, १६ कघा [कंघी], १६ साड़ी, १६ डिब्बी काजल, १६ चूड़ी [चूड़ा], १६ डिब्बी मैंड़ की, १६ नकद रुपये, १६ पायजेब, १६ डिब्बी हीं गुल, १६ चोली, १६ बिन्दी, १६ बिछिया, १६ शीशी फुलेल।

ये सब चीजें जब वे १६ ब्राह्मणी भोजन कर लेवें तब उनको सब तरह की १-१ वस्तु दे देवे और उनके बिन्दी लगाकर विदा कर देवे।

गणगौर के गीत

गौर, गगोर माता खोल किवाड़ी, बाहर आई री मां पूजन हारी।
पूजौ रे पुजाऔ,सईयों के फल मांगो,मंगाये पै अन्न-धन्न,लाचर लक्ष्मी
कान कुमरसौं वीरो मांगों राई सी बौहजाई।
[illegible] मांगो, चुढ़ले वाली भना।

जल बल जामी, वाबुल मांगे, राता देई माई ।
ये शरदास गैराहै, बधामें न बऊ गौरल जाये हैं पूत,
कानीराम गैराहै बधामें बऊ मालिन जाये हैं पूत,
गौर गङ्गोर माता खोल किवाड़ी ।

अन्य व्रत

ये व्रत वे हैं जो कि या तो कभी भी किये जासकते हैं या प्रत्येक वर्ष नहीं आते । इसलिए इन व्रतों का विवरण अलग से दिया गया है ।

१५२. सोमवती (सोमोती) मावस या परवी

जो अमावस्या किसी भी माह में सोमवार के दिन आवे उसी अमावस्याको सोमवती मावस कहते हैं । इसदिन सुबह ही गंगा नदी या यमुना नदीमें स्नान करना उत्तम और फल दायक है, स्नान के बाद गौ, अन्न, वस्त्र, सोना आदि दान पीपल की १०८ परिक्रमा देवे । प्रत्येक परिक्रमा के समय पीपलपर कुछ न कुछ चीज चढ़ाता जावे, १०८ परिक्रमा देने के बाद उस सब चढ़ावें को किसी ब्राह्मण को दे देवें । फिर तुलसीजी और पार्वतीजी पर सिंदूर चढ़ावे उसी सिंदूर को अपने सिरकी माँगमें और माथेपर लगाकर पार्वती माता से कहे कि हे माता ! मुझे भी सुहाग दीजे । इसके बाद कोई सी भी १३ वस्तुएँ सोमोती के नाम की ब्राह्मणों को दे देवे ।

सोमोती मावस की कहानी

एक साहूकार और एक साहूकारनी थी । उनके सात बेटा

उनकी बहू और एक बेटी थी। एक भिखारी उनके यहाँ भिक्षा लेनेके लिये आता था। उस भिखारीको यदि कोई सी भी बहू भिक्षा देती तो वह ले लेता और यदि बेटी भिक्षा देती तो वह नहीं लेता था और कहता कि बहुओं के भाग्य में सुहाग लिखा हैं किन्तु इस लड़कीके भाग्यमें तो सुहाग नहीं लिखा है। यह बात जब साहूकारनीको मालूम हुई तो वह बहुत दुःखी हुई और दूसरे दिन उस भिखारी से इसका कारण जाननेको पहलेसे ही बैठगई। जब भिखारी आया तो उसने फिर वही बात दोहराई और कहा कि फेरों के समय साँप आकर इसके पति को डस लेगा। तब साहूकारनी ने उस भिखारी से पूछा कि इस बातका टलनेका कोई उपाय भी है। इसपर भिखारी ने कहा-हाँ यह विपदा टल सकती है। सात समुद्र पार एक सोना धोबन रहती है। यदि वह आकर अपना सोमोतोका फल इसे देदे तो इस लड़कीको सुहाग मिल सकता है। यह सुनकर साहूकारनी सोना धोबन की खोज में निकल पड़ी। रास्ते में वह एक पेड़के नीचे बैठ गई, इस पेड़पर एक गरुड़पंखनीका बच्चा रखा हुआ था। उस बच्चेको खाने के लिए एक साँप आया। साहूकारनी ने उस साँपको मारकर ढालके नीचे दबा दिया। जब गरुड़पंखनी आये तो साहूकारनी के चोंच मारनेलगे। तब साहूकारनी बोली कि मैंने तो तुम्हारे बच्चे को बचाया है। यह पड़ा है तुम्हारा दुश्मन जो तुम्हारे बच्चे को खाने आया था। यह सुनकर गरुड़पंखनी बहुत खुश हुई और साहूकारनी से बोली-तू कोई भी वर माँग।

तब साहूकारनी ने कहा-मुझे सात समुद्र पार सोना धोवन के घर पहुँचादो। यह सुन गरुड़पंखनी ने साहूकारनी को सोना धोवन के घर पहुँचा दिया, सोना धोवनके सात बहू और सात बेटे थे। घरके काम काजके ऊपर उन बहुओं में जराभी नहीं बनती थी। साहूकारनी ने सोचा अब कैसे काम बने। उसने सोनाधोवनके रात्रिमें जाना शुरू किया। जब सब सोजाते तब वह उसके घर जाकर घरका सब काम करती और दिन निकलने से पहले ही वापिस लौट आती। यह देखकरसबहुएँ भी आपसमें ताज्जुब करतीं कि घरका कौन काम कर जाता है। एकदिन सोना धोवन ने बहुओं से पूछा कि अब तुममें काम काज के ऊपर झगड़ा नहीं होता क्या कारण है ? तब बहुएँ बोलीं कि सासुजी घर का काम तो हमें करना है फिर लड़ने से क्या फायदा ? तब सोना धोवन ने सोचा कि आज मैं देखूँ कि कौनसी बहू अधिक काम करती हैं। अतः वह रात्रि को बैठकर देखने लगी। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि एक औरत ने आकर सब घर का काम करना शुरू कर दिया। उसपर सोना धोवन ने उससे पूछा कि तू कौन है ? क्या कारण है, जिससे तू अपने आप आकर हमारे घर का काम करती है। तब उस साहूकारनी ने सब बातें उस सोना धोवन से कह सुनाईं। इस पर सोना धोवन बोली अच्छा मैं तेरे साथ चलकर तेरी लड़की को सौमोती का फल दे दूँगी। यह कहकर सोना धोवन साहूकारनी के साथ चल दी घर आकर साहूकारनी ने अपनी लड़की का बिवाह रचाया।

उस मंडपके नीचे सोना धोवन, कच्चा दूध और ताँतका तार लेकर बैठ गई। थोड़ी देर बाद एक सर्प दूल्हा को डसने के लिए आया तब सोना धोवन ने उसके आगे कच्चा दूध रख कर ताँत से बाध दिया। तब साँप सोना धोवन से बोला कि यह तो डर के मारे ही मर गया। अब तू इसे जीवन दान दे। तब सोना धोवन ने अपनी मांग और बिन्दी में से हींगलू और सिंदूर निकाला, कोया में से काजल, नाखूनोंमें से मेंहदी निकाली तथा चीटली आँगली का दीपक रख बोली कि मैंने आजतक जितनी सोमोती मावसकी हों उन सबका फल साहूकार की बेटी को दिया। इतना कहते ही वह दूल्हा उठकर बैठ गया। यह देखकर पूरे गांव में सोमोती की जय जयकार होने लगी। हे सोमोती मावस ! जैसे तूने साहूकार की बेटी को सुहाग दिया वैसे सबको देना।

१३५. अधिक (पुरुषोत्तम) मास या लोंद-मास

यह मास हमेशा बत्तीस माह के बाद अर्थात् २ साल ८ माह के पश्चात् आता है। इसे लौंदका महीना या पुरुषोत्तम मास या अधिक मास कहते हैं। इस माहमें नित्यप्रति पुरुषोत्तम भगवानकी पूजा करे और उनकी कथा सुने। एक काँसे की थालीमें मिठाई और दक्षिणा रखकर तथा कपड़े में बाँध कर किसी ब्राह्मण को दान करे। यदि श्रद्धा हो तो पूरे महीने तक नित्य प्रति दान करे नहीं तो इस माह में एक दिन अवश्य दान करे और जो वस्तुएँ चाहे दान करे।

———

१५४. पद्मनी एकादशी व्रत

अधिक (लोंद) मासके शुक्ल पक्षकी एकादशीको पद्मनी एकादशी के नाम से पुकारा जाता है। इसदिन भगवान राधा-कृष्ण या शिव-पार्वतीकी समस्त सामग्री से पूजा करे। भोग लगावे फिर आरती उतारे। यह व्रत दशमी से प्रारम्भ करे। दशमी को कांसे के पात्र में माँस [उर्द], भोजन, मसूर की दाल तथा चना दान करें। इसदिन शहद, शाक, नमक तथा पराया अन्न नहीं खावे। इसके अलावा दशमीके दिन ब्रह्मचर्य से रहे तथा जमीनपर ही शयन करे। एकादशी के दिन प्रातः उठकर और दैनिक क्रियाओंसे मुक्त होकर पवित्र जल से स्नान करे और सफेद वस्त्र पहने, फिर एक स्थान पर धान्य के ऊपर तांबे या मिट्टी का कलश रखे। कलश को सजाकर उसके ऊपर सोने या चांदी का पात्र रखकर उसके ऊपर भगवान की प्रतिमा स्थापित करे और उसका पूजन करे। निर्जला व्रत करे। यदि अशक्त हो तो जलपान कर लेवे। ब्राह्मणको भोजन और दक्षिणा देकर विदा करे। जो इस प्रकार व्रत करते हैं उनका जन्म सफल हो जाता है और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

पद्मनी एकादशी की कहानी

त्रेतायुग में उप—कीर्तिवीर्य नाम का राजा माहिष्मती नामक नगरी में राज्य करता था। उसके सौ रानियां थीं किन्तु किसी से भी पुत्र उत्पन्नन नहीं हुआ जो राज्यका उत्तराधिकारी हो सके। इससे राजा रानी बहुत दुःखी थे। पुत्र

प्राप्ति के लिये उसने बहुत से यज्ञ कराये । भजन पाठ एवं पूजा भी की यहाँ तक कि राजा तथा रानी प्रमदा ने वन में जाकर दसहजार वर्ष तक तपस्या भी की परन्तु कुछ भी लाभ नही हुआ । अन्त में रानी प्रमदा ने सती अनुसुइया से पूछा कि हे रानी ! हमने पुत्र प्राप्तिके लिये अनेकों उपाय किये हैं किन्तु सब व्यर्थ रहे। अब आप ही कोई सुगम उपाय बताओ । तब अनुसुइया ने रानी प्रमदा से कहा-हे रानी ! तुम लोंद-मासके शुक्ल पक्ष की एकादशी को विधि विधान से व्रत रखना। इससे तुम्हें अवश्य पुत्र की प्राप्ति होगी । तब रानी ने ऐसा ही किया जिनके प्रभाव से राजा के एक बहुत सुन्दर अजेय कीर्तिवीर्य नामका पुत्र उत्पन्न हुआ । उसी ने रावण पर भी विजय प्राप्त की । पुत्र पाकर रानी प्रमदा और राजा दोनों बहुत प्रसन्न हुए और अन्त में सब सुखों को भोगकर वैकुण्ठ लोक को गये । हे एकादशी माता! जैसे तुमने राजा-रानी की इच्छायें पूरी कर पुत्र दिया । वैसे सबकी मनोकामना पूरी करना ।

१५५. परमा एकादशी व्रत

अधिकमास के कृष्णपक्षकी एकादशीको परमा एकादशी कहते हैं । इसदिन भगवान विष्णुकी फूल,धूप, दीप,चंदन इत्र आदिसे पूजा कर भोग लगावें तथा आरती करें, ब्राह्मणों को भोजनकरावें और भूमिदान,गौदान तथा अन्नदान आदिदेकर उन्हें विदा करें। उसीदिनसे पंचरात्रिव्रत भी शुरू हो जाता है। अतः इन पाँचदिनों में दिनमें केवल एकसमय ही भोजन करें।

जो इसप्रकार व्रत रखते हैं वेदुर्लभ सिद्धियोंको प्राप्त करतेहैं ।

परमा एकादशी की कहानी

काम्पिल्य नामक नगरी में एक सुमेधा नामक ब्राह्मण रहता था । उसकी पत्नी पवित्रा बहुतही धर्मात्मा तथा पतिव्रता थी । लेकिन वह ब्राह्मण बड़ा दरिद्री था । भिक्षा माँग कर वे अपना जीवन निर्वाह करते थे । फिर भी वे कभी२ भूखे ही रह जाते थे। एकदिन ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा हे प्रिये ! यदि कहो तो मैं कहीं बाहर जाकर उद्यम करूँ ऐसे कैसे काम चलेगा,इस पर पत्नी बोली-मेरा कर्तव्यतो आपकी आज्ञा का पालन करना है। लेकिन यह सब कुछ पूर्व जन्म के संस्कारों के आधार पर ही मिलता है । अतः मेरी राय में तो आप यहीं उद्यम करें तो अच्छा है, मुझ से आपका वियोग भी सहन नहीं होगा । इस पर ब्राह्मण वहीं रुककर उद्यम करने लगा। पत्नी स्वयं भूखो रहकर आतिथ्य सत्कार में बहुत तत्पर रहती थी । एकदिन उनके यहाँ कौन्डिल्यमुनि आये । मुनि को भोजन कराकर उसने मुनिको अपना समस्त दुःख सुनाया और कहा हे मुनि ! हमें इस घोर दरिद्रता से मुक्त होने का कोई सरल उपाय बताइये। इसपर मुनि बोले-हे पवित्रा ! सुनो, तुम दोनों अधिक मास के कृष्णपक्ष में आने वाली परमा एकादशी को विधि-विधानसे ब्रत रखना इससे तुम्हारे समस्त दुःख दारिद्र, रोग, पराजय व पाप नष्ट हो जावेंगे । इसी व्रतके प्रभावसे शिवजीने कुवेर को धनाधिपति बना दिया । हरिश्चन्द्र को पुत्र,स्त्री,राज्य आदि पुनः प्राप्त हो

गये । इसीदिनसे पंचरात्रि व्रतभी प्रारम्भ होता है । यह सबसे अधिक फलदायी है । इसी एकादशी से इसे प्रारम्भ करे । जो मनुष्य इस व्रत को पाँच दिन तक निर्जल रहकर करते हैं वे कुटुम्ब सहित स्वर्ग को जाते हैं और जो एक समय संध्याको भोजन खाकर व्रती रहते हैं तथा ब्राह्मणोंको भोजन कराते हैं उन्हें समस्त संसारको भोजन करानेका फल मिलता है । अत. हे पवित्रे ! तुम इसी व्रतको करो । तब उन दोनों ने पाँच दिन तक इस व्रत को किया । इससे उनके समस्त दरिद्र दूर हो गये और अन्त में स्वर्ग को प्राप्त हुए ।

१५६. पुंसवन (मरुद्गण) व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष सुदी प्रतिपदा [परिवा] से प्रारम्भ होता है और एकसाल बाद मार्गशीर्ष की अमावस्या को ही समाप्त होता है । इस प्रकार यह व्रत एक साल तक किया जाता है । इस व्रत को स्त्रियाँ ही किया करती हैं । इसकी विधि इस प्रकार है । सबसे पहिले मरुद्गणों के जन्म की कहानी सुने । फिर सुबह प्रतिदिन दाँतुन आदि करके स्नान करे । दो सफेद वस्त्र पहिन कर आभूषण भी पहिन लेवे, सुबह बिना भोजन किये लक्ष्मी-नारायण की समस्त सामग्री से पूजा करे ।

इस प्रकार नित्य भगवान-विष्णु का आवाहन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभूषण, गंध, फूल, धूप, दीप और नैवेद्य आदिसे पूजन करे । फिर भगवानको साष्टांग दण्डवत करे । पूजाके बाद अपने पतिको ईश्वर मानकर उस को भी पूजे और भोग लगी हुई वस्तुयें उसको भेंट करे ।

अगर पत्नी इस व्रत को करने के अयोग्य हो [रजोधर्म आदि के समय] तो उसका पति इस व्रतको धारण कर सकता है। क्यों कि व्रत चाहे पति करे या पत्नी फल दोनों को ही प्राप्त होता है इस व्रत का नियम लेकर बीच में नहीं छोड़े। साथ ही नित्य प्रति ब्राह्मणों और उनकी सुहागिन स्त्रियोंको भोजन करावे। वर्षके अन्तिम दिन पति-पत्नी दोनों पकी खीर की १२ आहुती अग्नि में देवें। फिर आचार्य को भोजन करावें और उनकी आज्ञा लेकर भगवान को दण्डवत करके स्वयं भोजन करें। जो इस व्रतको बिधि पूर्वक करता है उसे उसकी मन चाही वस्तु मिल जाती है। स्त्री को सौभाग्य, सम्पत्ति, सन्तान और यश प्राप्त होता है। कन्या को श्रेष्ठ पति, विधवाको वैकुण्ठ और कुरूप को रूप मिलता है। यह व्रत समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

पुंसवन व्रत (मरुद्गण की कहानी)

एक समय की बात है कि मुनि कश्यपजी की पत्नी दिति ने अपने पति की बहुत जोरों से सेवा की। जिससे भगवान कश्यपजी दिति पर प्रसन्न होकर कहने लगे-हे देवी! मैं तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम अपनी इच्छाके अनुसार मुझ से कोई वरदान माँग लो। दिति बोली-भगवन्! इन्द्र ने मेरे दोनों पुत्रों को मारकर मुझे पुत्रहीन बना दिया है। अगर आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मुझे यही वर दीजियें कि मेरे एक पुत्र इन्द्रको मारनेवाला उत्पन्न हो। कश्यपजी यह सुनकर बहुत दुःखी हुये और मन में सोचने लगे। मैंने

यह क्या किया ? जो इसको वर देने को कहा । इन्द्र भी मारने योग्य नहीं है । अतः कश्यपजी सोचमें पड़ गये । कुछ सोच समझ कर फिर वह बोले हे दिति ! तुम मेरे कहने के अनुसार पुंसवन व्रत करो । उसमें कोई भी गलती न हो यह व्रत एक साल तक नियम पूर्वक करना । इसमें झूठ बोलना, बिनाधुले वस्त्र पहिनना, पर पुरुष की छाया पड़ना, रजोधर्म की स्त्री के हाथ की वस्तु लेना, किसी जीव को सताना, भिखारी को घर से बिना कुछ दिये जाने देना, आदि मना है । प्रातः ही स्नान करके भगवान की पूजा करना । इससे तुझे इन्द्रघाती पुत्र प्राप्त होगा । हे दिति ! यह पुंसवन व्रत है । कश्यपजी की सहायता से दिति गर्भवती होगई । दिति भी बिना गलती किये उस व्रतमें संलग्न रहती । जब इन्द्र को यह मालुम हुआ तो वह दिति [मौसी] की गलती पकड़ने के लिए दिति की सेवा करने लगे । जब साल का अन्त आया तो इन्द्र घबड़ाने लगा । क्योंकि उसको दिति के व्रत में कोई गलती न मिली । एक दिन की बात है कि दिति खाने के बाद बिना हाथ मुँह धोये सो गई । इन्द्र ने यह मौका देखा और उसके गर्भ में प्रवेश कर गया । वहाँ दिति के चमकीले गर्भ को अपने हाथों से मारने लगा और उसने उस गर्भ के सात टुकड़े कर दिये । जब सातों टुकड़े रोने लगे तब इन्द्र ने उन सातों टुकड़ोंके सात-सात टुकड़े और कर दिये । तब गर्भ के टुकड़े कहने लगे हे देवराज इंद्र ! हम आपके भाई हैं । आप हमें क्यों मार रहे

हो । इतना सुनकर इन्द्र रुक गये और उनको अपने साथ बाहर ले आये । जब दिति की आँखें खुलीं तो वह पूँछने लगी- बेटा, इन्द्र ! मैंने तो तुझे मारने के लिए एक ही पुत्रका वर माँगा था । ये उनचास [४९] किस प्रकार हुए मुझे बताओ । तब इन्द्र ने सब बात कह सुनाई और दितिको व्रत की गलती भी बताई । तब दिति बोली बेटा इन्द्र ! ये अब तुम्हारे भाई हैं तुम इनको अपने पास रखना । इस प्रकार कहकर दिति ने उन्हें आशीर्वाद दिया । आशीर्वाद प्राप्तकर इन्द्र उनसब मरुद्गणों के साथ इन्द्रपुरी को चला गया ।

१५७. हरि पंचक व्रत

यह व्रत मार्गशीर्ष मास के सुदी पक्ष की दशमीसे प्रारम्भ होकर पूर्णिमा तक चलता है । इसदिन से नित्य प्रति पहले शौच-दाँतुन और स्नान करके नित्यकर्म करें, फिर देवताओं का पूजन करें । पंच महायज्ञों का अनुष्ठान करें । इस दिन पंचामृत से भगवान को स्नान करावें, और गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य तथा पान से पूजा करें ।

इस प्रकार इन्द्रिय संयम से पाँच दिन तक व्रत करके भगवान की पूजा करें, पूर्णिमा को भगवान को पंचामृत के अलावा दूध से और स्नान करावे । छठेदिन पंचगव्य [दूध, दही, घी, गौ-मूत्र, शहद] पीकर भगवान की पूजा करें और ब्राह्मणोंको खुले दिलसे भोजन करावे । फिर भाई बन्धुओं को अपने साथ बैठाकर तथा स्वयं मौन होकर भोजन करे । इसी प्रकार यह व्रत हर महीने के इन्हीं पांच दिनों में एक साल

तक रखे। एक साल के बाद बड़ी धूम-धाम से भगवान की पूजा करे और मधु तथा घृत युक्त खीर, फल और जल से भरे हुए कलश वस्त्र से ढककर वेद-पाठी ब्राह्मण को दान देवे। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करावे और स्वयं मौन होकर भोजन करे। जो इस प्रकार ब्रत को करते हैं वे ब्रह्मलोक को जाते हैं और वहाँ से पुनः इस मृत्युलोक को नहीं आते। यह ब्रत सभी पापों को नष्ट कर देता है।

१५८. मासोपवास ब्रत

यह व्रत आषाढ़, श्रावण, भादों इन तीन महीनों में से एक महीने के सुदी पक्षमें करना चाहिये। इस ब्रत में इन्द्रियों को वश में रखे, पंचगव्य (गायका दूध, गायका दही, गायका घी, गाय का मूत्र और शहद) पीवे, भगबान विष्णु की वेद मन्त्रोंसे ब्राह्मणों के द्वारा पूजा करावे, स्वयं ब्रत का संकल्प लेवे। इस प्रकार ब्रतको समर्पण करके प्रत्येक दिन महीने के अन्ततक पंचामृती से स्नान कराकर पूजा करे, दीपक जलावे, प्रतिदिन चिरचिराकी दाँतुन करे, भगवानका चिन्तन करे। पहिलेकी भांति भगवानको रोज स्नान करावे। दीपक जलावे मन्दिर में ही शयन करे। इस प्रकार महीना पूर्ण होने पर ब्राह्मणों को भोजन करावे और दक्षिणा देकर विदा करे, फिर स्वयं भोजन करे। इस प्रकार तेरह साल में तेरह ब्रत करे। यह ब्रत विशेष रूपसे विधवा स्त्री, संन्यासियों, ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियों को अवश्य करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जो इस ब्रत को करता है वह मोक्षको प्राप्त होता है।

१५९. सत्य भगवान का व्रत

तेरह महीने में तेरह पूर्णमासी आती हैं। इन सब पूर्णमासियों को सत्य-भगवान का व्रत करे, उनकी कथा सुने, भगवान का प्रसाद ग्रहण करे, फिर एक समय भोजन करे। जब व्रत करते २ बहुत साल होजायँ तब भगवानका उद्यापन करे, उद्यापन विधि तथा सामग्री किसी पंडित से पूँछ लेवे।

१६०. अमावस के दिन पितरों की पूजा

तेरह महीनेमें तेरह अमावस्या आती हैं। अमावस्या के दिन सुबह पितरोंको दण्डवत् करे। इसके बाद जमीन धोकर उसपर सतिया बनावे और उस पर रोली, चावल, फूल, मीठा तथा जल चढ़ावे, दण्डवत् करे। इसके बाद ब्राह्मण तथा ब्राह्मणियों को भोजन कराकर स्वयं भोजन कर लेवे।

१६१. सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण

ग्रहण पड़ते समय जो चाहे दान करे, ग्रहण के सूतक लगनेसे ग्रहण समाप्त होनेतक कुछ भी नहीं खावे, हवन करे, कांसेकी कटोरी में घी, तेल, तथा सोना डालकर दान करे, गरीबों को सातों प्रकारके अन्न दान देवे। ग्रहण समाप्त होने के बाद शुद्ध जलसे, गंगा या यमुना में स्नान करे.ग्रहण नहीं देखे, फिर भगवान की पूजा करे और प्रसाद लगाकर स्वयं भोजन कर लेवे। यदि कोई स्त्री गर्भवती होवे तो वह जब तक ग्रहण पड़े तबतक अपनी गोदी में नारियल रखकर बैठी रहे, भगवानका भजन करे,कुछ भी काम न करे कैंची चाकू

से कोई भी वस्तु नहीं काटे, ताला नहीं खोले अन्यथा बच्चे का अंग-भंग होने का डर रहता है।

१६२. सोलह सोमवार का व्रत

यह व्रत श्रावण, कार्तिक, माघ या वैसाख माहके सोमवारके दिनसे प्रारंभ करे। १६ सोमवारोंको शिवजी का व्रत करे, नहा धोकर शिवजीकी बेलपत्र, रोली, चावल, चंदन, धूप, दही, शहद, जनेऊ फूल, धतूरा, कमल गट्ठा, भाँग तथा दीपक से पूजा करे। तीन पाव चूरमा बनाकर शिवजी का भोग लगावे। एक पाव शिवजी पर चढ़ादेवे, एक पाव स्वयं खालेवे और एक पाव प्रसाद बाँट देवे। व्रत के दिन केवल चूरमा ही खावे। दूसरे दिन के लिये बचाकर नहीं रखे। सोलह सोमवार के व्रत की कथा सुने। इस प्रकार एक ही शिवजी की सोलहों सोमवारों की पूजा करें और व्रत करे। सोलहवें सोमवारको उजमन करे। इसदिन ५। सेर चूरमा बनाकर १। सेर शिवजी पर चढ़ावे, एकपावस्वयंखाले, ३।।। सेरबाँटदे।

१६३. तारा डूबना

तारा डूबने में स्त्री किसी दूसरे शहर या गाँव में नहीं जावे, शुभ काम नहीं करे। यदि किसी जरूरी काम से बाहर जाना पड़े तो जब तारा उतरने लगे उसदिन शहर के पास किसी स्थानपर चला जावे और नथ पहिनकर बिन्दी लगाकर भोजन कर लेवे, सिरसे नहाकर मेंहदी लगा लेवे तथा कुछ चीज खा लेवे। जब तारा उतर जावे तब दूसरे दिन घर आ जावे। यदि किसी को शुभ मुहूर्त में पीहर या ससुराल जाना होवे तो रेवती नक्षत्र में जावे।